रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका

किलोल

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 6 अंक 3, मार्च 2022

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

म.नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा – 80/-
वार्षिक - 720/-
आजीवन - 10000/-

संपादक- डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल, कुन्दन लाल साहू

अपनों से अपनी बात!

होली का त्योहार चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को मनाया जाता है. इस बार होली 18 मार्च (Holi 2022) को मनाई जाएगी. आप सभी को होली की अग्रिम शुभकामनाएँ ! होली के एक दिन पहले होलिका दहन किया जाता है. ऐसी मान्यता है कि होलिका दहन के माध्यम से सभी साल भर अपने और अपने चाहने वालों के आरोग्य की प्राप्ति की कामना करते हैं और सारी बुरी बलाएं इस अग्नि में भस्म करने हेतु प्रार्थना करते हैं.

मार्च में जीरो डिस्क्रीमिनेशन दिवस भी है. डिस्क्रिमिनेशन अर्थात विभेद. जीरो डिस्क्रिमिनेशन मतलब हमें किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करना चाहिए. हमें सभी के साथ समानता का व्यवहार रखना चाहिए. इसे अपनी आदत में शामिल करना चाहिए.

इस बार हमारी गर्मी की छुट्टियाँ कम कर स्कूल में पढ़ने के लिए और अधिक दिवस मिल रहे हैं. इस अतिरिक्त दिवस का लाभ हम सबको पढ़ने के लिए मिल सकेगा. हम उम्मीद करते हैं कि सीखने में हुए नुकसान को कुछ हद तक कम किया जा सकेगा.

आपका
आलोक शुक्ला

प्रकाशक विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, मुद्रक सलूजा ग्राफिक्स द्वारा म. न. 580/1, गली न. 17बी, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित व सलूजा ग्राफिक्स, दुबे कॉलोनी मोवा, रायपुर में मुद्रित.

संपादक
डॉ. आलोक शुक्ला

अनुक्रमणिका

सूरज दादा आओ ना 9

होली 10

अन्तराष्ट्रीय बालिका दिवस 11

पंचतंत्र की कथाएँ 13

चूहा बिल्ली 14

मूष और अखबार 15

जो बच्चे देरी तक सोते 16

हर अजनबी पराया नहीं होता 17

मिलकर रहना बड़ी बात है 18

पौधों की होली 19

चलो घूमने मॉल 20

अधूरी कहानी पूरी करो 22

घायल बछड़ा 22

अदिति जोगवंशी (कक्षा-5) द्वारा पूरी की गई कहानी 22

रुपेश वर्मा (कक्षा-7), शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चंगोराभाठा पूर्व धरसीवां जिला रायपुर द्वारा पूरी की गई कहानी 23

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा पूरी की गई कहानी 23

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 23

अनन्या तंबोली (कक्षा-6) द्वारा पूरी की गई कहानी 24

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 24

गाँव का मेला 24

कामकाजी महिला 26

तिरंगा 28
भारत में वृद्धाश्रमों की जरूरत क्यों? 30
बादल 32
जलेबी 33
बिना ऋतु का बौछार 34
आज़ादी के बलिदानी 36
कठपुतली 38
लीलावती 39
खुशियों की बहार 41
मेंढक और मछली 42
शहीद की व्यथा 43
पिता की सीख 44
नेता जी 46
खुशियों का त्यौहार 48
मेरा तिरंगा 49
हिंदुस्तान की आवाज़ 50
शरीफा 51
गणतंत्र संध्या पर नमन 52
धूप 53
पर्यावरण मित्र 54
खेलेंगे खेल 56
आगे बढ़ते हैं 58
संगीत 60

गणतंत्र दिवस 61

ई-कचरा 62

बाल पहेलियाँ 63

ऋतु बसन्ती 64

सतत विकास 65

चलो गाँव की ओर 66

पेड़ तो लगाइए 67

सप्ताह के गीत 69

हेल्मेट 70

आत्मसंतुष्टि 71

पशु-पक्षी 73

माँ शारदे 74

मैं नन्हा सा बालक हूँ 75

मातृभाषा 76

जंगल में ऐसा चुनाव 77

होली मिल कर संग 79

होली जब जब आती है 81

मेरे दाँत 82

होली है 83

चीड़ा और चीड़ी का जोड़ा 85

नई टेक्नोलॉजी की पढ़ाई 87

होली आई है 89

मेहनत करना सीख लो 90

वसंत 91

नव जीवन प्रभात 92

होली 93

होली है 95

होली आई 96

हिन्दी स्वर कविता पाठ 97

हम सब बनेंगे रेल 99

बसंत से सीखे 101

देखौ संगी 102

नवजीवन को आगाज़ दे 104

रंग बिरंगी आई तितली 105

सरस्वती वंदना 106

हरषाई होली 108

वो सर्दी की रातें 109

बसंत 110

वंदना वीणापाणि की 111

मोबाइल मित्र 113

ऋतुराज 114

सरस्वती वंदना 116

आये देखो सुंदर पलाश 118

टेसू 119

भिक्षुक 121

नाच रहे हैं मोर 122

चंद्रमा 123

यही कुछ फर्क है! 124

जंगल का राजा 126

रंग पहचान 128

होली 129

संगीत की लता 130

तनु की कुछ शर्तें 132

स्वर की देवी 134

हमर गांव के मड़ई मेला 135

बेटियाँ है वरदान ईश्वर का 137

आओ मिलकर उन्हें करें नमन 138

दाई ददा के राखव मान 139

मेरी शाला 140

मेरे घर में है फुलवारी 141

आत्मविश्वास 142

गाँव का मेला 143

जब वह चुप है 144

अंदाजा 145

इंद्रधनुष 146

मेरा बस्ता 147

गांव डहर जाबो 148

हमारी संस्कृति हमारा अस्तित्व 150

मेरे लिए भगवान हैं 152

स्वर कोकिला भारत रत्न 153

व्यक्तित्त्व है व्यक्ति का आईना 155

ज्ञान दे न दाई मोला ओ 157

मेरा प्यारा गाँव 159

बालिका सशक्तिकरण 161

परिंदा 163

प्रकृति का नन्हा मेहमान 165

भारत का गुणगान सुने 166

मेरे गांव का मेला 168

होली 169

कइसे गुजरिस भाई 170

नटखट बंदर 172

अम्बर 173

गौरैया 174

थैला 175

बिल्ली के सपने 176

बसंत के आते ही 177

माँ शारदे मुझे ज्ञान दे 179

बोलते मुर्दे 180

महिला सशक्तिकरण 182

खास 186

सरोजिनी नायडू 187

सम्मान 188

लालची लोमड़ी 190
दिन गर्मी के 191
हमारी दादी जी 192
विश्व रेडियो दिवस 193
महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन 194
डॉक्टर विक्रम अंबालाल साराभाई 196
विक्रम साराभाई 198
आर्यभट्ट 199
पहेलियाँ 200
रितु बसंत जब आथे 201
चित्र देख कर कहानी लिखो 203
मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी 203
मोर और कौआ 203
युगांतर यादव (कक्षा-5) द्वारा भेजी गई कहानी 204
कौआ और मोर 204
मधु शर्मा कटिहा द्वारा भेजी गई कहानी 204
कोको कौआ 204
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 205
हमारे जैसा कोई दूसरा नहीं 205
आस्था तंबोली (कक्षा-2) द्वारा भेजी गई कहानी 206
मोर 206
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 207

सूरज दादा आओ ना

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

सूरज दादा, सूरज दादा, जल्दी से तुम आओ ना.
बहुत बढ़ा हैं जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना.

गाय, बैल अरु कुत्ता, बिल्ली, ठंडी में वो भी रोते.
थर-थर-थर-थर काँपे सारे, नहीं रात में वो सोते.

लुका-छुपी का खेल खत्म कर, अब आगे तुम आओ ना.
बहुत बढ़ा है जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना.

आग तापते हम तो सारे, घर अंदर घुस जाते हैं.
स्वेटर, मफलर, साल ओढ़ कर, गर्म हवा भी पाते हैं.

कुत्ता, बिल्ली सहमे बैठे, जाये कहाँ बताओ ना.
बहुत बढ़ी है जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना.

बेजुबान ये जीव जन्तु सब, ठंडी में मर जाते हैं.
किसे बताये अपनी हालत, रातों को चिल्लाते हैं.

देखो हालत इनकी दादा, थोड़ा तरस दिखाओ ना.
बहुत बढ़ा है जाड़ा अब तो, इसको दूर भगाओ ना.

*****

होली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

आया होली का त्योहार,
लाया मस्ती का उपहार.

अन्नू, मन्नू, टीनू आए,
पूरी टीम बुलाकर लाए.

पिचकारी से डाले रंग,
खेल, शरारत, हँसी, उमंग.

बाबा-दादी, घर के अंदर,
पुता गुलाल, बन गए बंदर .

मम्मी-पापा कितने अच्छे,
बच्चों साथ बन गए बच्चे.

बड़ी सख्त हैं छोटी चाची,
वे भी फाग-गीत पर नाची.

चाचा ने चुटकुले सुनाए,
सभी हँसे, सबके मन भाए.

सबने गुझिया, पापड़ खाया,
माँ ने सबको तिलक लगाया.

गले मिले सब, दिया बधाई,
प्रेम भाव की शिक्षा पायी.

*****

अन्तराष्ट्रीय बालिका दिवस

रचनाकार- श्रीमती ब्रिजभान टंडन

आओ सब मिलकर शपथ लें,
बेटी को आगे बढ़ाने की.

त्यागें उन विचारों, परम्पराओं उन कुरीतियों को,
जो बाधक है बेटी के जीवन की.

संकल्प लें हम सब मिलके न हो कोई भेदभाव,
बेटी और बेटा दोनों को दें समान अधिकार.

ऐसे विचार जो बालक-बालिका में भेदभाव पनपाती है,
दूर करें ऐसे रिवाज़ों को जो रोके कदम बेटियों का.

बेटियाँ कुछ भी बर्बाद नहीं होने देती,
वो सहेजती है संभालती है.

बटोरती हैं खुशियाँ, फिर भी न जाने क्यूँ,
समाज बेटियों के पावों में बेड़ियां बांधती हैं.

उड़ान तो भरना ही है, चाहे हज़ार बार गिरना पड़े.
सपनों को तो पूरा करना ही है, चाहे खुद से भी लड़ना पड़े.

बेटी तो जग की जननी है,
हमें रक्षा अब इसकी करनी है.

बेटी को भी मानो परिवार का आधार,
इन्हें भी दो शिक्षा का अधिकार.

जो बेटी को दे पहचान,
माता-पिता वही महान.

*****

पंचतंत्र की कथाएँ

राजा और बंदर

एक राजा था. बड़ा ही योग्य व कुशल. बड़े योग्य मंत्री व विद्वान सभासद थे उसके साथ. राजा के महल में एक बंदर भी पल रहा था. कभी जब वह छोटा था तभी महल में आ गया था. राजा ने उसे आश्रय दिया. रहते-रहते सभी उसे प्यार करने लगे. राजा भी उससे बहुत प्यार करता था. इस प्यार और दुलार से बंदर थोड़ा निर्भीक और उच्छृंखल हो गया. जहाँ चाहता वहाँ जाता, जो चाहता वह करता. राजा का उसके प्रति स्नेह देखते हुए कोई कुछ ना कहता.

वह बंदर अब पूरे समय राजा के आसपास ही रहता. यहाँ तक की राजा जब अपनी सभा में बैठता तब वह भी सिंहासन के आसपास उछल-कूद करता रहता. धीरे-धीरे उसकी आदत हो गई कि वह राजा के शयन कक्ष में भी जाने लगा. किसी में इतना साहस नहीं था कि वह राजा को समझा पाता कि किसी पशु को इतना स्वतंत्र रखना उचित नहीं है. राजा ने भी कभी इस पर गंभीरता से विचार नहीं किया.

एक रात जब राजा सोया हुआ था, बंदर बिस्तर के पास ही बैठा था. उसने देखा, एक मक्खी राजा के चेहरे पर बैठी है. बंदर ने उसे हाथ हिला कर उड़ा दिया. मक्खी उड़ी और राजा के हाथ पर बैठ गई. बंदर ने उसे फिर उड़ाया. यह खेल देर तक चलता रहा.

अब बंदर को गुस्सा आ रहा था. उसने देखा, राजा की छाती पर वह मक्खी फिर से बैठ गई है. अब की बार बंदर ने वहाँ रखी तलवार उठा ली और पूरी ताकत लगाकर मक्खी पर वार किया. पर क्या तलवार से मक्खी मरती? वह कब उड़ी पता ही नहीं चला. तलवार राजा की छाती में धँस गई. तत्काल ही राजा के प्राण-पखेरू उड़ गए. सच ही कहा है- मूर्ख सेवक कभी भला नहीं कर सकता.

*****

चूहा बिल्ली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

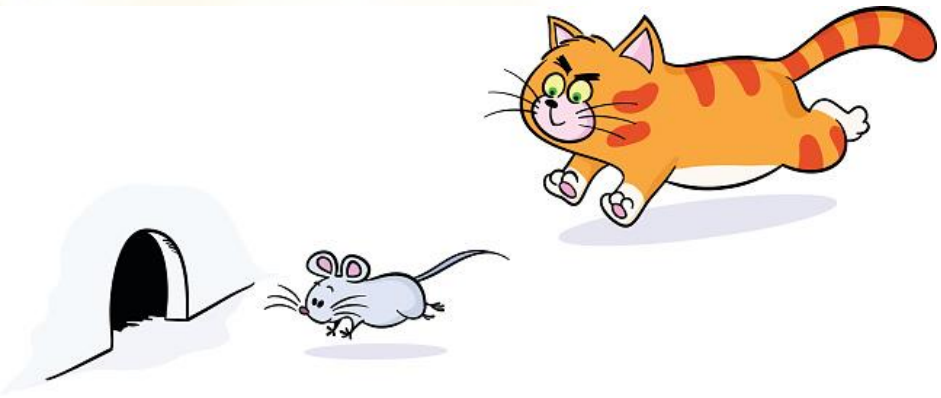

बिल्ली आई चूहा भागा,
जान बचाई डर जो लागा.

फिर बिल्ली जी छुप के आई,
चूहे को वो तनिक न भायी.

फिर चूहे ने सर को नोचा,
बात समझ आई कुछ सोचा.

चूहा ले आया फिर डॉगी,
डर के मारे बिल्ली भागी.

*****

मूष और अखबार

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

मूषक जी देखें अखबार,
दिन में एक नहीं सौ बार.

देख बिल्ली की तस्वीर,
लड़ते उससे बारम्बार.

दिन भर कुतर रहे मूषक जी,
अंग्रेजी वाला अखबार.

दादाजी सदा कहते थे,
बेटा पढ़-लिख बन होशियार.

पढ़े होते यदि मूषकजी,
होते क्यों बोलो लाचार.

बन जाते मूषकजी टीचर,
अगर पढ़े होते अखबार.

*****

जो बच्चे देरी तक सोते

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

जो बच्चे देरी तक सोते,
कम पाते वो ज्यादा खोते.

जब चिड़िआ चुग जाती दाना,
अपनी करनी पर तब रोते.

काम समय पर कर ना पाते,
पढ़ने में वो पीछे होते.

कसरत करने से कतराते,
बस आलस में खुद को खोते.

हरदम ही असफल वो होते,
जो बच्चे देरी तक सोते.

*****

हर अजनबी पराया नहीं होता

रचनाकार- यशवंत कुमार चौधरी

एक बार एक युवक अपने ऑफिस से संबंधित काम से किसी दूसरी जगह गया. उसके पास उस जगह का पता था पर अनेक लोगों से पूछने पर उन सभी ने वह पता जानने से इंकार कर दिया. वह निराश होकर बैठ गया, शाम हो चली थी, तभी एक अजनबी आया.

अजनबी को उसकी हालत देखकर उस पर तरस आया और उसने मदद करने की सोचकर कहा क्या आपको किसी प्रकार की मदद की आवश्यकता है? युवक ने कहा- हाँ, क्या आप यह पता बता सकते हैं? अजनबी ने कहा जानता तो नहीं पर दोनों मिलकर ढूँढ़ लेंगे. रात होने को है, चलिए मेरे साथ. युवक दुविधा में था कि इस अजनबी पर विश्वास करूँ या कोई दूसरा विकल्प तलाश करूँ? पर वक़्त कम था रात हो चली थी और आसपास कोई परिचित भी नहीं था. उसने सोचा कि इस अजनबी को ही आजमा लिया जाए. अजनबी उस नवयुवक को अपने घर ले गया, खाना खिलाया. युवक काफी खुश हुआ पर उसकी मंजिल अब भी उसे नहीं मिली थी. फिर दोनों उस पते की तलाश में निकले. कालोनी में रहने वाले एक दादा जी ने पता बताया जो समीप ही था. उस अजनबी ने युवक को मंजिल तक छोड़ा उस वक़्त बताया कि वह उसी की कक्षा में पढ़ने वाला उसी का दोस्त है जो आजकल इस नगर का मेयर है. युवक को अपने मित्र को इस विषम परिस्थिति में अजनबी सहयोगी के रूप में पाकर काफी प्रसन्नता हुई और उसे अब यह शहर पराया नहीं बल्कि अपना सा लगने लगा. युवक ने अपने मित्र का धन्यवाद किया और उसके साथ एक सेल्फ़ी भी ले ली.

इसलिए कहा जाता है कि हर अजनबी पराया नहीं होता और हर परिचित समय पर काम आ जाए य़ह भी जरूरी नहीं.

*****

मिलकर रहना बड़ी बात है

रचनाकार- श्याम नारायण श्रीवास्तव

सदा बड़ों की यह सौगात है,
मिलकर रहना बड़ी बात है.

माना चेहरे एक नहीं हैं,
भाषा-वेषभूषा अनेक हैं.

लेकिन बच्चों हर मानव में,
खून-खून का रंग एक है.

हिन्दू-मुस्लिम-सिख न कोई,
मानवता ही जाति एक है.

मिलकर रहना बड़ी बात है,
सदा बड़ों की यह सौगात है.

खण्ड-विखण्ड न करो देश को,
बहु विशाल यह विश्व एक है.

सूर्य-चन्द्रमा एक-एक है,
माँ धरती का प्यार एक है.

सदा एकता पूनम जैसा,
और अनेकता काली रात है.

सदा बड़ों की यह सौगात है,
मिलकर रहना बड़ी बात है.

*****

पौधों की होली

रचनाकार- श्याम नारायण श्रीवास्तव

फागुन ने जो रंग लगाया,
टेसू हुए लाल चटकीले.

मटमैले कुछ आम बौर तो,
सनई-अरहर पीले–पीले.

तीसी नीली सरसों पीली,
लाल-सफेद मटर यों फूली.

रंग भरी पिचकारी लेकर,
ज्यों आपस में होली खेली.

पुष्पों की कुछ पंखुड़ियां तो,
कई रंग में दिखतीं ऐसे.

चुटकी भर अबीर ले करके,
कोई तिलक लगाया जैसे.

फागुन के आने पर देखो,
लिये प्रकृति रंगों की झोली.

मानव का ही पर्व नहीं ये,
पौधों ने भी खेली होली.

*****

चलो घूमने मॉल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

एक दिवस भोलू बंदर,
बोले- ओ! प्रिये बंदरिया.
चलें घूमने मॉल,
देख लें हम लखनऊ नगरिया.

एसक्लेटर से पहुँच गए,
वे दोनों पंचम तल पर.
भाँति-भाँति की सजी दुकानें,
भीड़भाड़ थी जमकर.

रंगबिरंगे वस्त्रों वाली,
देखी फैशन शॉप.
पहन लिया मामी ने झट से,
एक सुनहला टॉप.

आसपास कोई न दिखा तो,
निकले दोनों बाहर.
गेटमैन बोला ,"पहले तो
पैसे चुकाओ जाकर".

मामा देखो जगह-जगह पर,

लगे हैं सीसीटीवी.
जेल जाओगे चोरी में,
तुम और तुम्हारी बीवी.

देख सुरक्षा के प्रबंध,
दोनों थे हक्का-बक्का.
इससे अपना गाँव भला,
सच कहते भालू कक्का.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

घायल बछड़ा

आज चित्रा जब सुबह-सुबह घर के दरवाजे पर आई तो वहाँ घायल पड़े बछड़े को देखकर बहुत दुखी हुई.

चित्रा एक आठ वर्षीय लड़की है. प्रतिदिन यह छोटा बछड़ा अपनी माँ के साथ चित्रा के घर आया करता था. चित्रा की माँ गाय को रोटी देतीं और चित्रा के हाथों से बछड़े को रोटी दिलवाती थीं. चित्रा पहले तो बछड़े के पास आने से डरा करती, पर धीरे-धीरे उसका डर समाप्त हो गया. अब वह उस बछड़े से बहुत हिलमिल गई थी और उसके साथ खेला करती थी.

लेकिन आज सुबह जब चित्रा ने बाहर आकर देखा तो दरवाजे के पास ही बछड़ा अकेला घायल पड़ा था, उसके पैरों में चोट लगी थी और उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वह बहुत दर्द का अनुभव कर रहा था.

बछड़े का कष्ट देखकर चित्रा बहुत दुखी हुई, उसकी आँखों में आँसू आ गए और वहीं से पुकारकर उसने अपनी माँ को बुला लिया. चित्रा माँ से कहने लगी कि घायल बछड़े को जल्दी से डाक्टर के पास ले चलो, उसे बहुत दर्द हो रहा है.

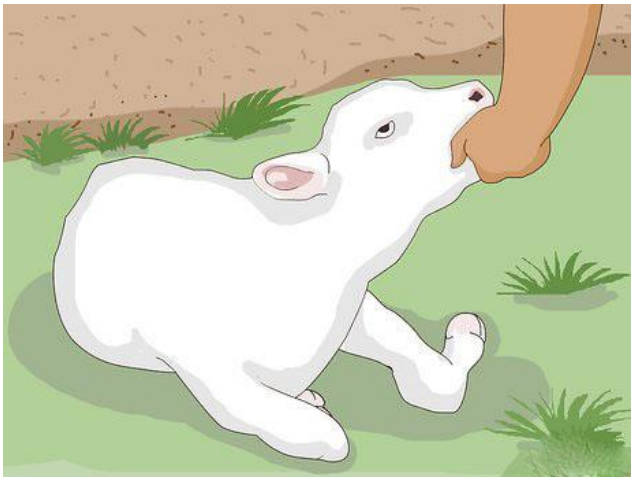

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

अदिति जोगवंशी (कक्षा-5) द्वारा पूरी की गई कहानी

तब चित्रा की माँ ने डॉक्टर को बुलाया. डॉक्टर ने बछड़े की चोट वाली जगह पर दवा लगाई. मरहम-पट्टी लगाकर अच्छे से उसका इलाज किया. धीरे-धीरे कुछ दिनों में बछड़ा स्वस्थ होने लगा.

अब बछड़ा पूरी तरह से ठीक हो गया था. चित्रा बछड़े को पूरी तरह स्वस्थ देखकर बहुत खुश हुई. चित्रा अभी भी रोज बछड़े को रोटी देती है और पहले की ही तरह हँसी-खुशी के साथ बछड़े के साथ खेलने लगी है.

रुपेश वर्मा (कक्षा-7), शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला चंगोराभाठा पूर्व धरसीवां जिला रायपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

चित्रा और उसकी माँ बछड़े को लेकर पशु-चिकित्सालय गए. चित्रा ने डॉक्टर से कहा डॉक्टर साहब बछड़े का पैर ठीक हो जाएगा ना डॉक्टर ने कहा- हाँ ठीक हो जाएगा. चित्रा ने कहा-आप बछड़े का इलाज जल्दी कीजिए उसको बहुत दर्द हो रहा होगा. डॉक्टर ने बछड़े का इलाज किया जब चित्रा की माँ ने डॉक्टर साहब को पैसे दिए तब डॉक्टर ने कहा पशुओं का इलाज करना ही मेरा कार्य है. चित्रा और उसकी माँ बछड़े को लेकर घर गए. घर के आंगन में बछड़े की माँ खड़ी थी बछड़े की मां बछड़े को देखकर बहुत खुश हुई.

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा पूरी की गई कहानी

चित्रा की बात सुनते ही उनकी मां गाड़ी मंगाने के लिए फोन लगाने लगी तभी चित्रा के पिताजी जो रोज की भांति सुबह सैर करके घर पहुंचे और सारा माजरा बताने लगे कि एक शराबी नशे में धुत होकर कार चला रहा था जिसके कारण बछड़े के माँ की दुर्घटना में जान चली गई, वही माँ के पास बैठे रहने के कारण बछड़े को भी चोटें आई है. मैंने डॉक्टर को फोन करके यहीं बुला लिया है.

तभी पशु चिकित्सक वहाँ पहुँचे और बछड़े के चोट वाली जगह पर दवाई के साथ पट्टी बांधे और कुछ गोलियां भी रोटी के साथ बछड़े को खिला दिए.

चित्रा बहुत रोती है और रोते हुए कहती है कि आखिर क्यों शराब पीकर लोग गाड़ी चलाते हैं तथा स्वयं के साथ दूसरों को भी नुकसान पहुंचाते हैं.

शिक्षा:- नशा में गाड़ी नहीं चलाना चाहिए इससे स्वयं के साथ दूसरों का भी नुकसान होता है.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

चित्रा की बात सुनकर उसकी माँ ने कहा, उसके पैरों में चोट लगी है, उसे बहुत दर्द हो रहा होगा लेकिन इलाज कराने के लिए पैसे चाहिए. हमारी दो वक्त की रोटी के लिए बहुत मुश्किल से अनाज उपलब्ध होता है. हम खुद इतने गरीब है कि इस बछड़े का इलाज कराने एवं दवा के लिए पैसे नहीं हैं इसलिए मैं ही घरेलू नुस्खे से इसका इलाज करती हूँ.

माँ की बात सुनकर चित्रा उदास हो गई. उसे याद आया कि उसकी गुल्लक में कुछ पैसे हैं. वह दौड़कर अपनी गुल्लक ले आई और माँ को देकर बोली -माँ मेरी गुल्लक के पैसों से हम बछड़े का इलाज कराते हैं. माँ कहने लगीं नहीं ये पैसे हम खर्च नहीं कर सकते. लेकिन चित्रा के हठ के आगे माँ हारकर बछड़े को डॉक्टर के यहाँ इलाज कराने के लिए ले गई. कुछ दिनों में बछड़ा पहले की तरह स्वस्थ हो गया और चित्रा खुश होकर उसके साथ खेलने लगती है.

अनन्या तंबोली (कक्षा-6) द्वारा पूरी की गई कहानी

चित्रा और उसकी मां घायल बछड़े को लेकर डॉक्टर के पास गए. उन्होंने बछड़े का इलाज कराया. डॉक्टर के कहे अनुसार कुछ दिनों तक उसे घर से बाहर नहीं जाने दिया. घर पर ही उसकी देखभाल की, दवा खिलाई. कुछ दिनों बाद वह बछड़ा पूरी तरह से ठीक हो गया. चित्रा अब उसके साथ खेलती उसे रोटी खिलाती.

एक दिन बछड़े की माँ, चित्रा के घर के पास आकर आवाज लगाने लगी. आवाज सुनकर बछड़ा घर के बाहर आया वह अपनी माँ को देखकर बहुत खुश हुआ, चित्रा भी खुश हो गई बछड़े को उसकी माँ मिल गई. अब बछड़ा और गाय दोनों साथ में रहने लगे. पहले की तरह जब भी बछड़ा, अपनी माँ के साथ चित्रा के घर के पास आता तो चित्रा उन्हें रोटी खिलाती और उनके साथ खेलती.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

गाँव का मेला

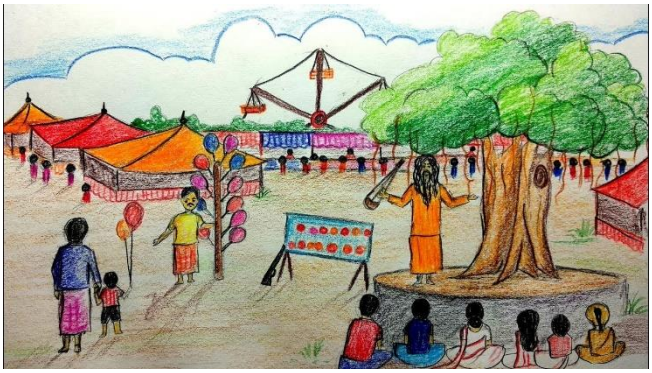

रोहित अपने गाँव जाने वाली बस की प्रतीक्षा कर रहा था. अगले दिन उसके गाँव का वार्षिक मेला था. दो साल बाद मेले के समय पर रोहित गाँव जा रहा था. उसके मन में मेले से जुड़ी यादें घुमड़ रही थीं.

रोहित नवोदय विद्यालय में आठवीं कक्षा में पढ़ता था. पाँचवीं तक गाँव की प्राथमिक शाला में पढ़ने के बाद उसका चयन नवोदय विद्यालय के लिए हो गया था और वह गाँव से चला आया था. मार्च 2020 में अचानक कोरोना वायरस के प्रसार के कारण स्कूल बंद हो गए थे तब उसकी छठी कक्षा की परीक्षाएँ भी नहीं हुई थीं. उस वर्ष गाँव का मेला भी आयोजित नहीं हुआ था. 2021 के पूरे साल भी स्कूल बंद ही रहा, लेकिन ऑनलाइन कक्षाएँ चलती रहीं इसलिए रोहित को गाँव में रहने का मौका नहीं मिला क्योंकि गाँव में नेटवर्क की समस्या के कारण वह कक्षाओं में शामिल नहीं हो पाता था. पिछले वर्ष भी गाँव का मेला आयोजित नहीं हुआ था.

अब इस वर्ष कोरोना वायरस का प्रकोप खत्म तो नहीं हुआ था पर उसका प्रसार कुछ कम था इसलिए इस वर्ष गाँव का मेला आयोजित होने वाला था.

बस आई और रोहित बस में बैठते ही मेले की यादों में खो गया. दोस्तों के साथ मेले में घूमना, झूला झूलना, और माँ से मेले के लिए मिलने वाले 100 रुपयों से अपनी मनचाही चीजें खरीदना और मिठाई खाना.

क्या दो वर्ष के बाद इस वर्ष के मेले में वह आनंद आएगा? कोरोना वायरस से बचने की शर्तों के बीच यह मेला होने वाला था. रोहित सोचने लगा कि क्या मेले में झूला झूलना सुरक्षित होगा? क्या मेले की दुकानों से खाने की वस्तुएँ लेना सही होगा? क्या इस वर्ष के मेले में वह पहले जैसा उत्साह और आनंद रहेगा? यही सोचते हुए बस कब गाँव पहुँच गई, उसे पता ही नहीं चला.

इसके आगे क्या हुआ होगा? क्या रोहित को मेले में पहले जैसा आनंद आया होगा? आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

कामकाजी महिला

रचनाकार- हर्षा मिश्रा

उषा घनेरी सांझ तले,
चंदा-सी चमचम करती है.
नारी का धर्म निभाती है,
वो कामकाजी कहलाती है.

दिनकर-सी दमक दिखाती है,
नित नया सवेरा लाती है.
फिर निशा तले ढल जाती है,
नारी का धर्म निभाती है,
वो कामकाजी कहलाती है.

तारों-सी झिलमिल करती है,
अमावस में प्रहरी बनती है.
नारी का धर्म निभाती है,
वो कामकाजी कहलाती है.

वसुंधरा-सी सहनशील वो
कई गर्भकम्प सह जाती है.
नारी का धर्म निभाती है,
वो कामकाजी कहलाती है.

तरुवर-सी वो फलदायी है,

और वार कई सह जाती है.
नारी का धर्म निभाती है,
वो कामकाजी कहलाती है.

गृहस्थ पुष्प-सी सुगन्धमयी,
वो घर आंगन महकाती है.
नारी का धर्म निभाती है,
वो कामकाजी कहलाती है.

प्रकृति स्वरूप ममतामयी,
शिशुओं का पालन करती है.
नारी का धर्म निभाती है,
वो कामकाजी कहलाती है.
वो कामकाजी कहलाती है.

*****

तिरंगा

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

दुश्मनों का हिमाकत कहां,
जो भारत सीमा में आ जायेंगे.
गोलियों से सीना उनके,
छलनी छलनी हो जाएंगे.
सरहद पर जो बुरी नजर डालेंगे,
सैनिक उनको सबक सिखाएंगे.
तिरंगा अभिमान से लहराया है,
आन, बान, शान से फहराएंगे.

कुर्बानी लाखों लोगों ने दी है,
तब जाकर आजादी मिली है.
ऐसे ही व्यर्थ ना जाने देंगे,
दुश्मनों की आंखें नोच डालेंगे.
अंग्रेजों के करतूतों को कभी ना भूल पाएंगे,
अपनों को लड़ाया था फिर ना दोहराएंगे.
तिरंगा अभिमान से लहराया है,
आन, बान, शान से फहराएंगे.

जाति, मजहब पर लड़ने वालों को,
राष्ट्रधर्म मानवता का पाठ पढ़ाएंगे.
स्वदेशी स्वरोजगार अपनाकर,
फिर से सोने की चिड़िया बनायेंगे.

सबसे प्यारा संविधान हमारा,
उसे तन-मन से अपनाएंगे.
तिरंगा अभिमान से लहराया है,
आन, बान, शान से फहराएंगे.

नक्सल, आतंकवाद को जड़ से मिटाएंगे,
आओ संकल्प लें अखंड भारत बनाएंगे.
जन-जन में राष्ट्रप्रेम का भाव जगाएंगे,
विश्व में भारत का मान बढ़ाएंगे.
तन में जब तक सांसे चलेगी,
राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम गाएंगे.
तिरंगा अभिमान से लहराया है,
आन, बान, शान से फहराएंगे,

*****

भारत में वृद्धाश्रमों की जरूरत क्यों?

रचनाकार- एड. किशन सनमुखदास भावनानी

भारतीय संस्कृति और सभ्यता, रीति रिवाज, त्यौहार, आध्यात्मिक आस्था, संयुक्त परिवार हजारों साल पुराने और जग प्रसिद्ध हैं. परंतु कुछ सालों से भारत में कुछ वाक्यांश सुनते आ रहे हैं कि, गया वह जमाना. जमाना बदल गया है. किस जमाने में जी रहे हो? इत्यादि.

साथियों बात अगर हम अपने माता-पिता दादा-दादी के प्रति अपनी फ़र्ज अदायगी और भारतीय संस्कृति के सभ्यतागत मूल्यों की करें, तो आज के नए पाश्चात्य संस्कृति से ओतप्रोत ज़माने में अपने बड़े बुजुर्गों के मान-सम्मान, सभ्यतागत फ़र्ज अदायगी, जवाबदारी से हमारे बहुत से युवा पीछे हटते हुए दिखाई दे रहे हैं जिसका प्रमाण वृद्ध आश्रमों की बढ़ती हुई संख्या है.

आखिर वृद्ध आश्रमों की जरूरत भारत जैसे सांस्कृतिक सभ्यतागत धन्य देश में क्यों ?

साथियों बात अगर हम युवाओं और माता-पिता बुजुर्गों के बीच बढ़ती अनबन, और वृद्ध आश्रमों में वृद्धों की बढ़ती संख्या की करें तो इसके चार मुख्य कारण हैं -

(1) युवाओं का नौकरी के लिए अपने पैतृक स्थान से बाहर जाकर अन्य बड़े शहरों मेट्रो सिटीज, विदेशों में सेट होना.

(2) पाश्चात्य संस्कृति का युवाओं पर असर.

(3) भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों की जानकारी की कमी.

(4) माता-पिता व बुजुर्गों के वर्तमान समय के विचारों में ढलने की कमी.

साथियों बात अगर हम पहले कारण की करें तो आज हर गाँव, छोटे बड़े नगर के युवक-युवतियाँ बाहर जाकर नौकरी करना चाहते हैं. इस स्थिति में अधिकतम परिणाम यह देखने को मिले हैं कि युवा एक बार अगर बाहर गया, चाहे वह देश में या विदेश में, तो उसके वापस अपने पैतृक स्थान पर लौट आने की उम्मीद कम ही रहती है, और संयुक्त परिवार से टूट की ओर कदम बढ़ते हैं. वे माता-पिता घरबार के लिए शुरू में खर्च भेजते हैं बाद में स्थिति विपरीत हो जाती है, ऐसा मेरा मानना इसलिए है, क्योंकि मैंने अपने नगर में ही अपने आसपास कुछ परिवारों में स्थिति देखी है जिनके बच्चे आज बड़े शहरों में, विदेशों में जॉब कर रहे हैं और यहाँ माता-पिता की स्थिति अनुकूल नहीं है समझने वालों के लिए इशारा काफी है.

साथियों बात अगर हम दूसरे कारण की करें तो आज युवाओं को कृत्रिम संसाधनों पर व्यय, प्यार व्यार, का भूत दिमाग में सवार रहना है. हालांकि प्यार करना कोई बुरी बात नहीं है पर माता-पिता को दुखी कर यह सब करना उचित नहीं. जुआ, सट्टा, मदिरा इत्यादि आदतों से ग्रसित होने के कारण माता-पिता, घर वालों के लिए स्थिति विपरीत हो जाती है और संयुक्त परिवार टूट की ओर कदम बढ़ाता है जिसके उदाहरण हम सब अपने आसपास देख सकते हैं यह भी हमारे नगर में अनेक स्थानों पर हुआ है जिससे गरीब से लेकर अमीर तक ग्रसित हैं.

साथियों बात अगर हम तीसरे कारण की करें तो आज अनेक युवाओं को भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों की जानकारी तथा संयुक्त परिवार का महत्व पता नहीं है. जिसके कारण उनको श्रवणकुमार से प्रेरणा लेने में कठिनाई महसूस हो रही है, जिसके लिए हम सबको मिलकर हर जिला स्तर पर, सरकारी तंत्र के साथ मिलकर सामाजिक संस्थाओं को जिला स्तर पर एमओक्यू कर भारतीय संस्कृति, सभ्यतागत मूल्यों का जन-अभियान चलाकर युवाओं को जनजागरण में शामिल करना ज़रूरी है.

साथियों बात अगर हम चौथे कारण की करें तो आज ज़माना वास्तव में बदल गया है उसके अनुसार अब बुजुर्गों माता-पिता को भी बच्चों की खुशियों में ख़ुश रहने, थोड़ा त्याग करना समय की पुकार है!! परंतु खुद्दारी, सम्मान, आत्मसम्मान और अपनी स्थिति को कभी नहीं खोने देना होगा.

साथियों बात अगर हम माननीय उपराष्ट्रपति द्वारा दिनांक 15 जनवरी 2022 को एक कार्यक्रम में संबोधन की करें तो उन्होंने एक परिवार में खुद से छोटे सदस्यों का मार्गदर्शन करने और सलाह देने के संबंध में बड़ों की निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि अंतरपीढ़ीगत जुड़ाव मूल्य प्रणाली को बचाने और इसे आगे बढ़ावा देने में सहायता करती है.

उन्होंने आज संयुक्त परिवार व्यवस्था और बड़ों का सम्मान करने की परंपरा को मजबूत करने का आह्वान किया, जो भारत के सभ्यतागत मूल्यों के मूल पहलू हैं. उन्होंने भारतीय संस्कृति में त्योहारों के महत्व को रेखांकित किया. उन्होंने कहा कि आज के युवाओं को प्रकृति की उदारता को मनाने, परिवारों को एक साथ लाने और समाज में शांति व सद्भाव लाने में अनेक त्योहारों की विशिष्टता को समझना चाहिए.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि आखिर वृद्धाश्रम की जरूरत भारत में क्यों? बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना भारतीय संस्कृति और सभ्यतागत मूल्यों के मुख्य पहलू हैं तथा युवाओं को भारतीय सभ्यता, संयुक्त परिवार सहित संस्कृति त्योहारों और आध्यात्मिक आस्था के प्रति एक अभियान चलाकर जागृत करना तत्काल ज़रूरी है.

*****

बादल

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

बादल आये देखने, जंगल की हालात.
गिरते आँसू मेघ से, करते हैं फिर बात.

करते हैं फिर बात, पेड़ सब ठूँठ पड़े हैं.
पौधे सारे नष्ट, सभी अब रूठ खड़े हैं.

सुन जंगल की बात, मेघ फैलाये आँचल.
झूम उठे सब पेड़, धन्य वो करते बादल.

भारी वर्षा हैं कहीं, कहीं तरसते लोग.
मानवता के कर्म का, करते सारे भोग.

करते सारे भोग, काट जंगल अरु झाड़ी.
नहीं दिखे अब पेड़, सभी घर बनते बाड़ी.

सुन धरती की बात, घिरे देखो जलधारी.
नहीं दिखे अब फूल, होय पीड़ा अब भारी.

*****

जलेबी

रचनाकार- डॉ. अलका अग्रवाल

उलझी-उलझी लगे जलेबी,
पर कितनी रसभरी जलेबी.

गरम-गरम जब प्लेट में आए,
ये सुगन्ध अपनी फैलाए.

चिन्टू, चिंकी रुक ना पाएं,
एक नहीं ढेरों खा जाएं.

पेट भरे, पर मन ललचाए,
स्वाद अनूठा हमको भाए.

दादी रबड़ी के संग खाए,
मम्मी तो यूं ही खा जाए.

दूध-जलेबी दादा खाए,
उसको थोड़ा नरम बनाएं.

पापा खाएं गरम करारी,
पतली, कड़क, सुनहरी, प्यारी.

मधुर-मधुर स्वादिष्ट जलेबी,
सबकी प्यारी गरम जलेबी.

*****

बिना ऋतु का बौछार

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

चल रही है ठंडी हवाएं, काली बरखा गगन में छा गई.
छम-छम की नृत्य करती, सलिल वसुंधरा में आ गई.

अभी तो सूरज निकला था, चारों तरफ था उजाला.
पल भर में घटाटोप अंधेरा, बरसने लगा श्वेत ओला.

जन जीवन हुआ अस्त-व्यस्त, कृषक की उजड़ी खेती.
अश्रु बहा रहा बैठ अकेले, नज़र ना आई कहीं ज्योति.

पूंछ उठाकर दौड़े सरमेव, बिजली की गड़गड़ाहट से.
खुला न था किसी की द्वार, बंद हुआ आने की आहट से.

छतरी लेकर निकली युवती, अपलक नजरों से देखा नभ.
नैसर्गिक कर रही स्वागत, पानी की बौछार से छोड़ दंभ.

तरु की डाली में बैठी खग, बेसुध करुण गीत गा रही है.
घोंसला में छाई है उदासी, नन्हें पंछी मां-मां पुकार रही है.

बरस रहे हैं बेलगाम बूंदे, कितना है विकराल मूसलाधार.
नष्ट हो चुका सब अन्न धन, त्राहि-त्राहि कह रहा संसार.

हे! इंद्र देव स्वर्ग के देवता, हे! वरुण देव जल के अधिपति.
अब रोक दो तोय का तांडव, ध्वस्त ना करो जन संपत्ति.

सुख और ऐश्वर्य का दो भेंट, मंगल-ही-मंगल का आशीष.
खुशी से झूमे नाचे जन मन, अर्पित करे भोज्य निरामिष.

दुःख के बादल छंट जाए, सुख के बादल हो चमकदार.
छुपे हुए सूर्य प्रकाश बिखेरे, बन नव जीवन का आधार.

*****

आज़ादी के बलिदानी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

शहीदों के बलिदान से, हमको मिली है आज़ादी.
मेरे वतन के रखवाले, हंसते-हंसते चढ़ गए फांसी.

देश की खातिर मर मिटे, सिवान में सैनिक हैं डटे.
देश ही देश में क्यों बटे, भाई से भाई क्यों है लड़े.

जय जवान जय हिंद नारा, वंदे मातरम पुकार उठेगी.
शहीदों के बलिदान से, हमको मिली है आज़ादी.

मेरे वतन के रखवाले, हंसते-हंसते चढ़ गए फांसी.
शपथ अपनी याद करना, मां की लाज बचाना है.

लेकर तिरंगा हाथों में, अपने फर्ज को निभाना है.
ममता बेबस बैठी घर में, सिन्दूर और चूड़ी है डर में.

जीत के आना तुम रण में, हार न जाना एक क्षण में.
गर लौटे ना मेरे लाल, याद रखना उसकी कुर्बानी.

शहीदों के बलिदान से, हमको मिली है आज़ादी.
मेरे वतन के रखवाले, हंसते-हंसते चढ़ गए फांसी.

सिने में खाकर गोलियां, जब आयेगा तू गलियों में.
देश प्रेमी सलाम करेंगे, चढ़ गए हंसते शूलियों में.

गर्व करेंगे भारत वासी, चारों तरफ छाई है उदासी.
युगों-युगों तक रहे नामी, वसुधा के रक्षक अनुगामी.

श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे, सब हिंद वीरों के समाधि.
शहीदों के बलिदान से, हमको मिली है आजादी.

मेरे वतन के रखवाले, हंसते-हंसते चढ़ गए फांसी.

*****

कठपुतली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

इतराती इठलाती है कठपुतली रानी,
लीलाएँ दिखलाती है कठपुतली रानी.

डोरी, छड़ या छाया के द्वारा होते खेल,
तबले की धुन पर गाती है कठपुतली रानी.

पंचतंत्र की कहानियों से देती है शिक्षा,
सबको खूब रिझाती है कठपुतली रानी.

जटिल विषय को सहज बनाकर,
भाषा, गणित भी सिखलाती है, कठपुतली रानी.

गुलाबो और सिताबो की नोकझोंक प्यारी ,
मनोरंजन से मन बहलाती है कठपुतली रानी.

काठ से बनी हुई आकृति को कहते कठपुतली,
नाट्यकला से रंग जमाती कठपुतली रानी.

*****

लीलावती

रचनाकार- लोकेश्वरी कश्यप

10 वीं सदी की एक पुरानी बात है, पर बात तो आज भी कुछ खास है.
दक्षिण भारत में जन्मी एक कन्या जिस पर भारत को नाज है.

महान ज्योतिष, गणितज्ञ भास्कराचार्य की पुत्री लीलावती उसका नाम है.
माता-पिता की एकमात्र नाजों से पली कन्या वह सुकुमारी है.

वैधव्य के दुख से पीड़ित कन्या वह महा दुखियारी है.
पिता नें प्रण लिया पुत्री को इस महा दुख से उबरना है.

पास बैठा प्यारी पुत्री लीलवती को, बड़े प्यार से उन्होंने समझाया.
दुख से बाहर निकलो पुत्री, अपना जीवन सार्थक तुम्हें बनाना है.

पुत्री नें कहा, बताये पिताजी आगे, मुझे क्या करनी तैयारी है.
पिता बोले बस रोज कुछ कविता, पहेलियाँ याद करनी व सुलझानी है.

तुम झूला झूलो, मूझे तुम्हारे लिए कुछ गीत, कविता, पहेलियाँ रचनी है.
लीलावती रोज कविता पहेलियाँ बुझती, गाती और गुनगुनाने लगी.

खेल खेल में गणित की छोटी -बड़ी उलझी पहेलियाँ सुलझाने लगी.
जीवन में गणित की उपयोगिया उसे समझ में आने लगी.

अपना वैधव्य दुख भूल, लीलावती गणित में महारत पाने लगी.
धीरे धीरे पाटी, बीज और ज्योतिष गणित की पहेलियाँ वह भी बनाने लगी.

लीलावती की गणितीय रचनाएँ सिद्धांत शिरोमणि में जगह बनाने लगी.
भास्कराचार्य ने लीलावती की प्रतिभा विद्वता को अमर बना दिया.

पार्टी गणित के एक भाग का ही उन्होंने लीलावती नाम रख दिया.
लीलावती ने यह सिद्ध किया सच्ची लगन से कुछ भी असंभव नहीं.

सही दिशा में सच्ची लगन से काम करो तो कुछ भी असंभव नहीं.
जल्दी ही पंडिता लीलावती महान गणितज्ञ आचार्य कहलानें लगी.

बड़े और महान ज्योतिषों, गणितग्यों में लीलावती की गिनती होने लगी.
आज भी लीलावती की गणितीय रचनाएं लोगों को चकित करती है.

लीलावती ने लगन और मेहनत से बनाई अपनी अमिट प्रसिद्धि है.
प्यारे बच्चों तुम भी गणित से ना इतना भयभीत रहो.

आओ तुम भी खेल खेल में गणित के गीत गाओ, पहेलियां सुलझाओ.
अपनी मधुर मुस्कान और प्यारे खेलों से गणित के भय को मार भगाओ.

तुम्हें बताऊं बात पते की, गणित से कैसा भय यह तो हमारे चारों ओर है.
सारे खेल सारे कामों में गणित का ही जोर और शोर है.

गणित के मोल को समझो बच्चों गणित तो अनमोल है.
जरा गौर से देखो तो हर बोल में गणित के शब्दों का ही घोल हैं.

*****

खुशियों की बहार

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

लाए खुशियों की बहार,
चाहे परेशानियां हो हजार,
जिंदगी तो है कुछ पलों की,
लड़ें, कैसा भी हो प्रहार.

खुशनुमा-सा वातावरण बनाएँ,
चलो कहीं यात्रा कर आएं,
प्रकृति की सुंदरता को छूकर,
कुछ जीवन में परिवर्तन लाएं.

अतीत और भविष्य के बारे में क्यों सोचे,
वर्तमान के पलों का होके,
चलते जाएँ, खिलखिलाते जाएँ,
चाहे बड़ी-सी-बड़ी मुसीबत रोके.

मासूम चेहरे को मुस्कान दें,
हर व्यक्ति को सम्मान दें,
पूरे करें दिल से हम भी,
जो भी हमारे अरमान हैं.

लाए खुशियों की बहार,
चाहे परेशानियां हो हजार,
जिंदगी तो है कुछ पलों की,
लड़ें, कैसा भी हो प्रहार.

*****

मेंढक और मछली

रचनाकार- डॉ अलका अग्रवाल

मेंढक बोला, मछली आओ,
बाहर आकर, मुझे दिखाओ.

तुम पानी में ही इतरातीं,
तैर-तैर कर नाच दिखातीं.

जल में से बाहर भी आओ,
हरी घास पर दौड़ लगाओ.

मछली बोली, मेंढक भाई,
क्या मेरी है शामत आई?

बाहर आकर नहीं बचूँगी,
मैं जल में ही, सदा रहूँगी.

*****

शहीद की व्यथा

रचनाकार- सोमेश देवांगन

सपनें सब परिवार के छोड़,
देश पर शहीद हुआ जवान.
माँ मान के भारत भूमि को,
कर दिया उसने सब कुर्बान.

माता की हो गई कोख सुनी,
राखी का भी नही रहा मान.
भाई-भाई के प्यार को तरसे,
खाली रह गया सिंदूर दान.

बाप के आँसू अब सूख गये,
पत्थर दिल बन गया बेजान.
गुड़िया रोते-रोते हुए बोली,
पापा मिलने गए हैं भगवान.

गाँव-घर-आंगन सुना हो गया,
बेटा जब छोड़ चले जहान.
करके सब अब याद उसे फिर,
कहते,बेटा था ये बड़ा महान.

लिपट के आया जब घर में,
तिरंगा बढ़ा रहा था जब शान.
सबने खुद से खुद को बोला,
बेटा हो गया माँ के लिए कुर्बान.

*****

पिता की सीख

रचनाकार- अर्चना त्यागी

सूरज शहर छोड़कर अपने गाँव लौट आया था. पिता की बीमारी की सूचना मिली थी. लेकिन गाँव आने पर पता चला कि पिता तो चले गए थे. बिना कुछ बोले, बिना कुछ कहे. अब अपनी माँ के साथ सूरज अकेला रह गया था. सूरज चौबीस साल का नवयुवक था. पढ़ा लिखा भी था लेकिन व्यवहारिकता में एकदम शून्य था. बातों को ठीक से समझ नहीं पाता था.

पिता की मृत्यु को एक साल हो चुका था, लेकिन उसने कुछ भी काम करने की नहीं सोची थी. एक दिन माँ ने कहा, "बेटा तुम्हारे पिता को गुजरे एक साल हो चुका है अब कुछ काम धंधा ढूंढो." सूरज ने माँ की बात मान ली. घर से चलते समय माँ ने पिता की सीख याद दिलाई.

"छाँव में जाना और छाँव में ही वापिस आ जाना." अपनी आदत के अनुसार सूरज ने गलत मतलब समझ लिया. उसने पिता के छोड़े हुए पैसे उठाए और घर से लेकर अपनी दुकान तक एक शामियाना लगवा दिया ताकि उसके रास्ते में हमेशा छाँव ही रहे. दुकान चलानी उसे आती नहीं थी और पिता की जमा पूंजी भी छाया करवाने में खर्च हो गई थी.

बेटे को उदास देखकर माँ ने दूसरी सीख याद दिलाई, "कभी व्यापार में घाटा हो तो मंदिर की चोटी से रुपया निकाल लेना." पिता पूजा पाठ में काफी विश्वास रखते थे इसलिए घर भी उन्होंने मंदिर जैसा ही बनवाया था. सूरज घर की छत पर चढ़ गया लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था.

पिता के अभिन्न मित्र दूसरे गाँव से उनसे मिलने आए. सूरज ने अपनी परेशानी उन्हें बताई, "चाचा लगता है पिताजी मुझसे नाराज़ थे तभी ऐसी सीख देकर गए." चाचा मुसकुराकर बोले, "सीख सही है बस तुमने समझा गलत है." सूरज हैरान परेशान. "वो कैसे?" उसने पूछा.

देखो तुम्हारे पिता की पहली बात का आशय है कि सूर्य उगने से पहले काम पर चले जाओ और सूर्यास्त के बाद घर वापिस आओ तो तुम व्यापार में अधिक समय दे पाओगे और तरक्की करोगे.

"अच्छा, पर दूसरी बात का तो कोई मतलब ही नहीं था. मैं घर की छत पर चढ़ा पर कुछ भी हाथ नहीं लगा." सूरज ने अपनी खीझ जाहिर करते हुए कहा. चाचा जोर से हँस पड़े.

"तुम्हारे मंदिर जैसे घर की चोटी की परछाईं एक तालाब में पड़ती है. वहाँ जाकर देखो कुछ मिलेगा." चाचा की बात मानकर सूरज तालाब पर गया. तालाब की मिट्टी हटाने पर सोने चांदी से भरे घड़े निकले. सूरज ने मन ही मन अपने पिता से माफी मांगी और उनकी सीख के अनुसार व्यापार पुनः प्रारंभ कर दिया.

*****

नेता जी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

भारत के गौरव हैं नेता जी,
जय हिंद का नारा गूंज उठी.
दिल्ली चलो वीर सैनिक तुम,
मन में स्वराज की चिंगारी लगी.

हिंद देश के वीर सपूत हो तुम,
चल पड़े विजय, बिगुल बजाने.
कहे जन-जन से मुझे खून दो,
आर्यवर्त को आज़ादी दिलाने.

जब तक है मेरी जान में जान,
भारत के लिए मैं लड़ता रहूंगा.
ऐ! फिरंगी पापी अधर्मी रावण,
मुक्त करो हिंद को कहता रहूंगा.

अंग्रेजों से युद्ध कर प्रदेश जीता,
आज़ाद हिंद फौज के सेनापति.
मुक्त किए गुलामी की बेड़ियों से,
अंडमान द्वीप के तुम अधिपति.

जापानी सेना के दांत खट्टे किए,
नया जोश,उमंग और उत्साह से.

विकल हो गया चंचल मन तुम्हारा,
देखकर रक्त भयंकर नरसंहार से.

मणिभवन में मिले गांधी जी से,
असहयोग आंदोलन में साथ दिए.
बंगाल टाइगर के सदृश्य दहाड़े,
अंग्रेज सरकार का विरोध किए.

महापालिका का प्रमुख कार्यकारी,
काम का तरीका और ढांचा बदला.
अंग्रेजी रास्ता का नाम बदलकर,
किए नामकरण भारतीय नाम रखा.

सुभाष चंद्र बने भारत के युवा नेता,
साइमन कमीशन का किया विरोध.
काले झंडे दिखाकर दमन किया,
कोलकाता से जंग लड़े बहु युद्ध.

खाकी गणवेश धारण करके बोस,
जन जागरूक किए स्वराज नामी.
कांग्रेस का वार्षिकी अधिवेशन में,
मोतीलाल नेहरू को दी सलामी.

अंग्रेजों से लोहा लेकर लापता हुए,
बमवर्षक विमान कांड से हुई निधन.
महान देशभक्त को सदा याद रखेंगे,
दिल में बिठा कर अपने जन-जन.

*****

खुशियों का त्यौहार

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

पूरे भारत देश में, आया है त्यौहार.
मिलकर सारे बाँटते, आपस में सब प्यार.
आपस में सब, प्यार बाँट कर, गले लगाते.
देत बधाई, इक दूजे को, मन हर्षाते.
रैली सारे,बिन बच्चों के, रहे अधूरे.
उड़े तिरंगा, खुशी मनाये, भारत पूरे.

वीरों को करते नमन, और झुकाते माथ.
सीना ताने जो खड़े, रख बंदूके साथ.
रख बंदूके, साथ हमेशा, वचन निभाते.
आँख उठा कर, देखे दुश्मन, मार गिराते.
जान गँवाते, माटी पर
शीश नवाते वीरों को,
रखे सुरक्षा,जो हमारी
नमन है उन हीरों को.

*****

मेरा तिरंगा

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू

तीन रंग का है बना,पाए तिरंगा नाम.
वो केसरिया रंग दे, त्याग और बलिदान.
संकट जब आये हमें, मर मिटना बतलाए,
सबके मन में हर्ष भर, लक्ष्य प्राप्ति सिखलाए.

सत्य अंहिसा धर्म का, चक्र चले दिन रात.
श्वेत रंग समझा रहा, सच्चाई की बात.
सादा जीवन में रहे, तन-मन उच्च विचार.
शांति अमन से सब मिले, वो शिक्षा संस्कार.

हरे रंग की पट्टी कहे, हरित धरा की शान.
रहे उर्वरा यह सदा, खुशहाली दे जान.
हरियाली धानी प्रकृति, मनोहारिणी भव्य.
हिन्द राष्ट्र-ध्वज ये कहे, सदा शक्ति दे दिव्य.

श्वेत-पट्टिका मध्य में, शोभित चक्र अशोक.
चौबीस तीलियाँ सदा, दिवस-निशाआलोक.
मनोभाव दृग तृप्त हो, नभ ध्वनि गूंजे ओम.
गहरा नीला पावनी, दिशा-दिशा कर व्योम.

*****

हिंदुस्तान की आवाज़

रचनाकार- श्रीमती विभा सोनी

अनेकता में एकता ही हमारी शान है,
तिरंगे के तीन रंग हमारी आन बान और शान है,
करते हैं यह प्रण इस देश के लिए, दुनिया का सबसे प्यारा देश बनाएंगे.
भारत के हर भारतवासी को, आजादी के गीत हम सुनाएंगे.

हम लहराएंगे हर जगह यह तिरंगा,
हिंदुस्तान की आवाज़ हर जगह पहुंचाएंगे.
शहीदों की कुर्बानी को व्यर्थ ना जाने देंगे,
भारत मां के आंचल को सुंदर हम सजाएंगे.

तिरंगा लहराएंगे अब हम नीले नीले आसमान में,
हिंदुस्तान की आवाज हर जगह पहुंचाएंगे.
देंगे सलामी हिंदुस्तान के तिरंगे को,
आजादी के गीत हम सुनाएंगे
आजादी के गीत हम सुनाएंगे.

*****

शरीफा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

ऊपर से खुरदरा, गोल है,
कहें शरीफा को सीताफल.
रोगों की अच्छी औषधि है,
स्वाद में होता है मीठा फल.

अंदर से है बहुत मुलायम,
गूदे का रंग खूब सफेद.
अपने कई गुणों के कारण,
अन्य फलों से रखता भेद.

भूरे - काले रंग के होते,
चिकने चमकीले - से बीज.
कच्चे पर तो रंग हरा है,
पक जाने पर बहुत लजीज.

छाल, बीज, जड़, पत्ते इसके,
कई रोग में आते काम.
एक बार जो इसको खा ले
बार-बार लेता वह नाम.

*****

गणतंत्र संध्या पर नमन

रचनाकार- दीपेश पुरोहित 'बिहारी'

गूँजे राष्ट्रगान भार, चहुँ ओर जयकार,
हिन्द विश्व गुरू सार,
बन जाए दिन मान.

विद्या नव हो प्रसार, फैले सुख शान्ति द्वार,
सहज ही सेवा भार,
मन में बसे सन्मान.

विवेकानंद सा बने, युवा वीर ओज घने,
प्रजा हित न्याय सने,
समृद्धि जन उत्थान .

हरी धानी ओढ़ चुनी, माता माल शीश बुनी,
शहीद असंख्य गुनी,
रक्षा हेतु प्राण दान.

*****

धूप

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

देखो आँगन आ गयी, प्यारी-प्यारी धूप.
सुंदर इसकी है किरण, लगती बड़ी अनूप.

ठंडी जब बढ़ने लगे, करे धूप से प्यार.
हाथ सेंकने को सभी, रहते हैं तैयार.

दिखते सूरज रौशनी, पक्षी करते शोर.
धूप सेंकने के लिये, उठ जाते हैं भोर.

ठंडी मौसम आ गयी, करे सबेरे योग.
दौड़ लगाते रोज जी, काया रहे निरोग.

धूप निकलती रोज हैं, लाती है मुस्कान.
ठंडी-ठंडी देह में, भर देती है जान.

*****

पर्यावरण मित्र

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

ऊर्जा के स्रोतों को बचाएँ.
पर्यावरण मित्र बन जाएँ.

हम नन्हें - मुन्ने बच्चे हैं,
अच्छा - बुरा स्वयं पहिचाने.
साथ बड़ों के हम भी सोचें,
पृथ्वी की गरिमा को जाने.

घर - बाहर की हरियाली को,
आओ! मिलजुल खूब बढ़ाएँ.

घर या पास - पड़ोस के साथी,
दुरुपयोग बिजली का रोकें.
जल - भोजन बर्बाद करे जो,
प्रेमपूर्वक उसको सभी टोकें.

बिजली खपत बहुत कम होती,
फ्लूरोसेंट बल्ब लगवाएँ.

कम्प्यूटर पर काम न हो जब,
तब उसे बंद करना है उत्तम.

इधर-उधर यदि जाना हो तो,
स्लीप मोड पर सेट कर लें हम.

फोन - वीडियो खुले न छोड़ें,
जोर से टीवी नहीं चलाएँ.

खिड़की पास या अगल-बगल में,
मेज लगाकर करें पढ़ाई.
प्राकृतिक उजियाला मिलता,
देख गुणीजन करें बड़ाई.

दें न मित्र को कार्ड बधाई,
ईमेल संदेश पहुँचाएँ.

बिना काम के खुला न छोड़ें,
कभी वॉशवेसिन के नल को.
धुलें हाथ - मुँह, ध्यान रहे तब,
व्यर्थ न कभी बहाएँ जल को.

आसपास हो जहाँ भी संभव
पौधे नए अवश्य लगाएँ.
पर्यावरण मित्र बन जाएँ.

*****

खेलेंगे खेल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

माँ! हम भी खेलेंगे खेल,
भाई, बहिन,मित्र खुश होंगे,
आपस में पनपेगा मेल.

चाह यही है, आसपास ही,
अच्छे खुलें खेल स्कूल,
खेलों का अभ्यास करें नित,
सारी चिंता जाएँ भूल .

दिनभर बंद पड़े कमरे में,
व्यर्थ तनाव रहे क्यों झेल.

हम में शारीरिक क्षमता है,
नहीं कुशलता में हैं कम,
खेल दिलाते मान देश में
फिर क्यों रहें फिसड्डी हम,

गेम ऑनलाइन दुखदायी,
इंटेरनेट लत लगती जेल.

पार्क शहर में कहीं - कहीं हैं,
गाँव में मिले खुला मैदान,
बाहर कोई न जाने देता,
घर में हो जाते हैरान .

खेलकूद में श्रेष्ठ कहाऐं,
व्यर्थ न डाले कोई नकेल.

समय पढ़ाई का हो सीमित,
खेल खेलना बहुत जरूरी,
हरा - भरा तन - मन हो जाए,
आलस दे, खेलों से दूरी l

लँगड़ी, खो - खो, छुपमछुपाई
हाकी, कबड्डी, धकमधकेल.

अथक परिश्रम और लगन से,
नीरज, मिल्खा सिंह बनेंगे,
नाम तिरंगे का ऊँचा कर,
स्वाभिमान से सदा तनेंगे.

आशा और उत्साह जगाकर,
चले स्वास्थ्य की छुकछुक रेल,
माँ! हम भी खेलेंगे खेल.

*****

आगे बढ़ते हैं

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

वक्त बीत गया, समा बदल गया,
चलो सब भूल कर आगे बढ़ते हैं,
दिल में लाए दया,
अब और नहीं लड़ते,
चलो सब भूल कर आगे बढ़ते हैं.

जब जीना हर हाल में है चाहे गर्मी हो या सर्द,
खुशी से जीने की कोशिश करें भुला के सारे दर्द,
क्यों ना अतीत को भूल कर वर्तमान को पढ़ते हैं,
वक्त बीत गया, समा बदल गया,
चलो सब भूल कर आगे बढ़ते हैं.

हममें ताकत है आगे बढ़ने की,
स्वयं को ही नहीं दूसरों को भी बढ़ाने की,
स्वयं की काबिलियत को याद करते हैं,
वक्त बीत गया, समा बदल गया,
चलो सब भूल कर आगे बढ़ते हैं.

यदि अतीत के दर्द में आंसू बहाएंगे,
उज्जवल वर्तमान कैसे बनाएंगे,
भविष्य को कैसे सवार पाएंगे,

अब नहीं किसी से डरते हैं,
वक्त बीत गया, समा बदल गया,
चलो सब भूल कर आगे बढ़ते हैं.

कामयाबी हमारे कदमों को चूम रही है,
खुशियां जिंदगी में भर गई है,
ना मुड़ें पीछे, आगे की ओर देखते हैं,
वक्त बीत गया, समा बदल गया,
चलो सब भूल कर आगे बढ़ते हैं.

*****

संगीत

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

एक मधुर सी ध्वनि जब कानों में गुनगुनाती,
मन को प्रसन्नता से भर जाती,
योग की तरह होता है संगीत,
हर किसी को है इस से प्रीत.

हमारी ध्यानशक्ति को बढ़ाएं,
शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बनाए,
हर एक के जीवन में प्रमुख भूमिका निभाए,
इसकी ताल पर सभी को नचांए.

सकारात्मक विचार को जगाता,
एकाग्रता को पूर्ण रूप से बढ़ाता,
यात्रा और त्यौहार पर इसे हर कोई गाता.
शांति, प्रेम और साहस को जीवन में लाता.

संगीत से एक नई उमंग प्रकट होती,
कभी-कभी यह प्रकृति को भी मंत्रमुग्ध कर देती,
सुव्यवस्थित ध्वनि, जो रस की सृष्टि करे, संगीत कहलाती,
एक नया सा अंदाज हृदय में जगाती.

*****

गणतंत्र दिवस

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

26 जनवरी 1950 में भारतीय संविधान लागू किया,
भारत को पूर्ण रूप से गणतंत्र घोषित कर दिया.

परेड, भाषण, विद्यालय में मिठाइयां, 26 जनवरी का दिन राष्ट्रीय पर्व,
सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के साथ मनाते हुए होता है गर्व.

पहली बार गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 1950 को मनाया,
डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ तिरंगा फहराया.

इस मुख्य दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि करते हैं अर्पित,
सलामी देते हैं उनको, जिनका जीवन है देश के लिए समर्पित.

भारत के राष्ट्रपति द्वारा दिल्ली के लाल किले पर भारतीय ध्वज फहराया जाता,
देश की राजधानी दिल्ली मे बड़ी ही धूम धाम से अस्त्र शस्त्र का प्रदर्शन होता.

सामूहिक रूप में खड़े होकर हम सब राष्ट्रगान गाते,
देशभक्त बनकर अपने देश की उन्नति के लिए काम करने की कसम खाते.

जिनकी शहादत से देश हुआ गणतंत्र,
झुक कर करते हैं उन वीरों के चरणों में नमन,
चलो हम सब भी, हमारे देश की जिम्मेदारी, पूर्ण हृदय से निभाए,
जय हिंद, वंदे मातरम का मिलके नारा लगाए.

*****

ई-कचरा

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

कंप्यूटर और उससे संबंधित अन्य उपकरण,
टीवी, वाशिंग मशीन, मोबाइल फोन से जुड़े उत्पादन,
उपयोग से बाहर होने पर कहते हैं इसे ई- अपशिष्ट,
इसको जलाने से होते हैं हम कई बीमारियों से संक्रमित.

पर्यावरण के लिए यह बहुत बड़ा नुकसान,
ई कचरे का निपटान नहीं आसान,
प्लास्टिक और कई तरह की धातुओं से मिलकर बनता है,
ई वेस्ट कैंसर तक का खतरा पैदा करता है.

ई कचरे की मरम्मत करके उसका करना होगा पुनर्निर्माण,
नए तरीके लेकर आए, इसका हो सके थोड़ा निपटान,
नगरपालिका कर सकती है इसका बेहतर निष्पादन,
उत्पादनकर्ता को नियमों में रहकर करना होगा उत्पादन.

चलो हम सब मिलकर बनते हैं जागरूक नागरिक,
देते हैं उनको जो करते हैं इसे रीसाइक्लिन
बचाए इसके खतरे से हमारे पर्यावरण को,
सरकार का साथ दे ताकि इसका पूर्ण रूप से प्रबंधन हो.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

1. प्यारा रंगों का त्योहार,
   फागुन में आता हर बार.
   उड़ता खूब अबीर गुलाल,
   नाम बताओ, करो कमाल.

2. बाँस या लोहे की होती,
   रंगों से है खूब भिगोती.
   होली के दिन आती काम,
   मित्र बताओ, उसका नाम.

3. फूलों की बहार है,
   भौरों की गुंजार है,
   प्रकृति का श्रंगार है,
   कौन - सी ऋतु बलिहार है.

4. जली चिता में स्वयं होलिका,
   बालक को न आई आँच,
   होली पर्व तभी से प्रचलित,
   बालक कौन, बताओ साँच.

उत्तर- 1. होली, 2. पिचकारी, 3. वसंत ऋतु, 4. प्रह्लाद, 5. गुझिया, 6. देवी सरस्वती

*****

ऋतु बसन्ती

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

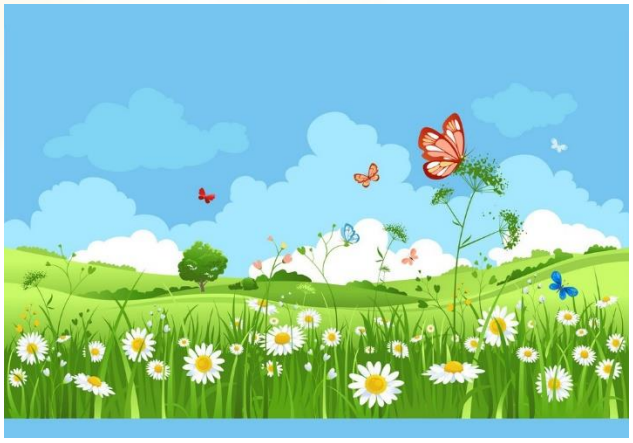

ऋतु बसन्त का दौर, देख छायी हरियाली.
करते कोयल शोर, बौर भी लगती डाली.
पीले-पीले रंग, सभी मोहित हैं होते.
सरसों का है फूल, खेत में इसको बोते.

हरा-भरा चहुँओर, लगे गेहूँ की बाली.
करते पक्षी शोर, बैठती डाली-डाली.
खुशियाँ चारों ओर, मोरनी पँख फैलाती.
तोता मैना रोज, बाग में वह इठलाती.

पुष्पों की मुस्कान, सभी के मन को भाती.
करे बसन्ती शोर, हवाएँ सर-सर आती.
खिलते फूल पलाश, सब को लगता प्यारा.
होली में बनते रंग, खेलते हैं जग सारा.

*****

सतत विकास

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

करें गरीबी का निवारण,
मिलकर बचाए पर्यावरण,
हो समाज मैं आत्मनिर्भरता,
बिना फर्क किए हो लैंगिक समानता.

कोई व्यक्ति न भूखा सोए,
उद्योग, नवाचार, बुनियादी सुविधाएं,
उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाली,
लक्ष्य हेतु हो हमारी भागीदारी.

गुणवत्तापूर्ण मिले सभी को शिक्षा,
जलीय और थलीय जीवो की सुरक्षा,
स्वच्छ जल और स्वच्छता,
जलवायु परिवर्तन आपदा से सामना करने की क्षमता.

शांति, न्याय और हो सशक्त संस्थाएं,
संवहनीय शहर और समुदाय,
असमानताओं में कमी की चुनौती,
उर्जा हो प्रदूषण मुक्त और सस्ती.

सतत विकास देश में लाए,
जानिए इसकी सारी विशेषताएं,
भविष्य की पीढ़ी की भी पूरी हो आवश्यकताएं,
हम सब मिलकर भारत देश को विकसित बनाएं.

*****

चलो गाँव की ओर

रचनाकार- सुशीला साहू "विद्या"

आओ वापस लौट चलें हम, चलो गाँव की ओर.
जाने क्या क्या बात होगी, झुमें हो जाए विभोर.

मेरे गाँव की मिट्टी तो, सोंधी सोंधी महके.
जाने क्या सौगात देगी, खेत खलिहान चमके.
पँछी गाँव की गली-गली, चहके चारों ओर.
आओ वापस लौट चलें हम, चलो गाँव की ओर.

ये गाँव मेरे भारत के, बात निराली सदियाँ.
ऊँची-ऊँची और पहाड़ी, कल कल करती नदियाँ.
गाँव की है अनपढ़ मिट्टी में, हरियाली चारों ओर.
आओ वापस लौट चलें हम, चलो गाँव की ओर.

इस धरती से ही उपजें हैं, हरिश चंद्र सत्यवादी.
सूर कबिरा तुलसी दास, बाल्मिकी अस ज्ञानी.
झरने गाती संगीत मधुर, पुकारे चारों ओर.
आओ वापस लौट चलें हम, चलो गाँव की ओर.

*****

पेड़ तो लगाइए

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

धरा को भीषण गर्मी से बचाइए
अधिक से अधिक पेड़ तो लगाइए.
ऑक्सीजन खरीदने की नौबत ना लाइए.
तुलसी और चंदन के पेड़ तो लगाइए.

जेठ की तपन से बचने छांव तो बनाइए.
नीम, पीपल का पेड़ तो लगाइए.
हर गांव को आयुर्वेद ग्राम तो बनाइए
हर्रा, बहेड़ा, आंवला पेड़ तो लगाइए.

प्राकृतिक सुंदरता को अपनाइए.
एलोवेरा का उत्पादन तो बढ़ाइए.
अचार, मुरब्बा का लुत्फ उठाइए.
आम, नींबू का पेड़ तो लगाइए.

गांवों से बंदरों को दूर भगाइए
जंगल बनाने के लिए पेड़ तो लगाइए.
सड़क किनारे की सुंदरता को बढ़ाइए.
कतार से सदाबहार पेड़ तो लगाइए.

फलों से अपनी आमदनी को बढ़ाइए.
कई प्रकार के फलदार पेड़ तो लगाइए.
पक्षियों का कलरव तो सुनाइए.
घोंसलों के लिए पेड़ तो लगाइए.

घट रहे भूजल स्तर को बचाइए.
अधिक से अधिक पेड़ तो लगाइए.
वनोपज से आमदनी तो बढ़ाइए.
वनों के लिए गुणकारी पेड़ तो लगाइए.

*****

सप्ताह के गीत

रचनाकार- श्रीमती श्वेता तिवारी

सोमवार को आई रेल,
मंगलवार को खेलें खेल.

बुधवार को नानी आई,
गुरुवार को खाई मिठाई.

शुक्रवार को कुल्फी खाई,
शनिवार को खाई मलाई.

फिर आया प्यारा रविवार,
आओ खेले कूदे मिलकर यार.

*****

हेल्मेट

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

पिता जा रहे थे बाजार,
स्कूटी पर हुए सवार.

तभी वंश ने सहसा रोक,
हेल्मेट कहाँ,दिया था टोक .

माना जाना नहीं है दूर,
पर सिर में हेल्मेट रहे जरूर.

हो सकती सड़कों पर फिसलन,
गड्ढे बन सकते हैं अड़चन.

जिसने हेल्मेट नहीं लगाया,
उसने संकट पास बुलाया.

धूल - धुएँ से नेत्र बचाता,
घर तक सकुशल वापस लाता.

हेल्मेट होता सिर का गहना,
ग़लत बात, नहीं यदि पहना.

यह लें हेल्मेट, शीघ्र लगाएँ,
हाँ! अब स्कूटी से जाएँ.

*****

आत्मसंतुष्टि

रचनाकार- श्रीमती वंदिता शर्मा

गरिमा की परीक्षा पास आ रही थी और वह पढ़ाई में व्यस्त हो गयी थी. गरिमा पढ़ाई में बहुत अच्छी थी. लेकिन कहते हैं न कि बुरी संगति व्यक्ति को बुरा बना देती है, वैसे ही गरिमा भी अपने सहेलियों से परीक्षा में नकल करना सीख गई है.

अब गरिमा को नकल करना बहुत अच्छा लगने लगा. वह किताबों से महत्वपूर्ण बातों को छोटी-छोटी पर्चियों में छोटे-छोटे अक्षरों में लिख लिया करती थी. फिर इन पर्चियों को कपास में, जूतों में और अपने कपड़ों में छिपाकर परीक्षा देने चली जाती थी.

पहले गरिमा बहुत बुद्धिमान और पढ़ाई के प्रति समर्पित थी. पर कुछ ग़लत सहेलियों की संगत में अपने विवेक का प्रयोग न कर परीक्षा में नकल की पर्चियाँ बनाकर वह भी ले जाती थी. उसकी कुछ सहेलियाँ नकल की पर्ची ले जाकर आसानी से पास हो जाती थी . यह देखकर उसे भी ऐसा करना अच्छा लगने लगा और गरिमा भी यही सब करने लगी.

परीक्षा प्रारंभ हो गई. गरिमा प्रतिदिन नकल की पर्ची बनाकर ले जाती और नकल मारकर लिखती थी.

एक दिन गरिमा नकल की पर्चियाँ बनाने में बहुत ज्यादा व्यस्त थी.

तभी गरिमा की माँ उसे दूध देने कमरे में आयी. माँ ने जब देखा की गरिमा पर्चियाँ बनाने में व्यस्त है, तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ. उन्होंने कभी भी नहीं सोचा था कि गरिमा ऐसा कुछ करेगी. पर उस समय माँ गरिमा को देखकर बाहर चली गयी.

उस समय गरिमा को तो कुछ नहीं कहा पर जब रात हुई और गरिमा सो गई ,तब माँ ने गरिमा के कमरे में चुपके से आकर नकल की पर्चियों को निकाल लिया.

सुबह गरिमा बहुत खुशी-खुशी स्कूल चली गई. उसने नकल की सारी पर्चियाँ कपास में रखी थीं. जब शिक्षिका ने प्रश्न-पत्र का वितरण किया, तो गरिमा ने देखा कि वही प्रश्न पूछे गए थे जिनकी पर्चियाँ उसने बनाई थी. पर जब गरिमा ने कपास खोला तो वह हैरत में पड़ गई क्योंकि कपास में एक भी पर्ची नहीं थी. वह मन ही मन सोचने लगी कि मुझसे ये कैसी गलती हो गई? अब मैं इन सवालों को कैसे हल करूँगी? उसकी आँखों में आँसू भर आये. गरिमा, शिक्षकों की चहेती छात्रा थी सभी शिक्षकों को पूर्ण विश्वास था कि गरिमा सारे सवालों को हल कर लेगी. परंतु गरिमा के आँखों में आँसू देखकर शिक्षिका

उसके पास आई और बोली-क्या बात है गरिमा तुम रो क्यों रही हो? प्रश्न तो बहुत सरल आये हैं. इनकी पुनरावृत्ति हम कक्षा में पहले ही कर चुके हैं.

शिक्षिका की बात सुनकर गरिमा के मन में आत्मविश्वास जागृत हुआ और उसने शिक्षिका से कहा-"जी हाँ मैडम मैं प्रश्न देखकर भ्रमित हो गई थी." गरिमा ने ध्यान से प्रश्नों को पढ़ा और उनके हल अपनी समझ के आधार पर लिख दिए.

जब वह घर पहुंची तो माँ ने कहा_गरिमा बेटा आज का पेपर कैसा बना? गरिमा ने कहा- बहुत अच्छा बना है माँ, मैं पास हो जाऊँगी. आँखों में आँसू लिए अपने कमरे में जाकर नकल की पर्चियाँ ढूँढ़ने लगी. उसके मन में डर था कि मेरे इस गलत काम पर माँ जरूर डांटेंगी. माँ ने पीछे से आकर गरिमा से कहा- तुम इसे ही ढूँढ़ रही हो न? माँ के हाथ में नकल की पर्ची को देखकर गरिमा रोने लगी और माफी माँगने लगी कि माँ अब कभी भी ऐसा गलत काम नहीं करूँगी. गरिमा की समझ में आ गया था कि गलत काम का नतीजा गलत ही होता है. इस प्रकार के कार्य से आत्म संतुष्टि नहीं मिलती. हमेशा मेहनत का फल ही मीठा होता है.

*****

पशु-पक्षी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

आदमी जंगल उजाड़कर,
अपना घर बसाए.
बोलो भैया अब,
पशु-पक्षी कहाँ जाए?

नदियों को रोककर,
गाँव-नगर पानी ले आए.
पशु-पक्षी अब,
अपनी प्यास कैसे बुझाए?

बारूद बिछाये जाने पर,
जंगल धुआँ-धुआँ हो जाए.
भोजन-पानी दुषित हुआ,
पशु-पक्षी अब क्या खाए.

*****

माँ शारदे

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

वीणा की झंकार, भक्त सुन उठ कर आते.
दोनों हाथ जोड़, माथ को सभी झुकाते.
श्वेत वस्त्र को देख, शांत मन भी हो जाते.
देती सब को ज्ञान, कलम सब हाथ उठाते.

बजती जब-जब ताल, चहकते पक्षी सारे.
कलरव करते रोज, सभी लगते हैं प्यारे.
हरियाली चहुँओर, पुष्प बगिया खिल जाती.
कमल पुष्प पर बैठ, शारदा माँ मुस्काती.

लेकर पुस्तक वेद, ग्रन्थ भी हमें बताती.
अँधियारा कर दूर, ज्ञान की दीप जलाती.
माँ मैं हूँ नादान, कलम में साथ निभाना.
लेखन हो मजबूत, शिखर में भी पहुँचाना.

*****

मैं नन्हा सा बालक हूँ

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय

मैं नन्हा सा बालक हूँ,
सोच ऊँची रखता हूँ.
देश की सेवा कर सकूँ,
हृदय भाव ये रखता हूँ.

आ जाए गर कोई तूफान,
विचलित कभी न होऊंगा.
सत्य राह पर चलकर सदा,
अपना कर्तव्य निभाऊंगा.

नेक कर्म सदा करूँगा,
भेदभाव नहीं रखूँगा.
एकता अखंडता का,
मान सदा ही रखूँगा.

शरहद पर तैनात रहूँगा,
बनकर मैं सजग प्रहरी.
शत्रु कभी बच न पायेगा,
रखूँगा इतनी नजर गहरी.

*****

मातृभाषा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

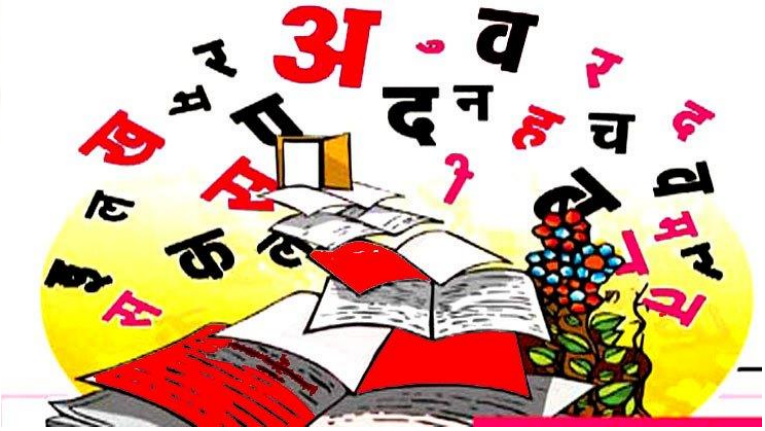

मातृभाषा माँ की बोली,
सबकी प्यारी है दुधबोली.

माँ की भाषा में जब बोलें,
ज्यों कानों में मिश्री घोलें.

माँ की ममता, माँ का प्यार,
देती चिंतन का आधार.

ध्वनि है सरस मधुर संगीत,
सहज हृदय लेती है जीत.

हर्ष, प्रेम, दुःख अथवा क्रोध,
निज भाषा में देता बोध.

माँ से प्राप्त मातृभाषा,
जीवन की मंगल आशा.

मातृभाषा करें प्रयोग,
दूर करें अँग्रेजी रोग.

करें मातृभाषा संरक्षित,
कभी न समझें इसे उपेक्षित.

*****

जंगल में ऐसा चुनाव

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

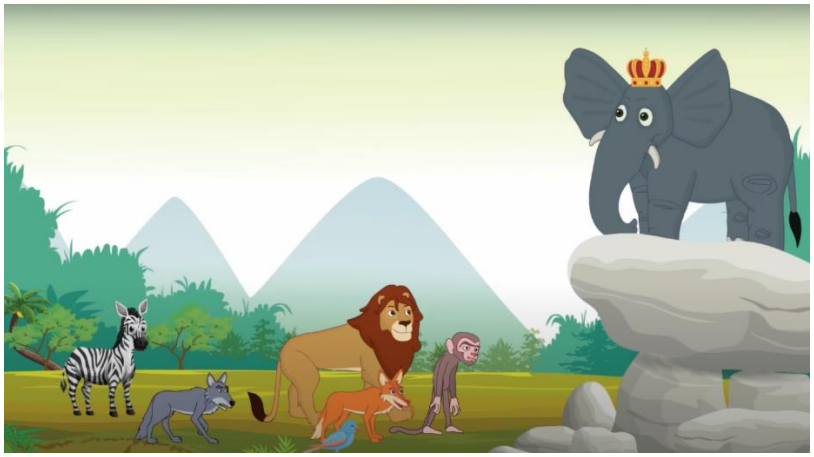

जंगल में ऐसा चुनाव
कभी नहीं हुआ था भाई.
शेर को हरा कर
हाथी बन गया राजा भाई.

हाथी के राजा बनते ही
उसने ऐसी नीति बनाई.
जंगल के सभी जानवरों को
सरकारी नौकरी दिलवाई.

मंहगाई और चोर बाजारी से
सबने छुटकारा पाई.
जंगल में खुशहाली का
बिगूल बज गया भाई.

डिजल और पेट्रोल
टैक्स फ्री हो गया भाई.
मंहगाई से जंगल वासियों को
भारी राहत मिल गया भाई.

हर सरकारी दफ्तर में
रिश्वतखोरी ख़त्म हो गई.
जंगल की सारी जनता
खुशी से माला माल हो गई.

हाथी राजा ने जंगल में
विकास खूब करवाई.
मुफ्त अस्पताल मुफ्त शिक्षा
मुफ्त मिल रही बिजली भाई.

सड़के बन गई रेल आ गई
कई एयरपोर्ट बन गया भाई.
सरकारी बसों की हर जगह
शुरु हो गई आवा जाही.

कल कालखानों के जंगल में
हर जगह जाल बिछाई.
जंगल के सभी जानवर
गरीबी से छुटकारा पाई.

*****

होली मिल कर संग

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

आओ खेलें आओ खेलें
होली मिल कर संग.
एक दूजे को खूब लगाएं
आओ मिल कर रंग.

होली का त्यौहार हम
मिल कर खूब मनाएं.
गुझिया मालपुआ मिठाई
खाएं और खिलाएं.

लाल हरा नीला काला
सबके हो जाएं गाल.
आज खूब लगाएं हम
एक दूजे को अबीर गुलाल.

मिल जुल कर होली का
त्यौहार हमहब मनाएं.
जो मिल जाए राह में
उसको हम गले लगाएं.

भाई चारा प्रेम मोहब्बत
अपना सबसे बढ़ाएँ.
बच्चों और बड़ों के संग
यह त्यौहार मनाएं.

होली का यह त्यौहार
हर साल मनाया जाता है.
आग में होलिका को
हर साल जलाया जाता है.

*****

होली जब जब आती है

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

रंग मन को बहुत भाती है,
होली जब जब आती है.
बच्चों की टोली घर से,
रंग खेलने निकल जाती है.

कोई होली का गीत,
तो कोई जोगिरा गाते है.
एक दूजे को सब,
रंग खूब लगाते है.

सबके हाथों में आज,
पिचकारी नजर आते है.
कोई रंग गालों पर,
कोई अबीर गुलाल लगाते हैं.

आज के दिन रंगों से,
सब खूब नहाते हैं.
लाल हरा नीला पीला,
कपड़े सबके हो जाते हैं.

आज के दिन घर में बैठ कर,
गुझिया मालपुआ खाते हैं.
होली मिलन समारोह,
सब मिल कर खूब मनाते हैं.

*****

मेरे दाँत

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

कितने सुंदर मेरे दाँत,
लगती मोती जैसी पाँत.

दाँत दूध के गिरे, न खेद,
दूध के जैसे उगे सफेद.

अतिशय स्वच्छ और चमकीले,
क्या मजाल दिख जाएँ पीले.

ब्रश करता दिन में दो बार,
कॉफी, चाय नहीं स्वीकार.

करूँ न सेवन गर्म या ठंडा,
स्वस्थ दाँत का उत्तम फंडा.

मीठी गोली अथवा टॉफी,
खा न सकूँगा, देना माफी.

नीम की करता हूँ दातून,
दाँत से कभी न निकले खून.

प्रतिदिन मैं पीता हूँ दुग्ध,
दाँत देख सब होते मुग्ध.

पानी से करता हूँ कुल्ला,
गन्ना खाता खुल्लमखुल्ला.

*****

होली है

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

पूरा चंपक वन बहुत खुश लग रहा था. हर जगह पिचकारी रंग अबीर की दुकान सजी नजर आ रही थी. मोनू भालू अपनी दुकान पर एक बोर्ड टंगवा रखा था. उस पर लिखा था दो पिचकारी खरीदने पर एक रंग का डब्बा मुफ़्त ले जाइए. इस बार सोनू हिरन, कालू हाथी और मंटू जेबरा ने अपनी-अपनी रंग पिचकारी और अबीर की दुकान लगाई थी. चंपक वन के सारे जानवर अपनी-अपनी पसंद क़े पिचकारी रंग अबीर-गुलाल खरीद कर घर ले जा रहे थे. चंपकवन के राजा ओम शेर का मंत्री टनटन बंदर कई दिन से बीमारी का बहाना बना कर घर में छुप कर बैठा हुआ था. वह होली नहीं खेलना चाहता था इसलिए बीमारी का बहाना बना कर घर से बाहर नहीं निकल रहा था. चंपकवन के राजा ओम शेर टनटन बंदर को सबक सिखाने के लिए होली से दो दिन पहले यह घोषणा करवा दी कि इस साल चंपकवन में होली के दिन जो सबसे ज्यादा रंग खेलेगा उसे हमारी तरफ से चंपकवन सम्मान पत्र और एक लाख रूपया नगद इनाम दिया जाएगा. राजा ओम शेर का ऐलान सुनकर सभी चंपकवन वासी बहुत खुश नजर आ रहे थे. मगर टनटन बंदर मन ही मन पछता रहा था. मैंने झूठमूठ में बीमारी का बहाना बना कर बहुत बड़ी गलती कर दी. एक लाख रूपया और चंपकवन सम्मान पत्र तो हमें मिलना चाहिए. शाम होते ही टनटन बंदर राजा ओम शेर के पास पहुंच कर बोला महाराज मैं भी होली प्रतियोगिता में भाग लेना चाहता हूँ. मगर तुम तो बीमार हो तुम कैसे होली प्रतियोगिता में भाग ले सकते हो?

राजा ओम शेर टनटन बंदर से बोल पड़ा. महाराज मैं होली न खेलने के कारण आप से बिमार होने का बहाना बना कर घर में बैठा हुआ था. मुझे कोई बीमारी नहीं है. मैं भला चंगा हूँ. टनटन बंदर की इतनी बात सुन कर राजा ओम शेर हंस पड़े और बोले मैं जनता था तुम्हारी झूठ की बीमारी पकड़ी जाएगी. इसलिए मैंने यह ऐलान करवाया. मगर इस साल का सम्मान और पुरस्कार तुम्हें नहीं दिया जाएगा किसी दूसरे जानवर को दिया जाएगा. अगले दिन होली थी. चंपकवन के सभी जानवर होली खेलने के लिए चंपकपार्क में जमा हो गए.

अबीर- गुलाल लगाया और रंग भी लगा कर होली की शुरूआत कर दी और होली है होली है कह कर सब पर रंग बरसाने लगे. कालू हाथी सुबह से शाम तक रंग खेल कर सभी जानवरों को रंगो से नहलाता रहा. अन्त में जब सम्मान पत्र और पुरस्कार देने की राजा ओम शेर ने घोषणा की तो सभी जानवर खुशी से हंस पड़े. राजा ओम शेर ने कालू हाथी को चंपकवन सम्मान पत्र और एक लाख रूपये का चेक दे कर सम्मानित किया.

कालू हाथी को सम्मान देने की खुशी में जंगल के सारे जानवर राजा ओम शेर की जय-जयकार करने लगे. इस तरह सभी जानवरों ने हँसी ख़ुशी से होली का त्योहार मनाया.

*****

चीड़ा और चीड़ी का जोड़ा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बहुत साल पहले की बात है. एक समुद्र तट के पास एक बरगद के पेड़ पर एक चिड़ा और चिड़ी का जोड़ा रहता था. एक रोज चिड़ी ने चिड़ा से कहा- "हमें यहां समुद्र तट पर रहते बहुत साल हो गए. मेरा मन कहता है एक बार समुद्र के उस पार की दुनिया कैसी है उसे देख आए. अगर तुम चलने को राजी हो तो बताओ?'' चिड़ी की बात सुन कर चिड़ा बोला समुद्र का कोई ओर-छोर नजदीक नहीं होता है. समुद्र बहुत विशाल होता है. हम समुद्र के उस पार नहीं जा सकते हैं. बीच राह में थक जाएंगे. चिड़ा की बात सुन चिड़ी बोली चाहे समुद्र कितना भी बड़ा क्यों न हो, मैं तो उड़ कर समुद्र के उस पार की दुनिया देखने जरूर जाऊंगी. "ठीक है मैं भी तुम्हारे साथ चलने को तैयार हूँ." चिड़ा ने कहा.

अगले दिन सूरज निकलने से पहले चिड़ी और चिड़ा खा पी कर अपनी समुद्र यात्रा पर निकल पड़े. रास्ते में बादलों ने कहा चिड़ी और चिड़ा तुम दोनों वापस लौट जाओ क्योंकि समुद्र पार करना तुम दोनों के बस की बात नहीं है. थक कर समुद्र में गिर जाओगे. मगर चिड़ी और चिड़ा बादलों की बातें अनसुनी कर के उड़ते ही रहे. तीन दिन की लम्बी उड़ान के बाद आखिर चिड़ी और चिड़ा समुद्र उस पार की एक वन में पहुंच ही गए. मगर वन में न कोई जानवर दिखाई दिया न कोई चिड़िया दिखाई दी. सुनसान वन में पहुंच कर चिड़ी और चिड़ा एक आम के पेड़ पर बैठ कर सुस्ताने लगे. कुछ घंटे बाद सफेद कपड़ा पहने एक सुन्दर नव जवान व्यक्ति वहां आया और चिड़ी और चिड़ा से बोला तुम दोनों यहाँ कहाँ आए हो?'' नव जवान व्यक्ति की बात सुनकर चिड़ी और चिड़ा बोले हम दोनों समुद्र उस पार से यहाँ की दुनिया देखने आए है. मगर आप कौन हैं अपना परिचय हमें दीजिए. नव जवान व्यक्ति अपना परिचय देते हुए बोला मैं वन देवता हूँ. मगर हमारे वन में एक डायन रहती है. वह रात में घुमने निकलती है. रात में उसके सामने जो भी जानवर और पक्षी जाते है उसे वह मार कर खा जाती है. डायन के डर से सारे जानवर और पक्षी यह वन छोड़ कर दूसरे वन में चले गए. इसलिए तुम दोनों भी रात में यहाँ रूकने की कोशिश मत करना वरना डायन तुम दोनों को पकड़ कर खा जाएगी. वन देवता क्या आप हमें यह बता सकते है कि वह डायन रहती कहाँ है?'' डायन यहाँ से उत्तर दिशा में काफी दूर एक बरगद के पेड़ पर रहती है. दिन में वह चुहिया बन जाती है और रात में डायन बन जाती है. अगर कोई चुहिया को पकड़ कर जलते आग में डाल कर जला दे तो डायन की मौत हो जाएगी और उससे हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा.

डायन चुहिया बन कर एक पिंजड़े में रहती है. ताकी कोई उसे पकड़ न पाए. इतना कह कर वन देवता खामोश हो गए. वन देवता की इतनी बात सुन कर चिड़ा और चिड़ी बोले हम दोनों उस डायन को कल तक मार कर रहेंगे. इतना कह कर चिड़ा उड़ कर दूसरे वन में चले गए विश्राम करने के लिए. अगले दिन सुबह चिड़ा और चिड़ी उस बरगद के पेड़ के पास पहुंच कर देखा कि बरगद के पेड़ की एक डाल पर एक पिंजड़ा लटका हुआ था. उसमें एक चुहिया गहरी नींद में सोई हुई थी. चुहिया को सोते देख कर चिड़ी और चिड़ा दोनों ने मिल कर ढ़ेर सारे सूखे पत्ते और लकड़ियाँ इकठ्ठा कर के उसमें आग लगा दिया. जब लकड़ियां धू-धू कर जलने लगी तो चिड़ा उड़ कर पिंजड़े को बरगद के पेड़ से उतार कर उसे जलते आग में ला कर डाल दिया. आग में पड़ते ही चुहिया बचाओ बचाओ चिल्लाने लगी. मगर चुहिया मौत से बच न सकी और आग में जल कर राख हो गई. पूरे वन को दुष्ट डायन से हमेशा हमेशा के लिए छुटकारा मिल गया. तभी वन देवता वहाँ आ पहुंचे और चिड़ा और चिड़ी से हाथ जोड़ कर बोले तुम दोनों ने इस वन को डायन से छुटकारा दिला कर एक महान काम किया है. इसलिए आज से यह वन तुम दोनों का हो गया. अब तुम दोनों को इस वन को छोड़ कर कहीं जाने की जरूरत नहीं है. डायन के मरने की खबर पा कर दूसरे वन गए सारे जानवर और पक्षी अपने पुराने वन में लौट आए और मिल जुल कर रहने लगे.

*****

नई टेक्नोलॉजी की पढ़ाई

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर "रवि"

कोरोना ने की चढ़ाई तो,
शुरू हुई ऑनलाइन पढ़ाई.

अनवरत कक्षाएं लगने लगी,
और बच्चे मोबाइल से जुड़ने लगे.

मात -पिता की परिस्थिति कमजोर,
फिर भी मात -पिता ने लगाया जोर.

बच्चों को स्मार्टफोन दिलाया,
कहा अब इसमें पढ़ मेरे लाला.

नई टेक्नोलॉजी की नई पढ़ाई,
बच्चों ने भी उत्सुकता दिखाई.

फिर फोन पर नेटवर्क की समस्या,
मात -पिता की असफल हुई तपस्या.

फिर बच्चों ने जुगात जमाई,
छत के ऊपर चढ़ किये पढ़ाई.

जब शिक्षा ऑनलाइन हुई भाई,
मदद के लिए आए सब बहन-भाई.

पढ़ाई के लिए अनुशासन बनाना,
यह हमें ऑनलाइन ने सिखाया.

शिक्षा का पाठ हमें पढ़ाया,
नई टेक्नोलॉजी के साथ चलना हमें सिखाया.

*****

होली आई है

रचनाकार- सीमा यादव

होली आई है भई होली आई है.
ढेरों खुशियाँ संग लेकर आई है.

रंग -बिरंगी प्यार की अनेक बातें.
अपने संग लेकर होली आई है.

सुन्दर -मीठे, स्वादिष्ट पकवान से.
दादी -माँ -दीदी ने रसोई अपनी सजाई हैं.

ढोल- बाजे -नगाड़े की गूँज से.
गाँव- गली,मस्त -सुहावनी लग रही है.

रंगों की होली घर -घर खुशियाँ लाई है.
आपस में प्रेम से रहने का पैगाम लेकर आई है.

*****

मेहनत करना सीख लो

रचनाकार- सीमा यादव

हे मानव तुम!
कड़ी मेहनत करना सीख लो.
मेहनत की रोटी,
आपके सारे रोगों को दूर कर देगी.

मेहनत करके खाने से,
भोजन बन जाता है अमृत.
मेहनत करके जीने से,
जीवन बन जाता है खुशहाल.

मेहनत करने वालों का,
होता है सदा सम्मान.
जो मेहनत से जी चुराता है,
उसका सदा होता अपमान है.

मेहनत नहीं करने पर,
कभी ना बन पाता महान है.

*****

वसंत

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

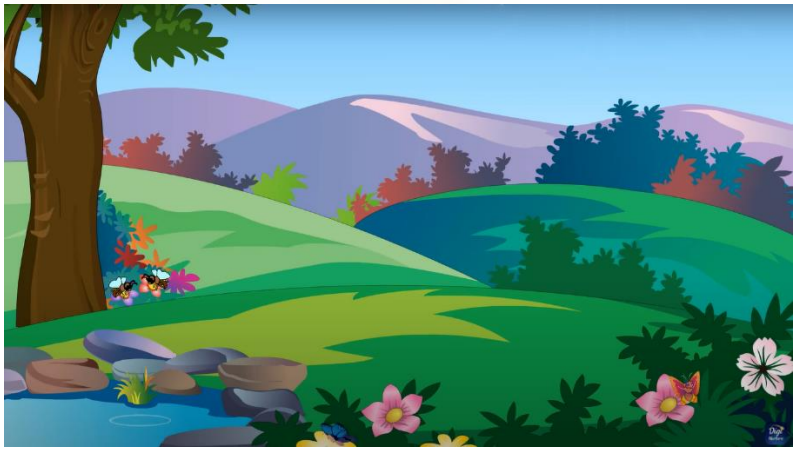

मनमोहक वसंत आया है
फूल खिले हैं उपवन–उपवन.

नवल प्रकृति की सुषमा न्यारी
महक रही है क्यारी-क्यारी

बीत गई है ऋतु पतझड़ की
बजे हवा की पायल छन-छन.

अमराई में कोकिल बोले
कानों में मधुरस-सा घोले

रंग-बिरंगी उड़ें तितलियाँ
चंचल भौंरे करते गायन.

नन्हीं कलियों-सा मुस्काएँ
सदा सुहाने स्वप्न सजाएँ

जाग उठी हैं नयी उमंगें
मुदित हुआ आशामय जीवन.

*****

नव जीवन प्रभात

रचनाकार- देवप्रसाद पात्रे

नाकामी की पीड़ा, दे दो मुझे हर आघात.
बदले में मैं दे दूं, तुम्हें नव जीवन प्रभात.

जब हो घनघोर अंधेरा, न हो कोई आश.
दे दो अपनी तकलीफें, न हो कोई हताश.

जब छाए हो गम के बादल, मन में तेरे डर हो,
असफलता और निराशा का, मन में तेरे घर हो.

हृदय में बसा हूँ मैं, साहस तेरा हौसला,
निकाल मुझे बाहर कर, है ये तेरा फैसला.

जब हो अंधेरी रात, हो धुंधली आकाश.
न उम्मीदें जीत की, जब हार हो तेरे पास.

तिरस्कार का पीड़ा, दे दो मुझे हर आघात.
बदले में मैं दे दूँ, तुम्हे नव जीवन प्रभात.

*****

होली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

हर्षोल्लास लुटाने आया
होली का त्योहार निराला.

मस्ती और उमंग में डूबे
बच्चे भरते हैं किलकारी
बना टोलियाँ दौड़ रहे हैं
रंग भरी लेकर पिचकारी

घोला रंग बाल्टियों में है
हरा, गुलाबी, पीला काला.

छिप करके, छत के ऊपर से
फेंकें रंगभरा गुब्बारा
बंदर लगते बंटी - शंटी
मुँह पर रंग न चढ़े दोबारा

वार्निश, पेंट हानिकारक हैं
अशिष्टता यदि कीचड़ डाला.

एक - दूसरे के घर जाकर
मजे से गुझिया, बताना खाते
आपस के सब भेद भुलाकर
सबको प्रेम से गले लगाते

अमराई में कोकिल का स्वर
बना रहा मन को मतवाला.

चिंताओं और न उलझें
हँसने - गाने की बारी है
नई ऊर्जा, नई लगन से
नए लक्ष्य की तैयारी है

फागुन की आहट पा करके
शीत जप रही उल्टी माला.
होली का त्योहार निराला.

*****

होली है

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

पिच पिच करे पिचकारी.
वाह ! दिखती बड़ी न्यारी.
रंगों वाला खूब पीती पानी.
बच्चों को है उसे लुभानी.

देखो नभ में उड़ता गुलाल.
हरा पीला नीला लाल.
हर बच्चे पर लगता जाए.
मेल-मिलाप बनता जाए.

आज खुशियाँ छाई चहुँओर.
बच्चे नाचते-गाते करे शोर.
गली-गली में उनकी टोली है.
होली है.. भाई होली है.

*****

होली आई

रचनाकार- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

आसमान में लाली छाई,
रंग - बिरंगी होली आई.

बच्चों में उत्साह जगा न्यारा,
आया - आया त्यौहार प्यारा.

चुन्नू - मुन्नू रंग घोल रहे,
धन्नू-पुन्नू गुलाल उड़ा रहे.

बज रहे झांझ, मंजीरे, ढोल,
पकवानों का कोई न मोल.

सब कर रहे हंसी - ठिठोली,
आई रे आई रंग-रंगीली होली.

सबके कपड़े हो गये नीले-पीले,
पुराने बैर- भाव सब जन भूले.

मौसम बना बहुत सुखदायी,
रंग - बिरंगी होली आई.

*****

हिन्दी स्वर कविता पाठ

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

अ- से अंगूर खूब खाएंगे.
मीठे रस का मजा पायेंगे.

आ- से आम सबके मन को भाये.
गर्मी के दिनों मे चूस-चूस के खाये.

इ- से इमली सबके मन को भाती है.
देखकर ही इसको लार टपक जाती है.

ई- से ईख की मिठास अति मन भाये.
रस से गुड़ और शक्कर भी बन जाये.

उ- से उल्लू बैठा अँधेरी रात मे.
आँखे है तेज, उसे दिखे रात मे.

ऊ- से ऊन सबकी ठंडी दूर भगाती है.
ऊन से स्वेटर और मोज़े भी बन जाती है.

ए- से एडी सम्पूर्ण शरीर का बोझ उठाती है.
सभी अंग है महत्व के,इसका बोध कराती है.

ऐ- से ऐनक आँखों की शोभा सदा बढ़ाती है.
नेत्र कमजोर होने पर, नेत्र ज्योति बन जाती है.

ओ- से ओज, ओजस्वी बनना सीखलाती है.
कैसी भी स्थिति मिलकर चलना सीखलाती है.

औ- से औरत ही घर को घर बनाती है.
माँ बनकर बच्चों पर खूब प्रेम लुटाती है.

ऋ- से ऋषि संस्कृति का बोध कराती है.
गौरवशाली भारत का दर्शन कराती है.

*****

हम सब बनेंगे रेल

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

आओ खेले खेल,
हम सब बनेंगे रेल.
पहले इंजन वाला डिब्बा,
बाकी बनेंगे पैसेंजर.
आराम से चढ़ना,
करना नहीं रेलम पेल,
आओ खेले खेल,
हम सब बनेंगे रेल.

इंजन अब चालू,आगे डिब्बा भागा,
बाकी डिब्बे पीछे-पीछे भागे.
बबलू,डबलू और सपना तु भी आके खेल,
आओ खेले खेल,
हम सब बनेंगे रेल.

रेलगाड़ी छुक-छुक -छुक,
रायपुर आई रुक-रुक-रुक.
जबरदस्ती खींचे ना चैन,
हो जायेगी वर्ना जेल,
आओ खेले खेल,
हम सब बनेंगे रेल.

बड़ा मजा आया खेल मे,

मिलकर बने इस रेल में.

सबके मन भाया रेल वाला खेल,

आओ खेले खेल,

हम सब बनेंगे रेल.

*****

बसंत से सीखे

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

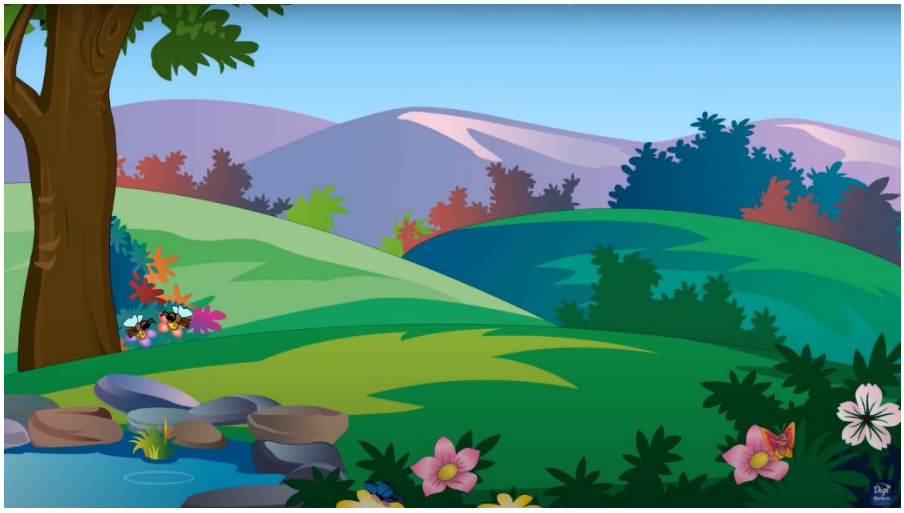

बसंत का आगमन मन मे उमंग भर रहा है.
पलाश के फूल भी सबसे कुछ कह रहा है.

सरसो का फूल भी मस्ती मे लहलहा रहा है.
हर भोर अब बसंत के मधुर गीत गा रहा है.

कोयल की कुक मन को गुदगुदा रही है.
बसंती बयार मधुबन को महका रही है.

पलाश के फूल भी कृष्ण रंग मे, डूबने को आतुर है.
बाग भी नव कोपलो और बाहर के लिए तैयार है.

पतझड़ के बाद प्रकृति भी रूप बदलने को तैयार है.
चंद दिनों मे आने वाला रंगों की मदमस्त त्यौहार है.

प्रकृति संग हम भी बदले अपनी बुराइयाँ और कुसंग.
अच्छाई को अपना कर भर दे जीवन मे नव-नव रंग.

बसंत से सीखे प्रकृति मे नवीनतम रंग भरना.
राग, द्वेष भुलाकर जीवन को नवीनतम करना.

*****

देखौ संगी

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

देखौ संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे,
प्रीत के रंग म सबो संगी मन नहाये हे.
देखौ संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे.

जम्मो डहर ख़ुशी हे, उमंग हे, बहार हे.
देख तो संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे
प्रीत के रंग म सबो संगी मन नहाये हे.
देख तो संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे.

जम्मो डहर ख़ुशी हे, उमंग हे, बहार हे.
जुरमिल के मनावन ये सबे के तिहार हे.
अमुवा हर घलो कइसे सुग्घर बउराये हे.
देखौ संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे
प्रीत के रंग म सबो संगी मन नहाये हे.

कोनो बने कृष्ण इहा त कोनो बने हे राधा.
राधा कृष्णा,कृष्णा राधा बिना होली हे आधा.
कृष्णा रंग म रंगे बर मोरो मन हर भाये हे.
देखौ संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे
प्रीत के रंग म सबो संगी मन नहाये हे.

कोनो ला संगी कोनो के संग मिले के आस हे.
तब कोनो ला अपन कोनो संगी के तलाश हे.
होली खेले बर संगी संग,सबके मन गुदगुदाए हे.
देखौ संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे
प्रीत के रंग म सबो संगी मन नहाये हे.

मया-प्रीत के रंग मा खेलव सबझन होली.
नवरंग के जीवन म अपन बगराओ रंगोली.
नवा रंग ले,नवा ढंग ले प्रीत घलो खेले बर आये से.
देखौ संगी कतेक सुघ्घर फागुन आये हे
प्रीत के रंग म सबो संगी मन नहाये हे.

*****

नवजीवन को आगाज़ दे

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी

चलो आज फिर से नवजीवन को आगाज़ दे,
सुर को सरगम,पंछियो को नव आकाश दे.
जीवन को मधुरतम कर दे ऐसे सुर साज दे,
चलो आज फिर से नवजीवन को आगाज़ दे.

जन-जन मे देश प्रेम की भाव दिखे,
बदला फिंजा, बदला सा स्वभाव दिखे.
सारे जंहा मे हिंदूस्ता का प्रभाव भर दे,
चलो आज फिर से नवजीवन को आगाज़ दे.

नई सुबह नई महक चमन की,
देती हो सन्देश सदा अमन की.
गुल की कलीयो मे कौमी एकता का सुवास दे,
चलो एक फिर से नवजीवन को आगाज़ दे.

हम बदलेंगे,जग बदलेगा,
हम सुधरेंगे,जग सुधरेगा.
जन-जन तक बदलाव का पैगाम दे,
चलो आज फिर से नवजीवन को आगाज़ दे.

*****

रंग बिरंगी आई तितली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

रंग बिरंगी आई तितली,
सबके मन को भायी तितली.

बच्चे उसे पकड़ने दौड़े,
लेकिन हाथ न आई तितली.

फूल फूल से बातें करती,
कली देख इठलाती तितली.

शहरों में अब नजर न आती,
लगता हुई पराई तितली.

काटों में जब फंस जाती है,
चाहे तुरत रिहाई तितली.

बगिया की है राज कुमारी,
खुशियों की शहनाई तितली.

*****

सरस्वती वंदना

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

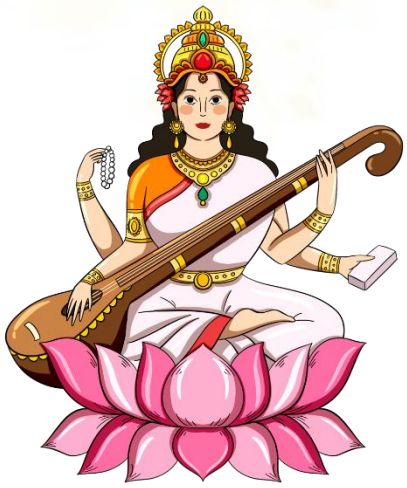

जय जयति वीणा वादिनी. जय श्री शारदा ज्ञान प्रदायिनी.
विद्या की देवी काव्य प्रतिभा. वीणा की देवी भारतीय माता.
गंभीर विचार कवित्व शक्ति. श्वेत कमल वासनी हिंदू देवी.
आदिशक्ति के तेज श्वेत सूरत. दिव्य वनिता प्रादुर्भाव मूरत.

चतुर्भुजी स्वरूपा सन्ध्येश्वरी. कलित कामिनी वाक्येश्वरी.
पाणि में धारण किए उजाला. वीणा,वर मुद्रा,पुस्तक,माला.
देवी वीणा का मधुरनाद किया. लौकिक जीवों को वाणी दिया.
जल प्रवाह में कोलाहल व्याप्त. पवन प्रस्थान सरसराहट प्राप्त.

हे!भाषा देवी वाणी की अधिष्ठात्री. शब्द और रस संचारिणी सरस्वती.
चतुर्मुख विधाता की शक्ति वामा. बुद्धि और संगीत की देवी नामा.
प्रसन्न हो श्री कृष्ण ने दिया वरदान. बसंत पंचमी को आराधना एवं मान.
कवि अशोक तेरी चरणों में शीश नवाए. जन्मदिवस में देवी की जयगीत गाए.

मेरे कंठ में विराजमान हो भगवती. बनकर कविराज उतारूं तेरी आरती.
जन-जन के मन में चेतना जागृत करके. नई दिशा दिखाऊं दिल में उमंग भरके.
युग बदलेंगे, बदलेंगे लोगों के विचार. धीरे-धीरे परिवर्तन का होगा संचार.
मां मुझे सहस्त्रों ज्ञान का वरदान दो. चलूं नेक रास्ते पर हमेशा अरमान दो.

बीते सबका जीवन आनंद और मंगल से. सुख में संगीत हो, खुश में हो आनंद से.
स्तुति करूं कविता लिखने से पहले. जयघोष नाद हो ईश्वरी नाम पुकार ले.
भूमंडल के नागरिकों को सभ्य करो. संस्कृति आचार-विचार हृदय में धरो.
आ जाए जीवन में हमारे बसंत बहार. हरियाली ही हरियाली हो सारे संसार.

*****

हरषाई होली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा

ख़ुशी तराने लाई होली,
मस्ती में इठलाई होली.

सबके मुखड़ों पर मुस्काने,
देख देख हरषाई होली.

हरे गुलाबी नीले पीले,
रंग फुहारें लाई होली.

नकली रंगों से जो खेले,
उन्हें देख झल्लाई होली.

हुरियारों का नृत्य देख के,
मस्ती में मुस्काई होली.

सबके दिल में प्रेम जगाने,
लाई ख़ुशी गुलालें होली.

*****

वो सर्दी की रातें

रचनाकार- अलका राठौर

कहाँ गयी वो सर्दी की रातें,
थरथराते होठों, की कितनी बातें.

कांपते बदन पर, लपेटे निपाह.
शाम ही कर देता, सर्द रात से आगाह.

अलाव जलाकर, वो छत मे बैठना.
बहुत याद आता, दादी तेरा डांटना.

अब सर्द रातें, सर्द कहाँ रही.
जलवायु परिवर्तन से, सर्दी मर रही.

वो सर्दी की रातें भी, क्या खूब थी.
भाई-बहन एक रजाई मे, लिपट जाते थे.

चारो के चारो, एक सपने के रॉकेट मे बैठ.
चंदा मामा से, मिल आते थे पूरी रात.

*****

बसंत

रचनाकार- अलका राठौर

लो आ गया, बसंत का मौसम.
दुखों के बस अंत का मौसम.
पीली सरसों की कांति,
वादियों मे छाने लगी है.

शतमूली सुमनों से,
धरा सजने लगी है.
नवीन कोपलों का झुंड,
मन को हरित कर रहा.

कोयल मदमस्त हो,
मिठी तान सुना रही.
निशा की शीतलता,
थोड़ी कम हो रही है.

दिन की उष्णता मे,
अभिवृद्धि हो रही है.
पलास (टेसू) के पुष्प,
प्रकृति की शोभा बढ़ा रहे.

प्रकृति का सौंदर्य,
वसुधा के आँचल में समा रहे.
छू लो बसंत को, जी लो बसंत को.
गा लो बसंत को, अनुभूत कर लो बसंत को.

*****

वंदना वीणापाणि की

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

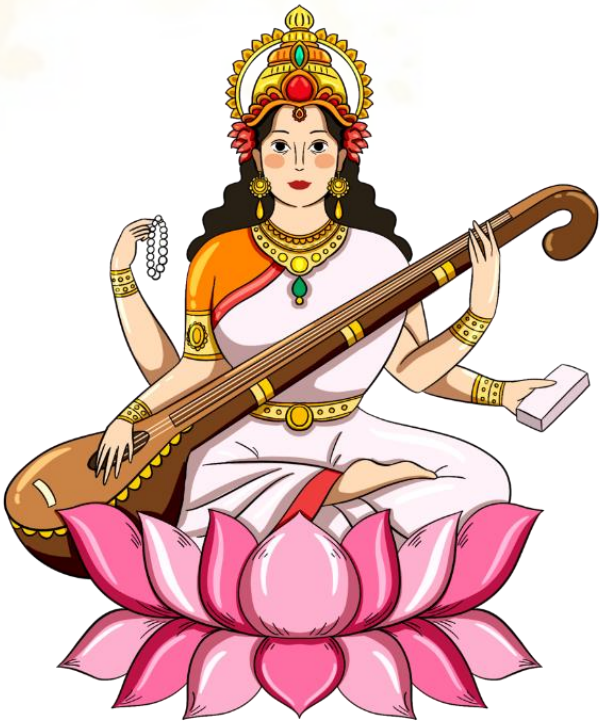

नमन है माँ वीणापाणि.
चरण में पुष्प चढ़ाता हूँ.
तिलक करता हूँ चंदन से,
तुम्हें कुमकुम लगाता हूँ.
मैं अपना शीश झुकाता हूँ.
दया कर दो वागेश्वरी.
शरण मैं तेरी आया हूँ.
नमन है माँ वीणापाणि.

हो विद्या की तुम्हीं देवी,
तुम ही ज्ञान दाता हो.
तुम्हीं संगीत की जननी,
तुम्हीं त्रिकाल ज्ञाता हो.
तुम्हारी ही कृपा से माँ.
तेरी महिमा मैं गाता हूँ.
नमन है माँ वीणापाणि.

है हाथों में स्फटिक माला,
वेद ग्रंथों को धारी हो.
विराजी श्वेत पंकज पर,
श्वेतांबर ही पधारी हो.
करे नादान नित सुमिरन.
तेरा आशीष पाता हूँ.
नमन है माँ वीणापाणि.

नमन है माँ वीणापाणि,
चरण में पुष्प चढ़ाता हूँ.

*****

मोबाइल मित्र

रचनाकार- परवीनबेबी दिवाकर "रवि"

दिखते इसमें तरह -तरह के चित्र,
पल भर में पढ़ाता इनको,
ज्ञान की बात सिखाता इनको,
कभी रुठ जाते बच्चे यदि तो,
क्षण भर में मनाता इनको.
चुटकीले,पहेली और कहानी,
बच्चों को सुनाता जैसे हो नानी,
रात में सुनाता लोरी गाकर,
सुबह अलार्म बजाता भी.

मोबाइल में छुपा हैं ज्ञान का खजाना,
यदि तुम ढूँढ पाओ तो कहाओगे सयाना,
मोबाइल से सीखकर, अच्छी बातें,
मम्मी -पापा, दादा-दादी, भाई -बहन सबको बताना,
फिर करना नहीं कोई बहाना,
पढ़ना और पढ़ाना फिर,सबको अपना बनाना.

*****

ऋतुराज

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

ऋतुराज की प्रेयसी बड़ी प्रीति,
दसों दिशाओं में फैली हरियाली.
खिल उठी मंजरी डालियों में,
खुशबू बिखेर रही है निराली.

शीतलहर दुबक कर सो गया सेज,
नैसर्गिक पावन गोद हरित.
श्वेत हिम से ढँका विशाल शिखर,
धरा में प्रवाहित किया जीवन अमृत.

काँप उठा नदियों का जल उत्तप्त,
सिहर गए प्राणियों के तन-बदन.
घूंघट उठा कर देख रही चिड़िया,
चीं-चीं जीवन गीत गा रहा सदन.

खेत सजे हैं दुल्हन के जैसे,
पहने हरे रंग की दिव्य साड़ी.
बदन में सुशोभित रंगीन कुसुम,
खुशबू बिखेर रही कोला-बाड़ी.

सरसों पतली कमर वाली सुंदरी,
हवा में नाच रही झूम-झूम कर.
चना बना है सुंदर महा अभिनेता,
बातें कर रहा धरा चूम-चूम कर.

हरिद्राभ वसन धारण किए बसंत,
चला आ रहा है वसुंधरा की ओर.
प्रकृति का कण-कण खिल उठा,
नयी उमंग तरंग से होती भोर.

उल्लासित हैं नर-नारी मुग्ध होकर,
आश्चर्य से देख रहे हैं मनोरम दृश्य.
पशु-पक्षी वेग से दौड़े सुधी खोकर,
स्वर्ग से सुंदर है लौकिक परिदृश्य.

सोने की चमक बिखेरेगा नव कुसुम,
पतझड़ के बाद होगा तरु पल्लवन.
जीर्ण-शीर्ण का होगा फिर पुनरोद्धार,
काया और माया से मिलेगा जीवन.

आम्र डालियों में मंजरी चमकदार,
रंग-बिरंगी तितलियाँ मंडराने लगतीं.
भर-भर भंवरों की गुंजायमान ध्वनियाँ,
आओ प्रकृति की गोद चिड़िया कहती.

नयी चेतना जागृत होगी मानव में,
कविराज करेंगे माँ शारदे की पूजा.
धूप,अगरबत्ती,फल,माला से वंदना,
विद्या की देवी ज्ञान देगी समूचा.

*****

सरस्वती वंदना

रचनाकार- अशोक कुमार यादव

जय जयति वीणा वादिनी,
जय श्री शारदा ज्ञान प्रदायिनी.
विद्या की देवी काव्य प्रतिभा,
वीणा की देवी भारती माता.

गंभीर विचार कवित्व शक्ति,
श्वेत कमलवसना महा देवी.
आदिशक्ति के तेज श्वेत सूरत,
दिव्य वनिता प्रादुर्भाव मूरत.

चतुर्भुजी स्वरूपा सन्ध्येश्वरी,
कलित कामिनी वाक्येश्वरी.
पाणि में धारण किए उजाला,
वीणा वरमुद्रा पुस्तक माला.

देवी वीणा का मधुरनाद किया,
लौकिक जीवों को स्वर प्राण दिया.
जल प्रवाह में कोलाहल व्याप्त,
पवन प्रस्थान सरसराहट प्राप्त.

हे!भाषा देवी वाणी की अधिष्ठात्री,
शब्द और रस संचारिणी सरस्वती.
चतुर्मुख विधाता की शक्ति वामा,
बुद्धि और संगीत की देवी नामा.

प्रसन्न हो श्री कृष्ण ने दिया वरदान,
वसंत पंचमी को आराधना एवं मान.
कवि अशोक तेरे चरणों में शीश नवाए,
जन्मदिवस में देवी का जयगीत गाए.

मेरे कंठ में विराजमान हो भगवती,
बनकर कविराज उतारूँ तेरी आरती.
जन-जन के मन में चेतना जागृत करके,
नई दिशा दिखाऊँ दिल में उमंग भरके.

युग बदलेंगे, बदलेंगे लोगों के विचार,
धीरे-धीरे परिवर्तन का होगा संचार.
माँ मुझे सहस्त्र ज्ञान का वरदान दो,
चलूँ सत्य पथ पर सदा यह ज्ञान दो.

बीते सबका जीवन आनंद और मंगल से,
सुख में संगीत हो, उल्लास हो आनंद से.
स्तुति करूँ कविता लिखने से पहले,
जयघोष नाद हो ईश्वरी नाम पुकार ले.

भूमंडल के सर्व-जन को सभ्य करो,
संस्कृति आचार-विचार हृदय में धरो.
आ जाए जीवन में हमारे बसंत- बहार,
हरितिमा से युक्त हो सारा संसार.

*****

आये देखो सुंदर पलाश

रचनाकार- महेन्द्र साहू"खलारीवाला"

चिलचिलाती दुपहरी धूप ने,
जब श्वेत वसन धारण किये.
तब प्रकृति में छटा बिखेरने,
आए देखो सुंदर पलाश.

दूर मद्धम पेड़ घने हरे,
लिए लालिमा अट्टहास करे.
नवयौवन मन उल्लास भरे
जिसकी हमें थी तलाश
आए देखो सुंदर पलाश.

धरती के माथे की बिंदी
बन बहुत खूब इठलाए हैं.
देखो इनकी चमक निराली,
प्रेमी जोड़ों को खूब भाए हैं.
पूरी करने हम सबकी आस,
आए देखो सुंदर पलाश.

जैसे लाल रंग डाल,
सखी-सहेली को रिझाए हैं.
साथ मदमस्त मादकता लाये हैं.
पिचकारी में रंग भरने,
आए देखो सुंदर पलाश.

रंग लाल देख मन मतंग
देखो फागुन आया है.
विकट मौसम में भी उनको,
खुद पर है अटूट विश्वास.
आए देखो सुंदर पलाश.

*****

टेसू

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला"

दूर खार में खड़ा अकेला,
घर-आँगन के पास नहीं
कुम्हलाए, झुलसे तेरे पत्ते,
फिर भी तू उदास नहीं.

टेढ़ी - मेढ़ी तेरी काया,
तने तेरे कोई ख़ास नहीं.
आस-पास तेरे हैं वीराने,
फिर भी तू हताश नहीं.

खिलें तेरे पुष्प गुच्छों में,
लगती हो इतनी भली.
देख रवि भी शरमा जाए,
तेरे अंदर की नेक छवि.

टेसू के देख सुंदर सुमन,
ऊपर फुलगी पर बैठी कोकिला.
दोनों की सुंदरता देख-देख,
नवल-मन बहुतेरे भाए हैं.

सब तेरे रंग में इतने डूबे हैं,

सबके कुछ-न-कुछ मंसूबे हैं.
प्रेम रंग में खुद सने हुए हैं.
फिर भी तेरी कोई प्यास नहीं.

कवि महेन्द्र तेरा बखान करे,
वाणी से उनकी मोती झरे.
तेरे फूल हैं इतने चिरस्मरणीय,
तुम्हें खुद पर ही विश्वास नहीं.

*****

भिक्षुक

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

माँगे भिक्षा दान, द्वार पर सब के जाते.
दे दो मुझको दान, स्वयं झोली फैलाते.

पहने भगवा रंग, माथ में तिलक लगाते.
रख मंजीरा हाथ, भजन भगवन के गाते.

रुपया चाँवल और भोजन दे दो माई.
कृपा करेंगे आज, स्वयं मेरे रघुराई.

हम भगवन के भक्त, सभी के घर पर जाते.
करते सदा गुहार, तभी हम भोजन पाते.

लीला अजब रचाय, भीख से करे कमाई.
कैसी माया देख, बड़ी लगती दुखदाई.

सच्चे मन से लोग, दान हमें तुम देना.
प्रेम दया और ज्ञान, साथ में तुम भी लेना.

*****

नाच रहे हैं मोर

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव

ऊँची-नीची पर्वत श्रेणी, उथली-गहरी घाटी,
हरी दूब से ढँकी हुई है, काली-काली माटी,
हरे-भरे वृक्षों की आभा, लुभा रही चहुँ-ओर.

गहरी शांत झील में निर्मल, शीतल-गहरा पानी,
छोटी-बड़ी मछलियाँ करतीं, पानी में मनमानी,
पल-पल बनती और बिगड़ती जल में नई हिलोर.

इस सुरम्य निर्जन घाटी में अक्सर साँझ-सवेरे,
पा एकांत इकट्ठा होते, पशु-पक्षी बहुतेरे,
देखो तो उस ओर, मगनमन नाच रहे कुछ मोर.

*****

चंद्रमा

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

सूर्य के बाद सबसे चमकीला ग्रह,
सबसे बड़ा प्राकृतिक उपग्रह,
रात्रि को शीतलता प्रदान करता,
यह चंद्रमा, चंद्र, शशि के नाम से भी जाना जाता.

पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाता,
सूर्य के प्रकाश के परावर्तन के कारण चमकता,
पूर्व से निकलता और पश्चिम में छिपता,
आधा हिस्सा ही इसका पृथ्वी से दिखता.

सभी को लुभाती इसकी खूबसूरती,
इसके कारण समुद्र की लहरें उठती,
वैसे तो दिखता है यह, चमकीला और सफेद,
पर हैं ना जाने कितने गड्ढे और उसके भेद.

इसके पीछे हैं बहुत सारे रहस्य,
जिज्ञासा से भरा हुआ इसका भविष्य,
इसके गुरुत्वाकर्षण बल से,
पृथ्वी पर ज्वार-भाटा पैदा होते.

*****

यही कुछ फर्क है!

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

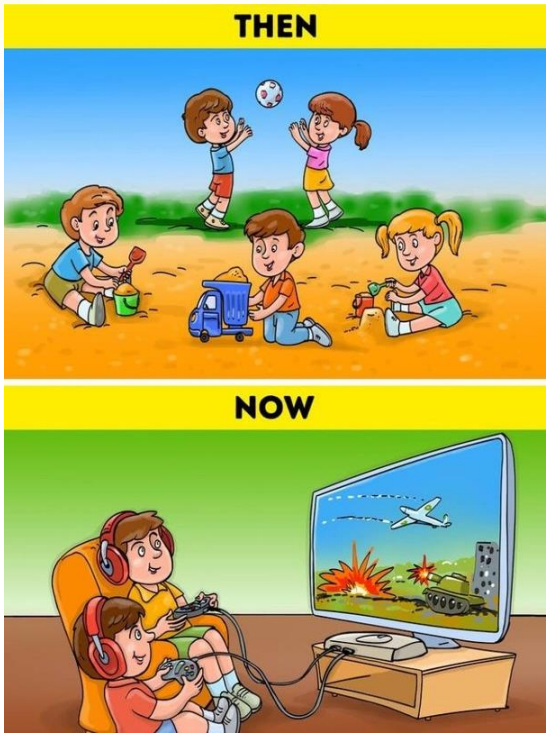

जब नहीं था हमारे पास अलार्म,
स्वयं से याद रखते थे सारे काम,
ना था मोबाइल फोन और व्हाट्सएप,
मिलते थे अपनों से सुबह-शाम.

अनजानों से हालचाल पूछते हैं फेसबुक पर,
नहीं पता क्या हो रहा है स्वयं के घर,
अपनों के लिए बिल्कुल समय नहीं,
नई पीढ़ी में आया कैसा असर.

बारिश की बूंदें और ठंडी हवा को छोड़,
ना सूरज की किरणें ना ही भागदौड़,
प्रकृति को महसूस करने की क्षमता हो गई कम,
यह जीवन का है कौन सा मोड़.

गर्मी में ए सी, ठंड में हीटर,
गर्मी में फ्रिज तो ठंड में गीजर,
शारीरिक शक्ति हो गई कम,
ना चल पाए हम दो-चार किलोमीटर!

देखें पूरी दुनिया को यूट्यूब मैं,
पढ़ाई करें मोबाइल के ई-बुक में,
आंखों में कमजोरी, सर्वाइकल और डिप्रेशन,
शरीर से नहीं ताकतवर पर दिमाग खूब है.

मानसिक रूप से लेते जाए ज्ञान,
पर भूलो ना, शरीर का रखना ध्यान,
जीवन में लेकर आए संतुलन,
ना होते जाओ, सत्य से अनजान.

*****

जंगल का राजा

रचनाकार- देवप्रसाद पात्रे

एक था जंगल का राजा,
एक दिन लेकर आया बाजा,

डम-डम बजा के बाजा,
सबको कहता आजा-आजा,

छम-छम करती लोमड़ी आई.
मटक कर नाची और ज़रा इतराई,

बिल्ली मौसी पहन के झुमका,
नाच दिखाया लगा कर ठुमका.

हिरनी रानी बड़ी सयानी,
जा रही थी पीने पानी.

बोला उसे जंगल का राजा,
हिरनी रानी तू भी आजा.

लगा नहीं है कोई पहरा,
ना ही तेरी जान को खतरा.

उछल कूद कर हिरनी आई,
डम-डम में फिर तान मिलाई.

झूमते-झूमते भालू आया,
लम्बे-लम्बे बाल हिलाया.

ऐसा था जंगल का राजा,
सबको नचाया बजाया बाजा.

*****

रंग पहचान

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

लाल चूड़ी पीली साड़ी,
हरियर मोर कोला-बारी.

करिया संग म नीला धारी,
सुंदर नीलकंठ हे संगवारी.

भूरा भंवरा हर शोर मचाथे,
तितली के संग गाना गाथे.

सफेद रंग के कर चिन्हारी,
अब जान ले दुनियादारी.

भाटा हावय बैगनी रंग,
जामुनी जान एकर संग.

नारंगी के कर पहचान,
जान डरे सब रंग के नाम.

*****

होली

रचनाकार- कलेश्वर शत्रुहन साहू

आगे होली हमर संगवारी,
रंग भरव अपन पिचकारी.
उड़ाबो जी मया के गुलाल,
संगवारी मन हो जाही लाल.

सब्बो धरम मिलके मनाबो,
जाति-पाती भेद ल मिटाबो.
आगे होली हमर संगवारी,
रंग भरव अपन पिचकारी.

*****

संगीत की लता

रचनाकार- तुषार शर्मा "नादान"

ल से लय और ता से तान,
सुर साम्राज्ञी थी वो महान.
लता में ही तो ताल छुपा है,
संगीत ही थी जिनकी पहचान.

कोकिल कंठी स्वरधारी थी,
बातें करती प्यारी थी.
अनुशासन में जीवन बीता,
सीधी सादी, संस्कारी थी.

साया उठा सिर से पिता का,
सब दायित्व स्वयं निभाई.
बनकर पालक ध्यान थी रखती,
दुःखी न हों बहन और भाई.

कठिन साधना से सुर साधा,
जग में अमिट छवि बनाई.
धन्य बेटी माँ सरस्वती की,
कठिन रागिनी भी सहज ही गाई.

सच में रत्न थीं वो भारत का,
जगह न कोई ले पाएगा.
जब तक दुनिया का अस्तित्व है,
गीतों को इनके जग गाएगा.

*****

तनु की कुछ शर्तें

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

इस बार ओड़गाँव, गाँधीपारा के बच्चों को होली का बेसब्री से इंतजार था. कोई खूब रंग-गुलाल खेलने की सोच रहा था, कोई पिचकारी चलाने की, कोई ढोल-नगाड़े बजाने व नाचने-गाने की. सभी ने रंग-गुलाल व पिचकारी भी खरीद लिये थे. किसी की पिचकारी बोतलनुमा, किसी की पिचकारी चिड़िया जैसी, तो किसी की बिलकुल बन्दूक जैसी. सब खुश थे. सबने एक जगह इकट्ठे होकर रंग-गुलाल खेलने का मन बना लिया था.

होली का दिन आया,तनु अपनी मम्मी के साथ घर के कामों में व्यस्त थी. उसका होम-वर्क पूरा हो गया था. कक्षा दसवीं की छात्रा तनु अपनी पढ़ाई के प्रति बहुत सतर्क थी. कोरोना काल में भी पढ़ाई का महत्व वह अच्छी तरह समझती थी, वह अपनी ऑनलाइन क्लास कभी मिस नहीं करती. अगर घर में नेटवर्क प्रॉब्लम होती, तो वह खेत की ओर या मैदान में चली जाती; और क्लास अटैंड करती थी. पढ़ाई के प्रति उसकी लगन देख उसके माता-पिता व शिक्षक खुश थे.

इस बार होली में तनु का अपनी सहेलियों के साथ रंग-गुलाल खेलने व पिचकारी चलाने का मन नहीं था. वह पिछले साल का होली-हुड़दंग नहीं भूली थी. उसने ठान लिया था कि आज वह घर से बाहर नहीं निकलेगी. दस-ग्यारह बजे तक वह किचन में अपनी मम्मी के साथ काम करती रही. फिर खाना खाकर ड्राइंग रूम में पुस्तक पढ़ने लगी. पढ़ते-पढ़ते उसे नींद आ गयी. पंद्रह-बीस मिनट ही हुए होंगे कि उसकी सहेलियाँ रंग-गुलाल लिए आ गई. कमरे में घुसते ही शिखा कहने लगी- "क्यों तनु, तू सोयी है.आज सोने का दिन है. अरी आज तो होली है. नहीं पता क्या ? चल उठ. बाहर चल. मजा आएगा."

तनु चौंक गयी. बोली- "पहले तुम सब बैठो. वाह ! तुम सब तो बड़े खुश लग रहे हो. क्या बात है. क्या इस बार कुछ अलग ही ढंग से होली मना रहे हो ?"

"हाँ बिल्कुल ! तुम भी हमारे साथ चलोगी, तभी मजा आएगा तनु." नीतू सोफे पर बैठते हुए बोली. मनु बोला- "तनु दीदी, देखो. मेरी पिचकारी कितनी सुंदर है. यह एक चिड़िया लग रही है."

"हाँ मनु ! बहुत अच्छी है तुम्हारी पिचकारी." तनु ने मनु को अपने पास बिठा लिया.

"तनु दीदी." मैंने अपने दोनों जेब में गुलाल रखा है; लाल और हरा दोनों. मैं तो आप पर जरूर लगाऊँगा दीदी." ओमू ने हँसते हुए कहा.

"नहीं भाई, रुको-रुको. तनु अपनी हथेलियों से चेहरा ढँकते हुए बोली.

तनु की माँ एक बड़ी सी प्लेट में ठेठरी, खुरमी, पुड़ी, बड़ा, गुजिया ले आयी. बोली- "चलो पहले इन्हें खा लो; फिर जाना खेलने बाहर."

बच्चों ने तनु की माँ के माथे पर गुलाल लगाया और पैर छुए. सबने पकवान खाए. फिर शिखा बोली- "चल तनु बाहर रंग-गुलाल खेलेंगे."

"दीदी, चलो न." बिट्टू बोला.

"नहीं. नहीं. बिट्टू, मेरा मन नहीं है. मैं नहीं जाऊँगी."

"तुम नहीं जाओगी, तो कैसे चलेगा?" ओमू बोला.

"नहीं-नहीं मैं नहीं जाऊँगी." तभी शिखा ने उसका हाथ पकड़ लिया. बोली- "क्यों, हमारे साथ रंग-गुलाल खेलना तुम्हें अच्छा नहीं लगेगा? हम सब अच्छे नहीं हैं तनु ?"

सभी बच्चे तनु से प्रश्न करने लगे कि आखिर हमारे साथ खेलने बाहर क्यों नहीं जाएगी. कुछ देर तनु चुप रही. फिर बोली- "नीतू, खुशी, शिखा! मैं जाऊँगी तुम सब के साथ पर मेरी कुछ शर्तें हैं."

"क्या शर्तें हैं दीदी?" ओमू और बिट्टू बोले.

"बाहर रंग खेलते समय कोई किसी को अपशब्द नहीं बोलेगा." तनु "किसी के ऊपर कोई सादा या गर्म पानी नहीं डालेगा; और कोई, किसी के चेहरे या शरीर पर कोयला, कीचड़, तेल, पेंट, ग्रीस आदि नहीं लगाएगा. बोलो, क्या तुम्हें मेरी शर्तें मंजूर है ?" शिखा बोली- "हाँ तनु, ठीक है. तुम सही कह रही हो. ऐसा कुछ नहीं होगा."

"हाँ-हाँ,दीदी! आप जैसा चाहोगी, वैसा ही होगा, अब चलो बाहर." सभी ने हाँ में हाँ मिलाई. तनु मान गयी. बच्चे खुशी से झूम उठे- "होली है भई,होली है."

*****

स्वर की देवी

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

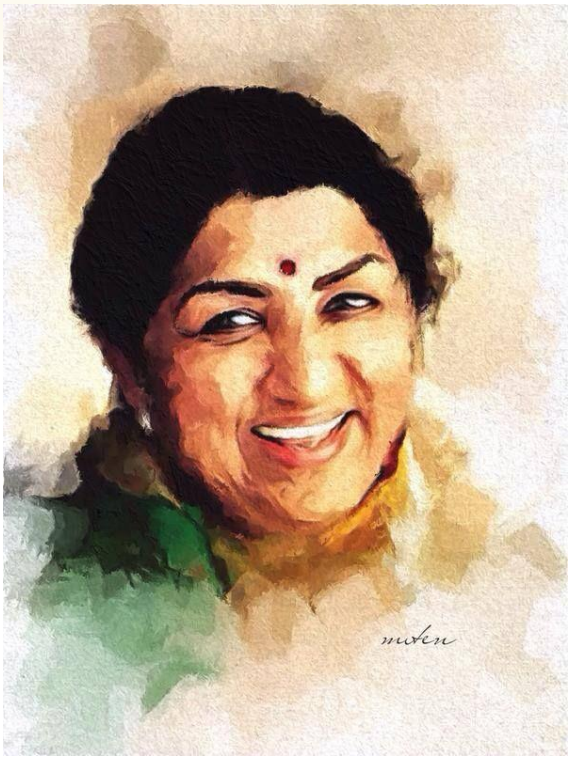

स्वर की देवी कोकिला, मीठी सी आवाज.
सात सुरों के ताल से, पहनी सुर का ताज.
पहनी सुर का ताज, लता जी जग में छायी.
मधुरस घोली जन-जन में वे मन हर्षायी.
गीत सभी को प्यारे लगते, सुनते हर घर.
भारत बेटी जग में आयी लेकर मीठे स्वर.

जन-जन के दिल में रही और बनायी नाम.
हम सब को वह छोड़ कर, चली परमधाम.
चली परमधाम, यहाँ सब नीर बहाए.
देख चेहरा, याद लता जी की जब आए.
समाचार ये सुनकर साथी, दहला तन-मन.
स्वर की देवी छोड़ चली, अब अपना जीवन.

*****

हमर गांव के मड़ई मेला

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

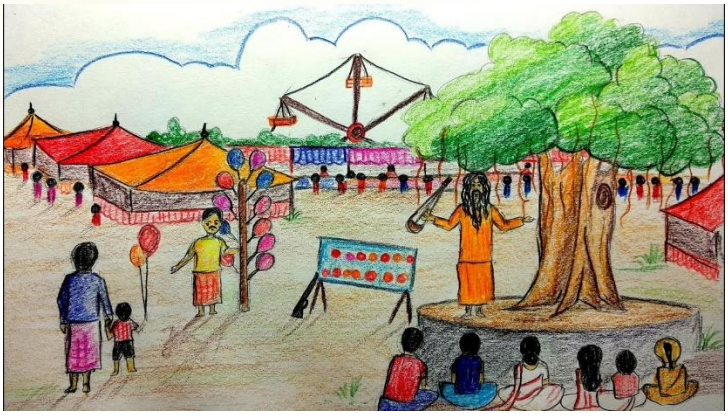

मड़ई- मेला सुग्घर लागथे
दुख हमर ला जम्मो बिसराथे
दीदी बहिनी हाँसत आथे
जिनगी सुग्घर गीत सुनाथे

सगा पहुना घर घर आथे
गांव- गली तिहार कस लागथे
संगी संगवारी मन हर आथे
मया पिरीत के गोठ गोठियाथे.

नवा कपड़ा-लत्ता पहिर के
मड़ई- मेला घूमे ला जाथे
खोवा जलेबी रसगुल्ला खाके
मेला के जी मजा उड़ाथे.

खेल-खेलौना जम्मो लाथे
झूला झूल के बड़ भजा पाथे
दाई बहिनी मन मड़ई- मेला ले
झोला भर साग भाजी लाथे

नोनी बर पुतरा - पुतरी बिसाथे
बाबू बर फुग्गा तुतरु लाथे
गोड़ बर पनही नाक बर नथनी
चूरी-बिंदी, सिंदूर बिसाथे

लइका,सियान,बुढ़वा,जवान
मेला -मड़ई म मजा पाथे
नाचा-गम्मत खेल-कूद म
जिनगी के जम्मो सुख ल पाथे.

*****

बेटियाँ है वरदान ईश्वर का

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

अश्क बहाया करते थे बेटियों के जन्म लेने से,
माँ भी सहमी रहती थी बेटियों को जन्म देने से.

बेटियों को बदनसीब,बेटों को नसीब समझते थे.
बीत गया वो दौर जो बेटों की चाहत रखते थे.

बेटियाँ अब कमजोर नहीं बेटों के संग चलती हैं,
बेटा-बेटी दोनों समान इनका अनुसरण करते हैं.

बेटियाँ हैं वरदान ईश्वर का,देवी से वे कम नहीं,
लाख मुसीबत सहकर भी,होती आँखें नम नहीं.

सफलता के शिखर पर बेटियाँ परचम लहराती हैं,
ऊँचे पर्वतों को लांघकर बेटियाँ तिरंगा फहराती हैं.

देश की रक्षा करने बेटियाँ, दुश्मन से टकराती हैं,
मातृभूमि की रक्षा करते तिरंगे पर लिपट जाती हैं.

बेटियों ने बदल दिए रीति-रिवाज हिंदुस्तान के,
बाप की अर्थी को कंधा देतीं बेटियाँ हिंदुस्तान की.

गर्व है इन बेटियों पर जो कंधा मिलाकर चलती हैं,
अपने जिस्म-ओ-जान की खुद हिफाजत करती हैं.

*****

आओ मिलकर उन्हें करें नमन

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

आओ मिलकर उन्हें करें नमन
जिनके लिए सब कुछ है वतन.

देश की रक्षा के लिए जिन्होंने
निछावर कर दिया तन और मन.

घर से दूर वतन के लिए लड़ते
मुश्किलों से लड़कर आगे बढ़ते.

देकर दुश्मनों को जंग में मात
भारत माँ की हिफाजत करते.

आओ मिलकर उन्हें करें नमन
जिनके लिए सब कुछ है वतन.

सरहद में दुश्मन से टक्कर लेते
तिरंगे को कभी झुकने न देते.

ठंडी,गर्मी और बरसात को सहते
ईंट का जवाब, पत्थर से देते.

दुश्मनों की गोली सीने में खाकर
अपने वतन को महफूज रखते हैं.

आओ मिलकर उन्हें करें नमन
जो देश के लिए कुछ करते हैं.

*****

दाई ददा के राखव मान

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू

दाई ददा हमर देवी देवता एखर राखव मान जी
जनम देवइया दाई ददा के झन करव अपमान जी.

झन जा तेहर मथुरा कासी कहना ला ओकर मान जी,
जतन कर ले दाई ददा के इही मन हरे भगवान जी.

बुढ़त काल म दाई ददा के संग ला काबर छोड़थो जी,
पाल-पोस के बड़े करइया संग काबर झगड़थो लड़थो जी.

दाई ददा हर अपन जिनगी के अनुभव घलो बताथे जी,
झूठ-लबारी ल छोड़ के सच के मारग देखाथे जी.

दाई दादा के सब जतन करलव सबके पारी आही जी,
जतन करहु ता जतन करही नहीं त ठेंगा देखाई जी,

दाई दादा के नाम ले घर के होथे तुम्हर पहचान जी,
दाई दादा बिन घर हर लागथे जइसे मरघट समसान जी.

*****

मेरी शाला

रचनाकार- सीमा यादव

मेरी शाला सबसे प्यारी है,
जो सबसे अनोखी- निराली है.

कक्षा के कोने -कोने में,
मिलता है सत्य का ज्ञान.

मन के सारे कठिन सवालों का,
हो जाता है क्षण भर में निदान.

ऐसी महिमा है मेरी शाला की,
अज्ञानी भी बन जाता है पंडित.

लगन से अभ्यास करके सीखते हैं,
देश -दुनिया की सभी गुप्त बातें.

शील -सदाचार, संयम-त्याग की,
सीखें मिलती हैं अद्भुत अनेक.

मेरी शाला सबसे प्यारी है,
जो हमें अनेक ज्ञान देती है.

*****

मेरे घर में है फुलवारी

रचनाकार- उत्कर्ष चन्द्राकर

मेरे भी घर में है फुलवारी,
जहाँ बनी हैं, सुंदर क्यारी.

जिसमें हरी-भरी लगी है घास,
ममता का देती अहसास.

विविध रंग के फूल खिले हैं,
लाल-गुलाबी, नीले-पीले हैं.

इन सबकी मोहक मुस्कान,
तन-मन को करता गतिमान.

नित रखता हूँ मैं निगरानी,
हर पौधे को देता हूँ पानी.

बहुत ही प्यारी है हर झाड़ी,
मेरे भी घर में है फुलवारी.

*****

आत्मविश्वास

रचनाकार- विभा सोनी

अगर आत्मविश्वास हो इंसान में,
मरुस्थल में पेड़ उगा देता है.
पहाड़ तोड़ कर रास्ता बना देता है.
खुद की बात पर अटल रहो,
बस खुद पर विश्वास रखो.

सही रास्ते जिधर भी हो,
सभी काम धीरज से करो.
अगर आत्मविश्वास हो इंसान में,
चांद पर घर बसा सकता है.
मिट्टी को सोना बना सकता है.
हौसले को ज़िंदा रखो.

दिल में रखो उम्मीद,
कोशिश जारी रखो
हिम्मत ना हारो
खुद की बात पर अटल रहो
बस खुद पर विश्वास रखो.

*****

गाँव का मेला

रचनाकार- सीमा यादव

माघी पूर्णिमा को,
हमारे गाँव में जब मेला लगता है.
सुन्दर- सुन्दर चीजों से सजकर,
गाँव बड़ा प्यारा लगता है.

बाँसुरी वाले भैया मीठी आवाज से,
सबका मन मोह लेते हैं.
आलूचाप, भटा-भजिया, समोसा,
जलेबी की खुशबू से महकते हैं चारों कोने.
केला,अंगूर और संतरे की खुशबू,
सबके मन को हैं बहुत ललचाते.

चरखा, झूला,सर्कस को,
देखकर मन बहुत ललचाता है.
तरह -तरह के खिलौने को,
देखकर मन खिल जाता है.

गाँव का मेला देखने,
सभी रिश्ते-नाते आते हैं.
सबसे मिल -जुलकर,
आपस का प्रेम दोगुना हो जाता है.
गाँव का वह मेला,
हर बार बड़ा अच्छा लगता है.

*****

जब वह चुप है

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

जब चुप है वह इंसान,
क्यों कर रहा तू हर जगह बखान?
निंदा करना सबसे बड़ा पाप,
हर गलती को वह रहा है नाप.

निंदा करने से होती है शांति भंग,
ऐसे व्यक्तियों का ना कर संग.
स्वयं की गलतियों पर थोड़ा नजर डाल,
आलोचना में ना बीत जाए तेरा एक और साल.

किसी के पीठ पीछे कही बात,
यह है एक बड़ा विश्वासघात.
ऊपर से आप के वक्त का जाया होना,
और अपने मानसिक संतुलन का खोना.

निंदा करने वालों से जो दूर हो जाते हैं,
स्वयं को भी इसे करने से बचाते हैं.
जब वह इस दुनिया को शांति से चला रहा है,
क्यों ना हम अपनी जिंदगी में सुकून लाते.

निंदा, चुगली, आलोचना त्याग दे आज से,
जीवन में और भी महत्वपूर्ण काम- काज हैं.
खूबसूरती से जीवन को अमूल्य बनाते हैं,
हर रोज एक अच्छी आदत को अपनाते हैं.

*****

अंदाजा

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

ठहरा हुआ दरिया होता है बहुत गहरा ,
मुस्कुराहट के पीछे भी हे एक खामोश चेहरा.
किसी भी हस्ती को अंदाजे से नहीं नापना,
कभी रात है तो कभी सवेरा.

फूल खिलने के बाद ही महकता,
किसी को क्यों, कोई छोटा समझता?
किसी भी व्यक्ति को अंदाजे से नहीं नापना,
कभी कोई गिरता तो, कोई संभलता.

क्यों किसी को बेवजह ही सताता?
किसी की औकात का अंदाजा तू क्यों लगाता?
वक्त तेरा कब पलट जाए ऐ इंसान,
तूफान का अंदाजा कभी लगाया नहीं जाता.

*****

इंद्रधनुष

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा

देखो देखो इंद्रधनुष आया,
नील गगन पर छाया.
नीला हरा और बैगनी,
सबके मन को भाया.
लाल, नारंगी और पीला
सुंदर छोटा दिखाया

*****

मेरा बस्ता

रचनाकार- कुमारी सुषमा बग्गा

रंग-बिरंगा मेरा बस्ता,
लगता मुझको प्यारा बस्ता.

छोटा न्यारा मेरा बस्ता,
ज्ञान-बढ़ाता मन बहलाता.

लिखना-पढ़ना मुझको सिखाता,
रंग-बिरंगा मेरा बस्ता.

गुरुओं का संस्कार दिलाता,
दोस्तों की याद दिलाता.

रोज स्कूल जाता बस्ता,
शिशु गीत गाता चल ता.

लगता मुझको प्यारा बस्ता,
जैसे फूलों का गुलदस्ता.

छोटा न्यारा मेरा बस्ता,
लगता मुझको प्यारा बस्ता.

*****

गांव डहर जाबो

रचनाकार- अशोक कुमार पटेल

चल संगी चल ग भईया
गांव डहर जाबो,
गांव जाबो बखरी जाबो
खेत-खार जाबो.

गांव के देवाला म, गांव के चौपाला म,
चल ग संगी, बैईठक सकलाबो.

सुम्मत के मया बतराबो,
गांव म सुराज ल लाबो,
गांव ल मिल-जुर के सुरजाबो.

दलकी हे खोर गली,
चिखला हे खोर गली,
चला ग संगी रद्दा ल सुघराबो.

गाउ-गरूआ बंधाए हे,
बाहन-बइला धन्धाये हे,
चल परिया ल गउठान बनाबो.

गांव म कछार बखरी हे,
रद्दा जम्मो हर पैडग़री हे,
नवा डहर ल अब सिरजाबो.

तीर-तखार म डबरी हे,
तरिया-नरवा,सगरी हे,
बर-पीपर के बिरवा ल जगाबो.

तीर-तखार म डबरा हे,
जेमा भरे हावे कचरा हे,
घुरवा के दिन चला बहुराबो.

होए अब नवा बिहानी हे,
सब रहय अब मितानी हे,
चला सुमता के मया बगराबो.

*****

हमारी संस्कृति हमारा अस्तित्व

रचनाकार- अशोक पटेल

मानव जीवन पुरी तरह संस्कृति पर आधारित होता है. बिना सस्कृति के जीवन निर्वाह सम्भव नही है. संस्कृति किसी भी देश की पहचान होती है. वैसे तो हर देश और प्रांत की अपनी अलग-अलग संस्कृति होती है. सभी को अपनी संस्कृति से बेहद प्यार भी होता है. इसी संस्कृति से ही मानव,समाज,देश उन्नति-प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होता है और इसी से ही वह अपनी परम्पराएँ रीति-रिवाज,धर्म-आस्था-विश्वास, सामाजिक-एकता,खान-पान, रहन-सहन को अक्षुण्ण बना पाता है. इस प्रकार वह अपनी संस्कृति का पोषण कर पाता है और पुष्पित पल्लवित हो पाता है. नई पीढ़ी के लिए वह मार्गदर्शन का काम करती है और उसी मार्ग पर चल कर वह अपने आप को एक सभ्य इंसान बनाने में सफल हो पाता है. एक तरह से संस्कृति हमारी थाती है. हमारी धरोहर, हमारी पूँजी है.

हमारे देश मे नाना प्रकार के भाषा-भाषी,जाति-सम्प्रदाय,धर्म के लोग रहते हैं, जिनकी अपनी अलग-अलग परम्पराएँ हैं.अलग-अलग रीति-रिवाज,खान-पान हैं, लेकिन आपस में भाईचारा, एकता, सद्भावना भी है. यही संस्कृति उन्हें आपस मे एक सूत्र में पिरो कर रखती है.यही हमारी संस्कृति की पहचान और सबसे बड़ी विशेषता है.

बिना संस्कृति के हमारा अपना कोई अस्तित्व नहीं है. हमारी संस्कृति ही हमें मान-सम्मान, अधिकार, प्रदान करती है, हमारी पहचान बनाती है. अपनी संस्कृति अपने धर्म की सुंदर परिभाषा युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द जी ने बताई जिसको कभी भुलाया नही जा सकता. अगर किसी ने हमारी संस्कृति और धर्म को विश्व पटल में पहचान दिलायी तो वह थे स्वामी विवेकानन्द. संस्कृति का महत्व उपयोगिता किसी ने बताई तो वह थे विवेकानन्द.

अमेरिका शिकागो के धर्म सम्मेलन में जब उन्होंने 'भाइयों और बहनों" कह कर सम्बोधन शुरू किया तो सम्मेलन में आए पुरी दुनिया के लोग अवाक रह गए और जोरदार तालियों से उनका सम्मान किया.

"भाइयों और बहनों" का सम्बोधन हमारी अपनी संस्कृति थी. हमारे देश की पहचान थी. जिसको लोगों ने पहली बार सुना और मंत्रमुग्ध हो गए.

आज आधुनिकता के नाम पर लोग अपनी संस्कृति को भुला बैठे हैं. अपने धर्म को भुला बैठे हैं और पाश्चात्य संस्कृति का अंधाधुंध अनुकरण कर रहे हैं. यह हमारी मानव जाति,समाज के लिए,अपने देश के लिए खतरनाक है. हम धीरे-धीरे अपनी संस्कृति को खोते जा रहे हैं. हमारा अस्तित्व धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है. लोग जाति का नाम पर भी खिलवाड़ कर रहे हैं. धर्म परिवर्तन हो रहा है. नई पीढ़ी नशे की गिरफ्त में आकर अपने आप को बर्बाद कर रही है. हमारी भाषा हिंदी पढ़ना लिखना बोलना बंद कर दिए हैं. सादाजीवन त्याग कर उपभोक्तावादी जीवन जी रहे हैं. खान-पान,बोल-चाल,रहन-सहन, पहनावा सारी चीजें बदल गई हैं. कुल मिलाकर हम अपनी संस्कृति के साथ अन्याय और खिलवाड़ कर रहे हैं. अपनी संस्कृति का हम ह्रास कर रहे हैं. यदि समय रहते हम नहीं सुधरे तो आने वाला समय हमारे लिए खतरनाक हो सकता है. हमारा अस्तित्व ही लगभग खत्म हो जाएगा.

*****

मेरे लिए भगवान हैं

रचनाकार- लवली पटेल

मेरे मम्मी-पापा सबसे प्यारे
मेरे सपने पूरे करते हैं सारे.

मम्मी पापा जैसा कोई नही
इनके जैसा मेरा कोई नही.

जब मैं मुश्किल में होती हूँ
मैं याद उनको ही करती हूँ.

वो कभी साथ नही छोड़ते
वो नजरों में सदा ही रखते.

मेरी हर तमन्ना को पूरी करते हैं
मेरा हर पल वो साथ देते हैं.

जब जब वो साथ में रहते हैं
वो मेरे लिए वो दुआ करते हैं.

वो साथ हैं तो मै निश्चिंत हूँ
और मैं आनन्दित होती हूँ.

वो सुयोग्य बनाना चाहते हैं
यह कोशिश भी वो करते हैं.

भले ही लगते वो इंसान हैं
पर मेरे मम्मी-पापा भगवान हैं.

*****

स्वर कोकिला भारत रत्न

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

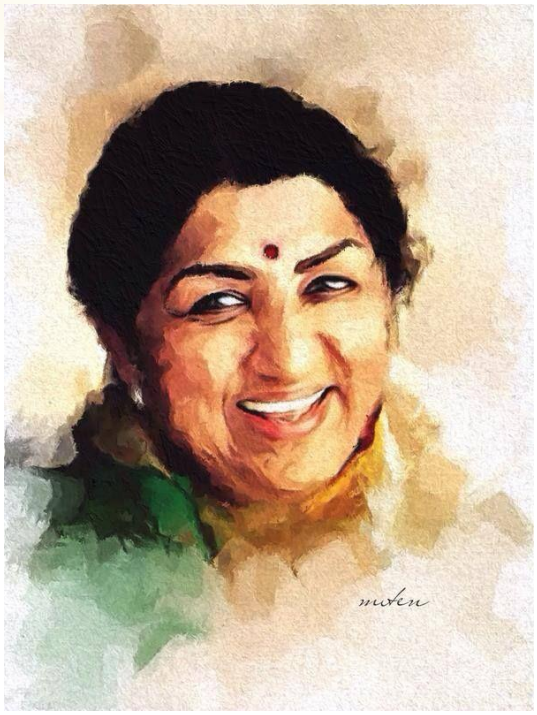

कण्ठों से जो गान निकाली
वो सरगम की झंकार बन गई,
जो कोकिला सी तान निकाली
वो लता की उदगार बन गई.

सुर को जिसने मधुर बनाया
सुरों की वह अरदास बन गई,
सुरतालों को जिसने सजाया
तरानों की सरताज बन गई.

भावों शब्दों को जिसने पिरोया
गीतों की वह झनकार बन गई,
कंठों में जो मधुर गान निकली
कोयल की मीठी तान बन गई.

संगीत को जिसने सजाया था
वो संगीत की श्रृंगार बन गई,
रागों का जिसने मान बढाया
वो ही लता मंगेशकर बन गई.

नमन है उस स्वर कोकिला को
श्रद्धांजलि है स्वर की देवी को,
आप अमर रहे आपके गीत अमर रहे
शारदे की चरणों मे स्थान रहे.

*****

व्यक्तित्त्व है व्यक्ति का आईना

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

ऐसा माना जाता है कि व्यक्तित्व ही व्यक्ति का आईना होता है. चेहरे से व्यक्ति की आदतें, स्वभाव, आचार-विचार,रहन-सहन,उसकी संस्कृति,सभ्यता,ये सारी चीजें झलकती हैं.

व्यक्ति की सुंदरता उसकी सोच आचार-विचार और चरित्र से होती है, न कि उसके बाहरी आवरण अर्थात चेहरे से.

जिस व्यक्ति का चाल-चरित्र और आचरण अच्छा होता है उसका व्यक्तित्व महान बन जाता है और यह व्यक्तित्व आईने की तरह साफ झलकता है.

व्यक्ति का व्यक्तित्व वह महान गुण है जो यूँ ही नहीं आ जाता. इसके लिए हर व्यक्ति को महापुरुषों के आदर्श, उनकी जीवनी उनके प्रेरक प्रसंग,उनके आदर्श को आत्मसात करना पड़ेगा.

उच्च आदर्शों वाले साहित्य वेद-पुराण, गीता भागवत,रामायण,उपनिषद आदि का पठन- पाठन करना पड़ेगा. उनके आदर्शों को उनके महान चरित्रों को अंगीकार करना पड़ेगा. उनके बताए गए,आदर्शों पर चलना पड़ेगा.

व्यक्ति और व्यक्तित्व दोनों अलग-अलग चीजें हैं. दोनों में बहुत अंतर है. व्यक्ति मात्र हाड़-मांस का पुतला है. जो शैशव से ही ऐसे उच्च आदर्शों को प्राप्त करने के लिए कभी आश्रमों में तो कभी पाठशाला में तो कभी उच्च विद्यापीठों में जाता है. तब कहीं जाकर वह हाड़-मांस का पुतला उच्च ज्ञान की शिक्षा और संस्कार प्राप्त कर संस्कारवान बनता है.तभी उसके व्यक्तित्व में निखार और सौंदर्य आ पाता है.

अब बात करते हैं व्यक्तित्व की. व्यक्तित्व व्यक्ति का वह स्वरूप है जो ज्ञान प्राप्त करने के बाद उसके अंदर आमूल-चूल परिवर्तन लाता है. जिसमे व्यवहारिकता,सांस्कृतिक सौंदर्य,और आध्यात्मिक गुणों का विकास होता है और वह मन- मस्तिष्क से परिपक्व हो पाता है. उसके बाहरी शरीर की सुंदरता ही

आवश्यक नहीं है. उसका अंतर्मन जरूर सुंदर हो जाता है. यही एक अच्छे व्यक्तित्व की पहचान होती है.

एक अच्छे व्यक्तित्व की पहचान उसके अच्छे गुणों से होती है.जिसमें उच्च आदर्श हों, अच्छे चरित्र वाला हो, उच्च आचरण वाला हो,मर्यादित हो,शालीन हो,नैतिकता का पालन करने वाला हो, देशप्रेम भाईचारा व स्नेह की भावना हो, संस्कारवान हो, स्वावलम्बी हो, व्यवहार कुशल हो, धार्मिक हो, सहयोग और सहानुभूति की भावना हो. यही सारी चीजें व्यक्ति को महान बनाती हैं. इन्ही सारे गुणों से व्यक्ति का व्यक्तित्व विकास हो पाता है.

*****

ज्ञान दे न दाई मोला ओ

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

ज्ञान दे न दाई मोला ओ
बुद्धि दे न दाई मोला ओ,
बिनती ल मैं करत हावाँ
आसीस ल दे न मोला ओ.

ज्ञान के तय देवइया दाई
वीणा के तय बजईया ओ,
सुर के तय सिरजइया दाई
हंस के तय ह चढइया ओ.

सरगम के बनइया दाई
सात स्वर के बनइया ओ,
संगीत के तही ह बनइया
साज के तय बजइया ओ.

अकच्छर के बनइया दाई
राग के तय ह भरइया ओ,
गीत के तय बनइया दाई
मीठ मधुर के भरइया ओ.

ज्ञान के तय अंजोरी दाई
अंधियारी ल भगइया ओ,
सुनी ले मोर गुहारी दाई
तही हर मोर सुनइया ओ.

ब्रम्हा के तय ह बेटी दाई
सुमति के सिरजइया ओ,
बंदना मैं तोर करँव दाई
लाज के तय बचइया ओ.

*****

मेरा प्यारा गाँव

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु"

मेरा सुंदर सबसे प्यारा गाँव है,
मेरा सुंदर सबसे न्यारा गाँव है.

जहाँ बरगद की शीतल छाँव है,
जहाँ पीपल की शीतल छाँव है.

जहाँ पंछी का चाँव-चाँव है,
जहाँ सुर-संगीत का भाव है.

जहाँ रवि को पहले प्रणाम है,
जहाँ करते पहले ये काम है.

जहाँ करते जलाभिषेक है,
जहाँ करते काम विशेष है.

जहाँ ग्वाल-बाल गायें चराते हैं,
जहाँ बंशी की धुन मन भाते हैं.

जहाँ गायें व बछड़े रम्भाते हैं,
जहां ग्वालों के टेर सुनाते हैं.

जहाँ रहँट-घिरनी की धुन आती है,
जहाँ पनघट का आभाष कराती है.

जहाँ खेतों में फसल लहलहाते हैं,
जहाँ खुशी के गीत गुनगुनाते हैं.

जहाँ बगीचों में फूल मुस्काते हैं,
जहाँ रसीले फल मन लुभाते हैं.

जहाँ तालों में कमल मुस्काते हैं,
जहाँ स्वच्छ जल लहरा लगाते हैं.

जहाँ जंगल-पठार मन को भातें हैं,
जहाँ के हरियाली मन को सुहाते हैं.

जहाँ शीतल मन्द सुंगन्ध हवाएँ हैं,
जहाँ सुमधुर मनमोहक फिजाएँ हैं.

जहाँ के नर-नारी ये पैगाम देते हैं,
जहाँ कर्तव्य सदा यह निभाते हैं.

जहाँ स्नेह-प्रीत के गीत ये गाते हैं
जहाँ धर्म चरित की कथा सुनाते हैं.

*****

बालिका सशक्तिकरण

रचनाकार- ऋषि प्रधान

नाजों में पली लाडली होती है बिटिया,
थोड़ी सी कच्ची, थोड़ी सयानी होती है बिटिया.

लिहाज और हया की मूरत होती है बिटिया,
खुद में सारा जहान समेटे होती है बिटिया.

दादी,माँ,बेटी,बहन की मूरत होती है बिटिया.
खुद में खुद को समेटे होती है बिटिया.

पापा की परी,माँ की दुलारी होती है बिटिया.
सारे जग में सबसे प्यारी होती है बिटिया.

माँ के गुस्से को भी हंस के सुनती है बिटिया,
पापा के प्यार का हिस्सा भी होती है बिटिया.

सरकार की हर योजना का हिस्सा होती है बिटिया,
दादी की कहानी का एक किस्सा होती है बिटिया.

स्कूल की रौनक होती है बिटिया,
सरकारी दफ्तरों में भी अब राज करती है बिटिया.

देश की सेवा हो या कोई फर्ज ईमान हो,
बड़ी शिद्दत से हर काम को करती है बिटिया.

भ्रूण हत्या जब-जब भी होती है,
माँ के कोख में रोती है बिटिया.

सिसकियों से आजाद होना चाहती है बिटिया,
खुशियों का पंख लेके अब उड़ान भरना चाहती है बिटिया.

मुझे भी जीने दो खुलकर अब,
ये आवाज लगाकर कहना चाहती है बिटिया.

नित हो रहे चीर हरण से सहम सी जाती है बिटिया,
पापा से हर रोज मेरी लाज बचाओगे न पापा,ये कहती है बिटिया.

सबको साथ देना होगा इस जमाने में अब,
भरोसा ये दिलाना होगा हर पिता को अब कि मैं तेरे साथ हूँ,
तू आजाद होकर अब उड़ान भर सकती है बिटिया.

*****

परिंदा

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

हुआ सवेरे चहकने लगे परिंदे,
तरह-तरह की आवाजें करते.
लगे चहकने सभी परिंदे,
दिन-भर भोजन तराशते रहते.

उड़ते घूमते -फिरते रहते,
कभी इस डाली, कभी उस डाली पर.
कभी खेत पर, कभी छत पर,
कभी बिजली के तारों पर.

वे हमें सब जगह मिल जाते,
पास जाओ तो फुर्र हो जाते.
जैसे-जैसे सूरज जाता डूबने को,
वैसे- वैसे ही वे लौटते अपने घोंसलों को.

अठखेलियां करते पेड़ों पर,
कभी झुंड में सब जगह बैठते.
कभी एक साथ भी उड़ जाते,
फिर गोल-गोल घूम कर आते.

ऐसे अठखेलियां वे कर जाते,
आसमान पर कभी लंबी लाइनें बन.
कभी-कभी झुंड में आते रहते,
बड़े सुंदर मनमोहक वे अठखेलियां करते.

तरह-तरह के कलरव वे करते,
झपटते लड़ते पेड़ों पर बैठते.
जैसे रात हो शांत चुप बैठते,
अगली सुबह का इंतजार करते.

*****

प्रकृति का नन्हा मेहमान

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे

आसमान से देखो धरती पर,
प्रकृति का नन्हा मेहमान आया.

भिन्न -भिन्न करते आया,
ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर,
ऊंचे भवन इमारतों पर छाया प्रकृति का नन्हा मेहमान आया.

लाखों की संख्या में वे रहते,
जहां रहते साथ में वे रहते.
तरह-तरह के घर बनाते रहते,
कभी समतल तो कभी लंबी टीला.

अलग-अलग झुंड में वे रहते,
कभी सब हो जाते एक झुंड में.
प्रकृति का नन्हा मेहमान आया,
भिन्न-भिन्न करते आया.

भवर, सारंग और मधुमक्खी,
कई नामों से उसे पुकारते.
कुछ ना करो तो वो रहता मतवाला,
अगर उसको करो छेड़खानी तो,
झुंड में टूट पड़ते और देते डंक से सबक.

प्रकृति का नन्हा मेहमान आया,
मीठे-मीठे शहद, मधुरस वह हमें दे जाता,
प्रकृति का नन्हा मेहमान देखो आया.

*****

भारत का गुणगान सुने

रचनाकार- अरुण कुमार शुक्ल

हे दीन बन्धु करुणावतारं,
हे जग पालक, हे निराधार.

कवि मानस कानन के कोकिल,
हे गुणी गण्य हे गुणागार.

हे रितु बसंत हे परं सन्त,
जीवन पथ के हे आदि अंत.

चहुँ ओर प्रसारित हो खुशियाँ,
दुख का न कोई पता रहे.

सब सच्चे सीधे मित्र बने,
ईर्ष्या को हरदम व्यथा रहे.

हर माता सिंह सा शिशु जने,
हर वीर कर्म निज डटा रहे.

हर बालक ऐसे निपुण बने,
खुद में ओ नीतिवान चुने,

जिस ओर जहाँ भी हम जायें,
बस भारत का गुणगान सुने.

उपमान न होवे बाला का ओ,
सभ्य और गुणवान बने.

समरसता ज्ञान गार्गी का,
लक्ष्मी का तेज महान बने.

बालक हों प्रत्युत्पन्नमति ओ,
नम्र और बलवान बने.

अभिनव भारत के अभिनव हों,
विक्रम सा प्रतिभावान बने.

अविराम चलें यूं लक्ष्य डगर,
अनुचरता पूर्ण जहान चुने.

जिस ओर जहाँ भी हम जायें,
बस भारत का गुणगान सुने.

उपवन हर खिला-खिला महके,
हर एक ओर हरियाली हो.

न त्रिविध ताप न भय कोई,
अंदर बाहर खुशियाली हो.

कन्याएं निर्भय हों विचरे,
न दूषित दृष्टि काली हो.

न दुष्ट लांघ पायें शरहद,
दृढता बस रखवाली हो.

हो सुखी भारती का हर शिशु,
लालच न ओ सम्मान चुनें.

जिस ओर जहाँ भी हम जायें,
बस भारत का गुणगान सुने.

*****

मेरे गांव का मेला

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल"

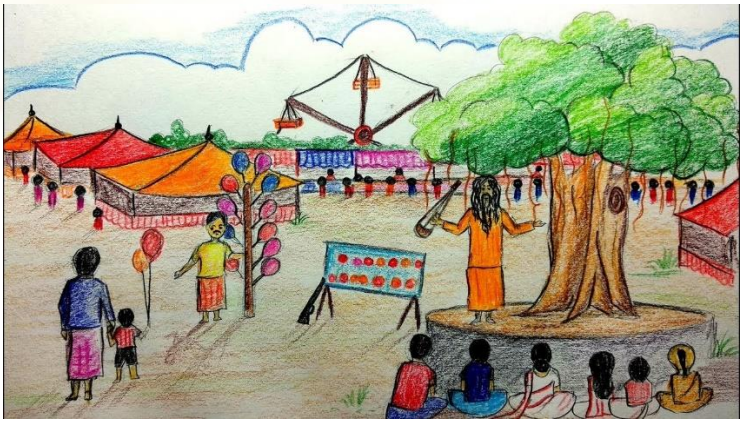

मेरे गाँव हुआ एक मेला,
किसम किसम लगा था ठेला.

शुरू में थी सब्जी की हाट,
पीछे थे,गुपचुप और चाट.

एक तरफ थी मात्र मिठाई,
जलेबी के संग मिली मलाई.

खींच रहा था सबका ध्यान,
खिलौनों से सजी दुकान.

खूब खरीदे और खूब खाये,
शाम को ही वापस घर आये.

रास्ते भर था लोगों का रेला,
मेरे गांव हुआ एक मेला.

*****

होली

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

हँसती-गाती आई होली,
रंग-बिरंगी छायी होली.

गेंहूँ, चना, मटर मुस्काए,
सरसों सी शरमायी होली.

मार फुहार रही पिचकारी,
रस में डूब नहायी होली.

लगा अबीर-गुलाल गाल पर,
मन ही मन इतरायी होली.

हवा चल रही फगुनाहट की,
आमों सी बौरायी होली.

गुलमोहर, सेमल, पलाश में,
कोकिल के सँग गायी होली.

छकें प्रेम से मीठी गुझिया,
सबको अतिशय भायी होली.

होरियारे दिखते एलियन से,
जमकर खूब मनायी होली.

*****

कइसे गुजरिस भाई

रचनाकार- आंचल

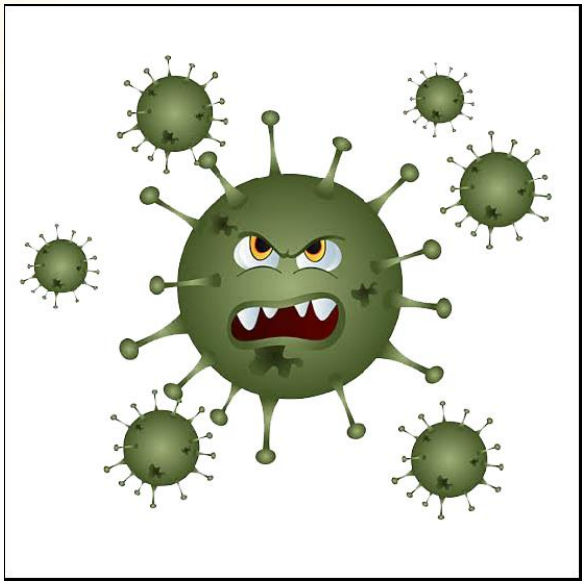

2020 में आगे करोना, दुनिया में छा गए रोना रोना.
त्राहि-त्राहि हो गे दुनिया, का पाना का खोना.
कोनो कइथे चीन के बेईमानी, कोनो कइथे प्रकृति से छेड़खानी.
ऐसे तो हावय भाई करोना की कहानी.
करोना जब जनमिस तो लोगन हो गए भौचक्का.
विदेश मा रहइया मन भागिस बिन चक्का.
मजदूर बनिहार के दुख है अपार.
का कहिबे संगवारी जिंनगी हो गे तार तार.
नान नान लइका ल लेके चलिस किलोमीटर हजार.
समझ म नइआईस का करिस सरकार.
नइ मिलिस मोटर नइ मिलिस गाड़ी
छोला गे हाथ अउ छोला गे माड़ी.
भूख प्यास हां अलग झेलावय.
कोरोना वारियर के याद दिलावय .
कोरोना वारियर बन के भगवान. अइसन दिखाईन अपने पहचान.
भाईचारा के शक्ति जागिस. वारियर मन के भक्ति जागिस.
कोनो बजाइन थाली त कोनो बजाईन ताली .
रोगहा कोरोना ला भगाए बर.
धूप दीप हवन अउ दीया जला के जैसे मनाईन दिवाली.
लॉक डाउन ह जान बचाईस गलती करैया डंडा खाइस.
क्वारंटाइन म रहे लागिस तब जाके करोना ह भागिस.
कोनों खोइस बहिनी कोनो खोइस भाई

कोनो खोइस ददा त कोनो खोइस दाई.
अइसे भी दिन आईस जेखर पूरा परिवार ला दफनाइस.
दुख पड़ गे भारी करोना जइसे महामारी.
बढ़ तांडव मचाइस करोना अब हमर हे बारी.
मास्को लगावव सैनिटाइज करव 2 गज की दूरी भी धरव
काबर की संगवारी हो
ना परिवार न पइसा साथ अपनी सुरक्षा अपने हाथ.

*****

नटखट बंदर

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

डाल पकड़कर झूला बंदर
जा गिरा वह गुफा के अंदर.

मिला वहाँ पर एक छछून्दर
उसे देखकर चौका बंदर.

खें-खें करता भागा बंदर
पीछे-पीछे गया छछून्दर.

रूको - रूको भाई बंदर
मिलकर खाएँ चलो चुकंदर.

*****

अम्बर

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू"

नीले-नीले अम्बर हम को, लगते कितने प्यारे.
इक दूजे सँग मिलकर रहते, चाँद, सूर्य अरु तारे.

कभी चाँद अम्बर छुप जाते, करते छुपम-छुपाई.
नयन ढूंढते रहते उनको, देते नहीं दिखाई.

बैठ जमीं हम देखा करते, सुंदर सभी नजारे.
इक दूजे सँग मिलकर रहते, चाँद, सूर्य अरु तारे.

फैले है वो चादर जैसे, हर पल रहते छाये.
जहाँ-जहाँ हम जाते साथी, बनकर चलते साये.

नीर बरसते जब अम्बर से, हो जाते हैं न्यारे.
इक दूजे सँग मिलकर रहते, चाँद,सूर्य अरु तारे.

नीर,वायु, सूरज अरु तारे, अम्बर सभी समाते.
सदा समय से आगे आते, अपना रूप दिखाते.

हे मानव कुछ सीखो तुम भी, रहो एक सा सारे.
इक दूजे सँग मिलकर रहते, चाँद, सूर्य अरु तारे.

*****

गौरैया

रचनाकार- रजनी शर्मा

तोता, मैना, चिड़िया, गौरैया.
कहां गुम हुए तुम सारे भैया.

मेरे आंगन आओ ना गौरैया,
दाना खूब तुम्हें देगी मेरी मैया.

गौरैया बोली दीदी-दीदी,
आंगन में नहीं है मेरी सहेली.

पेड़ तुमने तो कटवा डाले,
घोसलें भी मेरे उजाड़ डाले.

जल्दी से तुम पेड़ लगाना,
फिर सुनना तुम मेरा गाना.

हरे पेड़ पर झूमकर मैं नाचूंगी,
तब दाना छककर मैं खाऊंगी.

*****

थैला

रचनाकार- रजनी शर्मा

फल, सब्जी और तरकारी,
रखता हूँ सामान भी भारी.

सिर्फ दो ही होते हैं मेरे कान,
पर आता हूँ मैं सबके काम.

लंबा, छोटा, पीला, काला,
दिखूं कभी मैं फूला-फूला.

कभी-कभी हो जाता हूँ मैला,
धुल कर बनू मैं उजला थैला.

कचरा कभी नहीं फैलाता मैं,
पर्यावरण सदा बचाता मैं.

मुझको तुम अपना लो भाई,
पॉलिथीन अब छोड़ो भाई.

*****

बिल्ली के सपने

रचनाकार- भानुप्रताप कुंजाम"अंशु"

खाट पर सोई बिल्ली मौसी,
सपनों में खोई बिल्ली मौसी.

चूँ-चूँ करता चूहा आया,
मौसी जी की नींद भगाया.

देख चूहा टपके लार,
दौड़ी मौसी करने शिकार.

भागा चूहा घुसा बिल,
लार टपकाते कुत्ता मिल.

देख कुत्ता मौसी भागी,
डरकर वह नींद से जागी.

*****

बसंत के आते ही

रचनाकार- मनोज कुमार पाटनवार

बसंत के आते ही धरा में मौसम सुहानी लगती है,
कोहरा के साथ ठंडी जाने लगती है.
गुनगुनी धूप आनंददाई लगने लगती है,
भौंरे भी गुंजन के साथ राग सुनाती है.
फूलों की कलियाँ भी खिलने लगती है,
खेतों में सरसों के फूल लहलहाने लगती है.

आम में भी बौर दिखने लगती है,
कोयल मधुर स्वर में कुकने लगती है.
पक्षियाँ कलरव के साथ चहकने लगती है,
टेसू के लाल फूल मन खींचने लगती है.

धरती हरा चुनर से सजने लगती है,
पेड़ों पर नई कोंपले दिखने लगती है.
मंद मंद पवनें चलने लगती है,
मधुर संगीत बजने लगती है.

मन में मीठा रस घुलने लगती है,
मां सरस्वती की वीणा बजने लगती है.
सुरीली झंकार निकलने लगती है,
बादलों में तारे चमकने लगती है.

नई आशाएं जगने लगती है,
पतझड़ भी बीतने लगती है.
नई छटा बिखरने लगती है,
उमंग, उल्लास बढ़ने लगती है.

*****

माँ शारदे मुझे ज्ञान दे

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल"

माँ शारदे, मुझे ज्ञान दे.
सदगुणों से भर दे मुझे,
पर मन मे न अभिमान दे.

मेरे मुख में न अपशब्द हो
मेरी बात सबको पसंद हो.
हे स्वर की देवी सरस्वती,
मुझे मात्र मीठी जुबान दे.

न निंदा कभी मेरे मुख में हो,
मेरे कारण न कोई दुख में हो,
संवेदना से भर दे मुझे,
सबके दर्द की पहचान दे.

कण कण को मैं संचय करूँ,
एक पल भी न अपव्यय करूँ.
जीवन के मोल समझ सकूं,
मुझे ऐसी बुद्धि व ध्यान दे.

*****

बोलते मुर्दे

रचनाकार- अजय अवस्थी किरण

एक राजा था उसे सनक सूझी और उसने फरमान जारी कर दिया कि इस राज्य में कोई बूढ़ा नहीं रहेगा. राजा ने अपने सभासदों से कहा कि बूढ़े किसी काम के नहीं होते. ये केवल अनाज के दुश्मन होते हैं. राजा के विरुद्ध कौन बोले. सबने हाँ कर दी. राजा ने कह दिया कि इस राज्य में जो भी बूढ़ा है उसे मार दिया जाए.

अब तो बूढ़ों पर आफत आ गई घर-घर से बूढ़े ढूँढकर निकाले जाने लगे और मौत के घाट उतारे जाने लगे. राज्य से सारे बूढ़े गायब हो गए. कत्लेआम के बाद राज्य भयावह सन्नाटे में डूब गया. लोग दहशत में आ गए. अब जो भी बूढ़ा होगा वो मार दिया जाएगा. बूढ़े हो रहे लोग अपनी मौत के दिन गिनने लगे.

राज्य में एक गरीब व्यक्ति ने राजा के सैनिकों के आने से पहले रातोंरात अपने बूढ़े पिता को राज्य के बाहर ले जाकर जंगल में छुपा दिया.

राजा बड़ा खुश था कि अब उसके राज्य में खूब तरक्की होगी, राज्य का खर्च बचेगा और युवाओं के अधिक संख्या में होने से खूब काम होगा.

कुछ दिन बीते, पड़ोसी राज्य के शक्तिशाली राजा का दूत इस राज्य में पहुँचा. उसने अपने राजा की चुनौती दी, कि हमारे राजा ने कहा है कि यदि राजा ने एक शंख के इस पार से उस पार धागा डालकर दिखा दिया, तो उसे युद्ध नहीं लड़ना होगा अन्यथा उसे युद्ध लड़ना होगा.

राजा ये चुनौती सुनकर सोच में पड़ गया. उसने खूब प्रयत्न किया लेकिन उसे कुछ न सुझा. अतः इसे सुलझाने का काम अपने युवा दरबारियों को दिया,कोई भी इसे नहीं सुलझा सका. शंख के अंदर तो बहुत घुमावदार नली होती है, उसमें से धागा आर-पार निकालना लगभग असंभव था. मंत्री, सेनापति,विद्वान सभी हार गए, राजा की चिंता बढ़ गई कि यदि ये समस्या नहीं सुलझी तो समझो मौत निश्चित है. क्योंकि उस राजा से युद्ध होना मतलब राजपाट और जीवन दोनों से हाथ धोना था. उसने राज्य भर में ऐलान करवा दिया कि जो भी इस प्रश्न का समाधान बताएगा उसकी मुंहमांगी मुराद पूरी होगी.

कोई नहीं बता पा रहा था. इधर मियाद खत्म हो रही थी. वो गरीब लड़का हर दिन अपने पिता के लिए खाना लेकर जाता और राज्य का हाल चाल अपने बूढ़े पिता को बताता. उसने ये बात भी बताई. सुनकर उसके बाप ने उसे कुछ समझाया और राजा के पास जाने को कहा.

वो गरीब लड़का राजा के महल में पहुँचा उसने दरबारियों से कहा कि उसे राजा की समस्या का हल मिल गया है. उसे राजा से मिलने दिया जाए.

उसे राजा के पास ले जाया गया. सभा भरी हुई थी. दुश्मन देश का दूत भी मौजुद था. फिक्र और डर में डूबा राजा अपने सिंहासन पर बैठा हुआ था.

लड़के ने शंख और गुड़ की चाशनी से डूबा धागा मँगवाया. शंख के एक सिरे पर धागे में बहुत सारी चीटियाँ डालकर रख दिया. चीटियाँ धागे का सिरा पकड़ कर शंख के छेद में घुस गईं और धागे को साथ लेकर शँख के दूसरी ओर बाहर आ गईं. धागा शंख के आर-पार हो गया. इस समाधान को देख कर पड़ोसी राजा का दूत बहुत निराश हुआ और चला गया और राज्य में आया युद्ध का संकट टल गया. राजा की खुशी का ठिकाना नही रहा. उसने लड़के से पुरस्कार माँगने को कहा लेकिन इससे पहले राजा को उत्सुकता हुई कि ये तरकीब उसे कहाँ से पता चली. उसने लड़के से सच सच बताने को कहा. अब लड़का सच बोलता तो मुश्किल थी, कि उसने राज्य से एक बूढ़ा गायब कर राजा के आदेश की अवहेलना की थी, राजद्रोह का आरोप लग सकता था. उसने चालाकी से कहा कि महाराज ये राज मुझे कब्रिस्तान से मिला है. मैंने तंत्र साधना की हुई है और मुझे मुर्दों ने बताया है. आप चाहें तो मैं आपकी बात भी मुर्दों से करवा सकता हूँ. आपने जितने बूढों को मरवाया है,वही मुर्दे मुझसे बात करते हैं. उनमें से एक मुर्दे ने मुझे ये तरकीब बताई है.

राजा को आश्चर्य हुआ, उसने सत्यता जानने के लिए अपने सैनिक को उस युवक के साथ भेजा.

रात के सन्नाटे में उस लड़के ने अपने पिता को कब्रिस्तान में घने पेड़ो के बीच छुपा दिया. सैनिक जब साथ में आया तो लड़के ने बुदबुदाते हुए चावल के कुछ दाने फेंके. उस इशारे को भांप कर उसके बाप ने जोर जोर से बोलना शुरू किया.

राजा का अंत आ गया है, राजा बच नहीं सकता. राजा जब तक बूढ़ों का सम्मान नहीं करेगा ऐसे संकट आते रहेंगे, राजा का अंत करीब है.

सैनिक घबरा गया और जाकर सारी बात राजा को बताई कि इस राज्य के कब्रिस्तान में सच में मुर्दे बोलने लगे हैं और आपके अंत की भविष्यवाणी कर रहे हैं.

राजा घबरा गया और उसने तत्काल अपना सनकी फरमान वापस ले लिया और ऐलान किया, कि आज से सभी घरों में बुजुर्गों की पूजा होगी. उसने लड़के को खूब सारा इनाम देकर अपना सलाहकार बना दिया.

*****

महिला सशक्तिकरण

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

महिला सशक्तिकरण तभी सार्थक है जब महिलाओं को अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता हो. उनके लिए क्या सही और क्या गलत है, यह तय करने का उन्हें पूरा अधिकार हो. महिलाओं को दशकों से पीड़ित होना पड़ा है, उनके पास कोई अधिकार नहीं थे और अब भी बहुत सी जगहों, गाँव, यहाँ तक कि बहुत से शहर और देशो में भी नहीं है!

महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया और अब भी किया जा रहा है. अपने अधिकारों के साथ-साथ महिलाओं को सिखाया गया कि वे अपने जीवन के सभी पहलुओं में आत्मनिर्भर कैसे हों.

पुरुषों के पास हमेशा से सभी अधिकार होते थे. हालाँकि, महिलाओं को इनमें से कोई भी अधिकार नहीं था, यहाँ तक कि मतदान का अधिकार भी महिलाओं को नहीं दिया जाता था. अब चीजें बदल गई हैं. महिलाओं ने महसूस किया कि उन्हें भी समान अधिकारों की आवश्यकता है. यह बदलाव अपने अधिकारों की माँग करने वाली महिलाओं द्वारा लाया गया.

दुनिया भर के देशों ने खुद को "प्रगतिशील देश" कहा, लेकिन उनमें से हर एक का महिलाओं के प्रति गलत व्यवहार करने का इतिहास है. इन देशों में महिलाओं को आजादी और समान दर्जा हासिल करने के लिए उन प्रणालियों के खिलाफ लड़ना पड़ा, जो उन्होंने आज हासिल किया हैं. हालाँकि, भारत में, महिला सशक्तिकरण अभी भी पिछड़ रहा है. अब भी जागरूकता की बहुत अधिक आवश्यकता है.

भारत उन देशों में से एक है जो महिलाओं के लिए सुरक्षित नहीं है, इसके कई कारण हैं. उनकी सुरक्षा में कमी का एक कारण ऑनर किलिंग का खतरा भी है.

महिलाओं के सामने एक और बड़ी समस्या यह है कि शिक्षा की कमी है. देश में उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए महिलाओं को हतोत्साहित किया जाता है. इसके साथ ही उनकी शादी जल्दी हो जाती है. महिलाओं पर हावी पुरुषों को लगता है कि महिलाओं की भूमिका उनके लिए काम करने तक सीमित

है. वे इन महिलाओं को कहीं जाने नहीं देते हैं, नौकरी नहीं करने देते हैं और इन महिलाओं को कोई स्वतंत्रता नहीं है.

महिला सशक्तीकरण लैंगिक समानता प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण पहलू है. इसमें एक महिला के आत्म-मूल्य, उसकी निर्णय लेने की शक्ति, अवसरों और संसाधनों तक उनकी पहुँच, उसकी शक्ति और घर के अंदर और बाहर अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण और परिवर्तन को प्रभावित करने की उसकी क्षमता को बढ़ाना शामिल है. फिर भी लैंगिक मुद्दे केवल महिलाओं पर केंद्रित नहीं हैं, बल्कि समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों पर भी हैं. पुरुषों और लड़कों के कार्य और दृष्टिकोण लैंगिक समानता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

यदि महिलाएं घरेलू हिंसा और दुर्व्यवहार से गुजर रही हैं, तो वे इसकी सूचना किसी को नहीं देती हैं.

भारत एक ऐसा देश है जिसमें महिला सशक्तिकरण का अभाव है. देश में बाल विवाह का प्रचलन है. माता-पिता को अपनी बेटियों को यह सिखाना चाहिए कि अगर वे अपमानजनक रिश्ते में हैं, तो उन्हें घर आना चाहिए. इससे, महिलाओं को लगेगा कि उन्हें अपने माता-पिता का समर्थन प्राप्त है और वे घरेलू हिंसा से बाहर निकल सकती हैं.

महिलाओं को उन क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए स्वतंत्र होना चाहिए कि वे अपने सभी लक्ष्यों और आकांक्षाओं को प्राप्त कर सकें जो वो करना चाहती है.

आज भी विश्व स्तर पर, महिलाओं के पास पुरुषों की तुलना में आर्थिक भागीदारी के कम अवसर हैं, बुनियादी और उच्च शिक्षा तक कम पहुँच, अधिक स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिम, और कम राजनीतिक प्रतिनिधित्व.

महिलाओं के अधिकारों की गारंटी देना और उन्हें अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने का अवसर प्रदान करना न केवल लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों की एक विस्तृत श्रृंखला को पूरा करने के लिए भी महत्वपूर्ण है. सशक्त महिलाएँ और लड़कियाँ अपने परिवार, समुदायों और देशों के स्वास्थ्य और उत्पादकता में योगदान करती हैं, जिससे सभी को लाभ होता है.

लिंग शब्द सामाजिक रूप से निर्मित भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का वर्णन करता है जो समाज पुरुषों और महिलाओं के लिए उपयुक्त मानते हैं. लिंग समानता का अर्थ है कि पुरुषों और महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता, शिक्षा और व्यक्तिगत विकास के लिए समान शक्ति और समान अवसर प्राप्त हैं.

अब भी बहुत से विकासशील देशों में लगभग एक चौथाई लड़कियाँ स्कूल नहीं जाती हैं. आमतौर पर, सीमित साधनों वाले परिवार जो अपने सभी बच्चों के लिए स्कूल की फीस, वर्दी और आपूर्ति जैसे खर्च नहीं कर सकते, वे अपने बेटों के लिए शिक्षा को प्राथमिकता देंगे.

एक शिक्षित लड़की की शादी को स्थगित करने, छोटे परिवार को बढ़ाने, स्वस्थ बच्चे पैदा करने और अपने बच्चों को स्कूल भेजने की अधिक संभावना है. उसके पास आय अर्जित करने और राजनीतिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के अधिक अवसर हैं, और एचआईवी, कोरोना अन्य बीमारियों से संक्रमित होने की संभावना कम है.

महिलाओं का स्वास्थ्य और सुरक्षा एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है. एचआईवी/एड्स महिलाओं के लिए तेजी से प्रभावी मुद्दा बनता जा रहा है. मातृ स्वास्थ्य भी विशिष्ट चिंता का एक मुद्दा है. कई देशों में, महिलाओं की प्रसव पूर्व और शिशु देखभाल तक सीमित पहुँच है, और गर्भावस्था और प्रसव के दौरान जटिलताओं की अधिक संभावना है. यह उन देशों में एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है जहाँ लड़कियाँ शादी करती हैं और उनके तैयार होने से पहले बच्चे होते हैं; 18 वर्ष की आयु से पहले. शिक्षा मातृ स्वास्थ्य देखभाल सूचना और सेवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण प्रवेश बिंदु प्रदान कर सकती है जो माताओं को अपने स्वयं के स्वास्थ्य और अपने बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में उचित निर्णय लेने वालों के रूप में सशक्त बनाती है. हमें एक ऐसी संस्कृति की जरूरत है जो महिलाओं को सम्मान से देखती है और महिलाओं को पुरुषों के जितना ही आदर्श बनाती है.

लैंगिक समानता प्राप्त करने में ध्यान केंद्रित करने का एक क्षेत्र महिलाओं का आर्थिक और राजनीतिक सशक्तिकरण है. हालांकि महिलाओं में दुनिया की 50% से अधिक आबादी शामिल है, लेकिन उनके पास दुनिया की संपत्ति का केवल 1% ही है. दुनिया भर में, महिलाएँ और लड़कियाँ लंबे समय तक अवैतनिक घरेलू काम करती हैं. कुछ स्थानों पर, महिलाओं को अभी भी खुद की जमीन या संपत्ति का अधिकार प्राप्त करने, ऋण प्राप्त करने, आय प्राप्त करने या नौकरी के भेदभाव से मुक्त अपने कार्यस्थल में स्थानांतरित करने का अधिकार नहीं है. घर और सार्वजनिक क्षेत्र में सभी स्तरों पर, महिलाओं को निर्णय निर्माताओं के रूप में व्यापक रूप से रेखांकित किया जाता है. दुनिया भर की विधानसभाओं में, लैंगिक समानता और वास्तविक लोकतंत्र प्राप्त करने के लिए महिलाओं के लिए राजनीतिक भागीदारी महत्वपूर्ण है.

महिला सशक्तिकरण दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक है.

जिन पुरुषों के पास सभी अधिकार थे, उनकी तुलना में महिलाओं के पास सबसे लंबे समय तक मतदान करने जैसे आवश्यक अधिकार नहीं थे.

महिलाओं का सशक्तीकरण आवश्यक है क्योंकि महिलाओं के पास दशकों से अधिकार और स्वतंत्रता नहीं थी. महिलाएँ भी मनुष्य हैं, और उन्हें अपने साथी मनुष्यों के समान अधिकार और स्वतंत्रता की आवश्यकता है.

महिला सशक्तिकरण की जरूरत, इस समय की सबसे महत्वपूर्ण जरूरतों में से एक है. ऐसे कई तरीके हैं जिनसे महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है. महिला सशक्तिकरण को वास्तविकता बनाने के लिए लोगों को एकजुट होना चाहिए. महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम महिलाओं को शिक्षित करना होगा. महिला शिक्षा को और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि अधिक महिलाएँ

साक्षर हो सकें. वे जो शिक्षा प्राप्त करती हैं, उन्हें आगे बढ़ाने में मदद की जानी चाहिए. महिलाओं के पास वह जीवन हो सकता है जो वे चाहती हैं और इसमें खुश रह सकती है!

महिला सशक्तिकरण का एक और तरीका है कि हर क्षेत्र में सम्मान और समान अवसर दिए जाएँ. महिलाओं को वही मौका दिया जाना चाहिए जो पुरुषों को मिलता है.

वेतन एक और क्षेत्र है जो महिलाओं और पुरुषों के लिए समान होना चाहिए. महिलाओं को उस काम के लिए समान रूप से भुगतान किया जाना चाहिए जो वे करती हैं.

महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण विषय है जिसे पूरा करने की जरूरत है. आज महिलाओं के पास जो अधिकार और स्वतंत्रता है, वह उन संघर्षों का परिणाम है, जो सशक्त महिलाओं ने किया. इन सशक्त महिलाओं के कृत्यों से पता चलता है कि यह समय है कि महिलाएँ भी सभी स्वतंत्रता और अधिकारों का आनंद ले सकती हैं.

महिलाओं को अपने हक के लिए आवाज़ खोजने की ज़रूरत नहीं है, उनके पास एक आवाज़ है, आत्मविश्वास है और उन्हें इसका उपयोग करने के लिए सशक्त महसूस करने की आवश्यकता है, और लोगों को सुनने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है!

*****

खास

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

जब तक तुझ में सांस है,
सफलता की आस है,
खुशनुमा सा एहसास है,
पूरा जोश और साहस है,
मानो तो कुछ भी नहीं,
मान लो तो बहुत कुछ खास है.

कभी जन्नत तो कभी वनवास है,
खुशियों का आगाज है,
मंजिल तेरे पास है,
दहाड़ की आवाज है,
मानो तो कुछ भी नहीं,
मान लो बहुत कुछ खास है.

किस बात का एतराज है,
क्यों खुद से तू नाराज है,
दो वक्त का अनाज है,
किसकी तुझे तलाश है,
मानो तो कुछ भी नहीं,
मान लो तो बहुत कुछ खास है.

ऊपर श्वेत आकाश है,
नीचे सुंदर कैलाश है,
तेरा अलग अंदाज हे,
हर मुमकिन प्रयास है,
मानो तो कुछ भी नहीं,
मान लो तो बहुत कुछ खास है.

*****

सरोजिनी नायडू

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

हमारे देश की कोकिला,
एक महान क्रांतिकारी महिला,
बेहतरीन इनकी साहित्य गतिविधियाँ,
अनेकों इनकी प्रसिद्धियाँ.

सच्ची देशभक्त और क्रांतिकारी वीरांगना,
हम सभी के लिए आदर्श का प्रतीक और प्रेरणा,
डट कर किया ब्रिटिश शासन के खिलाफ सामना,
आजाद भारत की थी उनकी अंत तक कामना.

कभी कविताएं, कभी संगीत,
गांधी जी के विचारों से प्रभावित,
कभी साहित्यिक तो कभी राजनीतिक,
12 वर्ष की उम्र में उन्होंने पास कर ली मैट्रिक.

प्रथम महिला अध्यक्ष और राज्यपाल,
सरोजिनी जी ने आंदोलन की बागडोर को संभाल,
जोशीली कविता से बदल दिया देश का हाल,
जागरूकता और महिला सशक्तिकरण की हे यह मिसाल.

*****

सम्मान

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

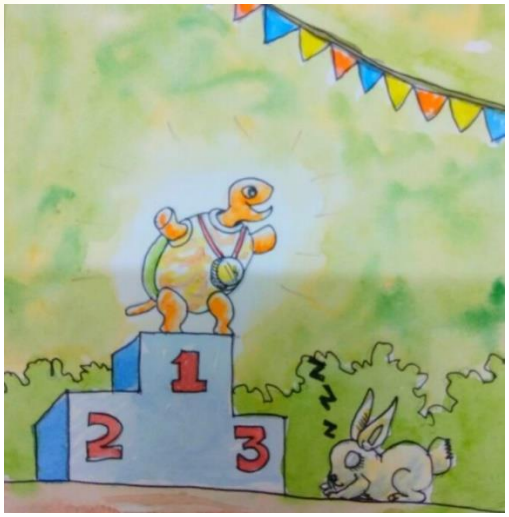

एक वक्त की थी यह बात,
खरगोश ने कछुए का उड़ाया मजाक,

कितना धीमे चलते हो तुम,
कछुए को आया गुस्सा यह बात सुन,

जंगल के जीवो ने कछुए का मजाक बनाया,
खरगोश में और घमंड आया,

कछुए ने कहा चलो दौड़ लगाए,
खरगोश ने कहा कोई इसे बताएं,

तुम इसके बारे में सोच भी कैसे सकते,
मैं दौड़ता हूं और तुम तो सिर्फ चलते,

कछुए ने क्रोधित होकर दी चुनौती,
सभी जानवरों ने कहा तुम कर रहे हो गलती,

फिर भी प्रतियोगिता शुरू कि जाऐ,
इनका कोई भ्रम दूर मिटाऐ,

खरगोश तेजी से दौड़ने लगा,
कछुआ लगातार चलता चला,

खरगोश ने सोचा करता हूं कुछ देर आराम,
मैं ही विजेता होऊंगा, जानता हूं परिणाम,

खरगोश गहरी निंद्रा में चला गया,
कछुए ने निरंतर चलकर अपने लक्ष्य को छू लिया,

कछुआ विजय, ट्रॉफी जीत, बन गया सब का चहिता,
खरगोश की खुली नींद, सुना कछुआ हुआ विजेता,

घमंड अभिमान हुआ चकनाचूर,
खरगोश का ना बचा गुरुर,

कछुए ने कहा ,ए दोस्त, किसी को स्वयं से कम ना समझना,
जीवन में तो जरूरी है निरंतर चलते रहना,

खरगोश ने कछुए से माफी मांग,
तोड़ा स्वयं का घमंड और अभिमान,

मैं जीतूंगा सबने सोचा,
पर सबसे जरूरी है स्वयं पर भरोसा,

अनेक सीख देती है हमें यह कहानी,
सोचा दे दूं इसे कविता की जुबानी,

दुनिया तुम पर विश्वास करें ना करें,
स्वयं पर भरोसा रख आगे बढ़े,

कभी घमंड से रुक ना जाना,
प्रयत्न करने वालों का मजाक ना उड़ाना,

कब कोई अपना पा ले मुकाम,
तो करो हमेशा सबका सम्मान.

*****

लालची लोमड़ी

रचनाकार- डॉ. माध्वी बोरसे

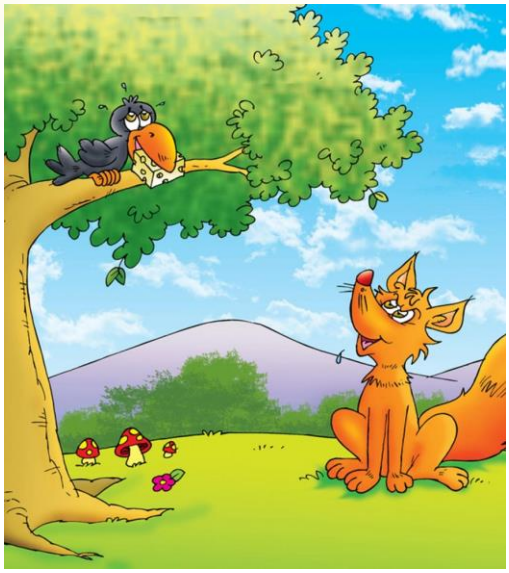

भरी दोपहर में एक दिन लोमड़ी भटके,
कर रही थी भोजन की तलाश,
दिखे उसे बेल में अंगूर लटके,
किया उसे तोड़ने का प्रयास.

लालची लोमड़ी कहने लगी स्वयं से,
इन स्वादिष्ट अंगूर को मुझे है खाना,
लगाई उसने छलांग जम जम के,
थक हार के बैठी और किया बहाना.

उसने अपने मन को समझाया,
बहुत ऊंचाई पर है, इसमें मेरा क्या कसूर,
अपनी कमजोरी को छुपाया,
और कहां, यह तो अंगूर खट्टे होंगे जरूर.

अगर हम कुछ प्राप्त ना कर पाए,
कीमती वस्तु को तुच्छ साबित ना करें,
जीवन में परिश्रम करते जाए,
रहे आखरी तक अपने लक्ष्य पर अड़े.

*****

दिन गर्मी के

रचनाकार- अखिलेश श्रीवास्तव चमन

सूरज जब भी आँख तरेरे
समझो हैं दिन गर्मी के.
हवा चलाए गरम थपेड़े
समझो हैं दिन गर्मी के.

ताल-तलैया प्यासे
आए सूखे से दिन गर्मी के.
मास्टर जी की बेंत सरीखे
रूखे से दिन गर्मी के.

सारा पानी सोख लिए हैं
जमाखोर दिन गर्मी के.
चलते कितने धीरे-धीरे
कामचोर दिन गर्मी के.

रातें तिल सीं और ताड़ से
बने हुए दिन गर्मी के.
बिल्कुल तानाशाह सरीखे
तने हुए दिन गर्मी के.

*****

हमारी दादी जी

रचनाकार- अखिलेश श्रीवास्तव चमन

चांदी जैसे बाल हमारी दादी जी.
बिल्कुल ख़स्ताहाल हमारी दादी जी.
एक एक कर दाँतो ने संग छोड़ दिया
पिचके-पिचके गाल हमारी दादी जी.

हाथ-पॉव में, पेट-पीठ में अगल-बगल
लटक गयी है खाल हमारी दादी जी.
लाठी थामे, कमर झुकाए चलती हैं
धीमी-धीमी चाल हमारी दादी जी.

हम हल्ला-गुल्ला करते, उधम करते
करतीं नहीं ख्याल हमारी दादी जी.
मम्मी, पापा जब हम पर गुस्सा होते
बन जाती हैं ढ़ाल हमारी दादी जी.

शाम ढ़ले हम सारे बच्चों को ले कर
करती हैं चौपाल हमारी दादी जी.
तरह-तरह के किस्सों और कहानी से
रहतीं मालामाल हमारी दादी जी.

*****

विश्व रेडियो दिवस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी

रेडियो जैसे उत्कृष्ट माध्यम को अपनी प्रतिभा,
रचनाओं से समृद्ध करने वालों को विश्व.
रेडियो दिवस पर लख़ लख़ बधाईयां हो,
रेडियो प्रेमियों की रेडियो से कभी जुदाई नां हो.

रेडियो के शौकीन बड़े बुजुर्गों को सैल्यूट हो,
सभी साझा करता है चाहे गीत या मन की बात हो.
विश्व रेडियो दिवस पर सभी को बधाईयां हो,
मन की बात से पीएम रेडियो से जुड़े बधाईयां हो.

रेडियो सकारात्मक साझा करने की बधाईयां हो,
जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाभ की बधाईयां हो.
परेशानी में गीत मेरे मीत रेडियो को बधाईयां हो,
आपस में जोड़ने अद्भुत साधन की बधाईयां हो.

*****

महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन

रचनाकार- सुश्री सुशीला साहू

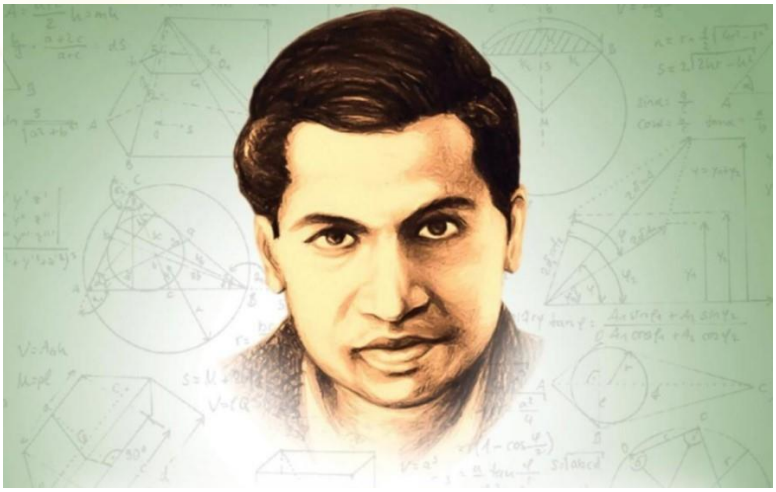

बाइस दिसम्बर अट्ठारह सौ सतासी,
दक्षिणी भूभाग कोयम्बतूर निवासी.
पारम्परिक ब्राह्मण परिवार में जन्मा,
मां कोमलताम्मल पिता श्रीनिवास नामा.

कुंभकोणम गांव में उनका बीता बचपन,
प्राकृतिक संख्या में विलक्षण प्रतिभावन.
कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में शिक्षा पाया,
महान गणितज्ञ रामानुजन कहलाया.

प्रसिद्ध लैडा रामानुजन स्थिरांक थीटा,
थीटा फलन व अभाज्य कृत्रिम बीटा.
तीन हजार आठ सौ चौरासी प्रमेय संकलन,
जीवन भर का ध्येय बीज गणित प्रकलन.

अद्वितीय प्रतिभा के धनी महारथी काया,
गणितांक के मुख्य धारा को अपनाया.
मद्रास में प्रथम शोध पत्र किया प्रकाशित,
नए नए गणित सूत्रों को किया प्रतिपादित.

बीज गणित सबसे प्रसिद्ध नियतांक,
पाई तथा ई का संबंध एक अनंताक.
सतत् भिन्न के मध्यम से व्यक्त करता,
दूसरा सूत्र संख्याओं के भिन्न को हरता.

छोटी सी उम्र में वे महान गणितज्ञ कहलाये,
श्रीनिवास रामानुजन समृद्ध गणित बतलाये.
मावन जीवन में बहुत ही उपयोगी अनुगामी,
कल था आज है व कल रहेगा बहु आयामी.

*****

डॉक्टर विक्रम अंबालाल साराभाई

रचनाकार- सत्येंद्र कुमार बसंत

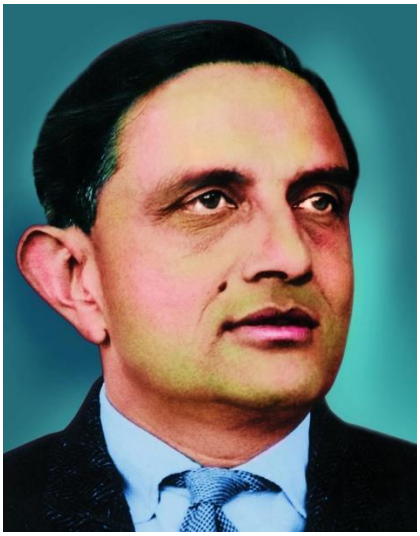

अंबालाल जी की बात निराली
विक्रम भाई की काम निराली.
सौर मंडल इनके हाथ,
कास्मिक किरण इनके साथ.

हिमालय में मापन किया,
प्रेक्षण स्थल स्थापित किया.
अवशिष्ट परिवर्तन इनके हाथ
अंतर्ग्रहीय भौतिकी इनके साथ.

राकेट प्रमोचन इनके हाथ,
अंतरिक्ष स्टेशन इनके साथ.
साराभाई की बात निराली
विक्रम भाई की काम निराली.

परमाणु ऊर्जा इनके हाथ,
भौतिक अनुसंधान इनके साथ.
स्पूतनीक-1 मोचन इनके हाथ,
अंतरिक्ष अनुसंधान इनके साथ.

थूम्बा स्टेशन इनके हाथ,
सोडियम वाष्प इनके साथ.
वास्तविक संसाधन इनके हाथ,
उन्नत प्राद्योगिकी इनके साथ.

अंबालाल जी की बात निराली
विक्रम भाई की काम निराली.
नाथ, मूर्ति, शास्त्री इनके मान,
मौलाना, नेहरू, गांधी इनके अभिमान.

भटनागर पदक इनके हाथ,
पद्म विभूषण इनके साथ.
अंबालाल जी की बात निराली
विक्रम भाई की काम निराली.

*****

विक्रम साराभाई

रचनाकार- प्रतिभा त्रिपाठी

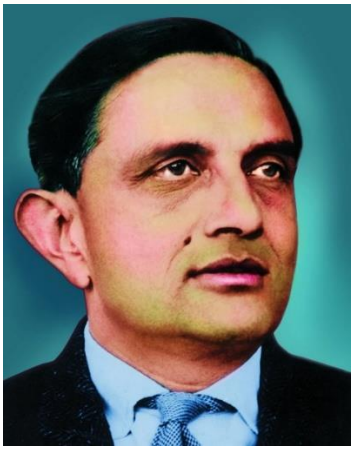

अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक
उच्च कोटि के इंसान,
शिक्षाविद् कला पारखी
ऐसे थे विक्रम साराभाई

12अगस्त 1919 को जन्में
गुजरात के वो हैं, लाल
अम्बा लाल पिता है उनके
बन के रहते माँ के लाल

उच्च कोटि के प्रवर्तक
महान संख्या के निर्माता
भौतिक विज्ञान में दे योगदान
युवा वैज्ञानिकों के लिए वरदान

अगर न होते साराभाई
ब्रम्हांड न पहुँचता भारत में,
पद्मविभूषण से सम्मानित
ऐसे थे वैज्ञानिक विक्रम साराभाई.

*****

आर्यभट्ट

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर

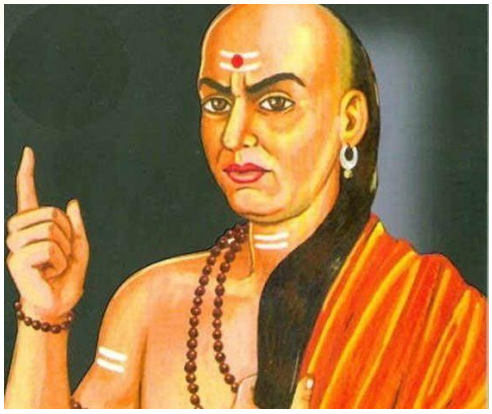

कोटि कोटि नमन हे आर्यभट्ट, हो जनक तुम अनेक सूत्र के.
खगोल ज्योतिष गणित के प्रणेता, हो लाल पाटलिपुत्र के.
पूरी दुनिया को कर दिए चकित, देकर सर्वप्रथम शून्य का ज्ञान.
परिधि और व्यास के अनुपात से, निकाला पाई का सटीक मान.

कई समीकरणों के हल निकाले, काम नहीं था जो आसान.
बड़ी बड़ी संख्याओं का छंद रूप, बताया आपने स्थानीय मान.
पद्य रूप में लिखकर दशगीतिका, बढ़ा दिए भारत की शान.
अद्भुत ज्ञान और खोज से,आपको मिला महत्वपूर्ण स्थान.

आर्यभटीय ग्रंथ रचकर तुमने, ज्योतिष सिद्धांतो का किया प्रतिपादन.
बनाये अनेक यंत्र हजारों साल पहले, जब नहीं था कोई उन्नत साधन.
क्षेत्रमिति हो या त्रिकोणमिति, सब में है आपका अधिकार.
भौतिकी और चिकित्सा के क्षेत्र में भी, आपका ऋणी है संसार.

दिए नई सोच पृथ्वी के घूर्णन की, बता पुरानी सोच को निराधार.
बताया आपने सूर्य को केंद्र में,निकाला ग्रहों की गति और आकार.
दिए दुनिया को नव ज्योति, तोड़कर धार्मिक रूढ़िवादी विचार.
संघर्ष और प्रेरणा के मिशाल, दिए आधुनिक गणित को आधार.

हिन्दू संस्कृति के कट्टर भक्त, बुद्धिमत्ता और उन्नत सोच के प्रमाण.
कड़ी मेहनत और समर्पण से ही, हे शिरोमणि आप बन गए महान.

*****

पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव

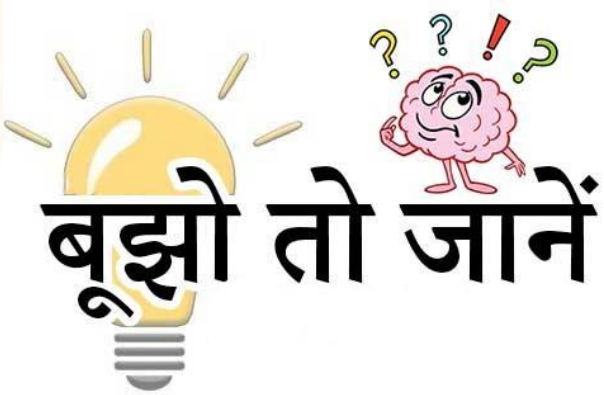

1. इक पंछी जो उड़ ना पाए,
तीन है जिसके पेट.
बैरी देख गर भाग ना पाए,
वह तो जाता लेट.

2. रंग है मेरा हल्का भुरा,
कीटों को मैं खाती.
20 मार्च को याद करें सब,
बोलो क्या कहलाती.

3. शाकाहारी इक पंछी,
चोंच है जिसकी लाल.
हरी मिर्च जिसको अति भाए
तुरत उसे लो पाल.

4. फर फर फर फर उड़ता जाऊं,
लोगों की चिट्ठी पहुंचाऊं.
मै पंछी हूं एक निराला,
चार अक्षर से बनने वाला.

उत्तर- 1. शुतुरमुर्ग, 2. गौरय्या, 3. तोता, 4. कबूतर

*****

रितु बसंत जब आथे

रचनाकार- बलदाऊ राम साहू

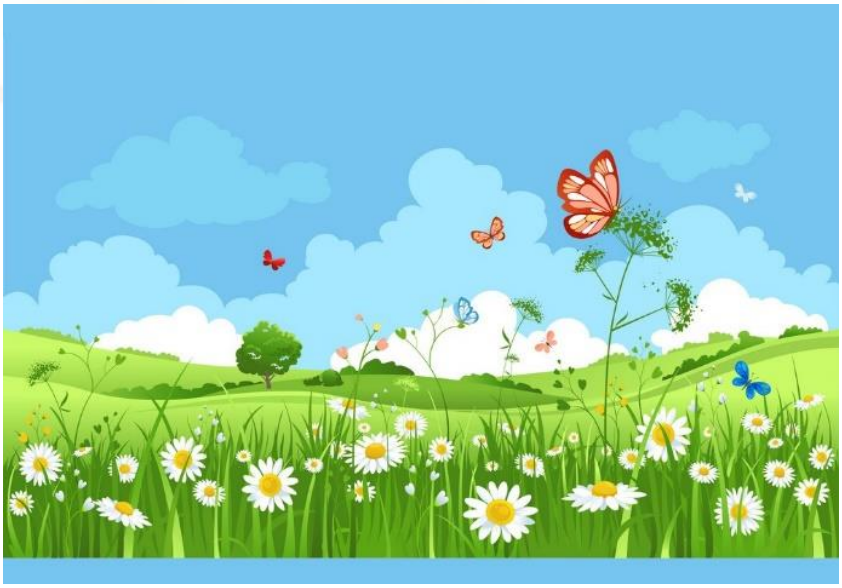

रितु बसंत हर जब-जब आथे
तब-तब सुख के भान कराथे.

आमा मउरे सेमर फुलथे
परसा सुघर रंग देखाथे.

देख के धरती के सुघराई
मन ह घलो हरषित हो जाथे.

मगन हो के चिरगुन मन संग
कोयल राग म राग मिलाथे.

मन उपजथे भाव नवा तब्ब
गीत - ग़ज़ल घलो बन जाथे.

बाजा बाजे गली - खोर मा
फाग के धून गजब सुहाथे.

मया-पिरित अंतस के भइया
रिस्ता हमर नवा हो जाथे.

कउनो करथे हँसी-ठिठोली
तब हमरे मन हर मुसकाथे.

रितु बसंत के करथे स्वागत
कंठ ओकर सुरसती हमाथे.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी –

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

मनोज कुमार पाटनवार द्वारा भेजी गई कहानी

मोर और कौआ

एक दिन कौए ने जंगल में मोर के बहुत सारे पंख बिखरे देखे. वह अत्यंत प्रसन्न होकर कहने लगा- भगवान! बड़ी कृपा की आपने, जो मेरी पुकार सुन ली, मैं अभी इन पंखों को लगाकर मोर बन जाता हूँ. इसके बाद कौए ने मोरपंखों को अपने पंख के ऊपर लगा लिया. अपना नया रूप देखकर बोला- अब तो मैं मोर से भी सुंदर हो गया हूँ. अब उन्हीं के पास चलकर उनके साथ आनंद से नाचता हूँ. वह बड़े अभिमान से मोरों के समूह में पहुँचा जहां बहुत से मोर नाच रहे थे. उनके बीच कौआ भी नाचने लगा. उसे नाचते देख मोरों ने ठहाका लगाया, एक मोर ने कहा- जरा देखो इस दुष्ट कौए को, यह हमारे गिरे हुए पंख लगाकर मोर बनकर नाचने चला है. यह सुनते ही सभी मोर कौए पर टूट पड़े और मार-मारकर उसे अधमरा कर दिया.

कौआ भागा और अन्य कौओं के पास जाकर मोरों की शिकायत करने लगा तो एक बुजुर्ग कौआ बोला- सुनते हो इस अधम की बातें. यह हमारा उपहास करता था और मोर बनने के लिए बावला रहता था. इसे इतना भी ज्ञान नहीं कि जो प्राणी अपनी जाति से संतुष्ट नहीं रहता, वह हर जगह अपमान पाता है. आज यह मोरों से पिटने के बाद हमसे मिलने आया है. मारो इस धोखेबाज को.

इतना सुनते ही सभी कौओं ने मिलकर उसकी अच्छी धुनाई कर दी.

ईश्वर ने हमें जिस रूप में बनाया है, हमें उसी से संतुष्ट रहकर अपने कर्मों पर ध्यान देना चाहिए. कर्म ही महानता के द्वार खोलता है.

युगांतर यादव (कक्षा-5) द्वारा भेजी गई कहानी

कौआ और मोर

एक जंगल में बहुत सारे जीव- जंतु और पशु -पक्षी रहते थे. वहाँ मोर का एक परिवार भी रहता था और एक कौआ भी रहता था. कौआ बहुत सीधा-सादा था. मोर को अपने रंग-बिरंगे पंखों पर बहुत घमंड था. जब भी बारिश का मौसम बनता,तो मोर खुशी से नाचता था. उन्हें देखकर कौआ बहुत खुश होता था, उसका मन ललचाता था. मोर की तरह कौआ भी रंग-बिरंगे पंख वाला बनना चाहता था. एक दिन कौआ कहीं जा रहा था, रास्ते में उसे मोर के बहुत सारे पंख बिखरे हुए मिले. कौए ने उन पंखों को अपने शरीर के ऊपर लगा लिया. तभी वहाँ पर कई मोर भी आ गए. वे सब कौए को देखकर जोर-जोर से हँसने लगे, क्योंकि वह आधा कौआ और आधा मोर लग रहा था. कौआ मोर की तरह बनने की कोशिश कर रहा था, जिसके कारण वह और भी खराब लग रहा था. सभी मोर कहने लगे कि तू कभी मोर नहीं बन सकेगा. ऐसा कहकर फिर सभी मोर हँसने लगे. कौआ बहुत उदास और दुःखी हो गया, उसे अपनी बेवकूफी पर गुस्सा भी आ रहा था.

कौए की समझ में यह बात आ गई थी कि कभी भी दूसरों की नकल नहीं करनी चाहिए. क्योंकि दूसरों की नकल करने से केवल मजाक और अपमान का सामना करना पड़ता है.

मधु शर्मा कटिहा द्वारा भेजी गई कहानी

कोको कौआ

कोको कौआ उस दिन स्कूल से लौटकर आया तो मुँह लटकाए चुपचाप अपने कमरे में बैठा रहा. खाना भी ठीक से नहीं खाया उसने और न ही खेलने के लिए निकला. उसे ऐसे हाल में देख मम्मी ने कारण पूछा तो उसने निराश स्वर में बताया कि कल एक पेड़ के नीचे गिरे मोर के कुछ पंखों को पाकर वह बहुत खुश हुआ था और उसने वे पंख अपने पंखों के ऊपर सजा लिए थे. जब अपने को मोर बताकर कोको मोरों के झुण्ड में गया तो वहाँ सब उस पर खूब हँसे और उसे भगा दिया. यह बात उन मोरों ने अन्य मित्रों को भी बता दी और वे सभी कोको का आज मज़ाक़ उड़ा रहे थे.

"अरे! तुमने मोर के पंख लगाये ही क्यों थे?" मम्मी आश्चर्य से कोको को देख रहीं थीं.

"मैं अपने को सुन्दर बनाने के लिए मोर के पंख लगाना चाहता था." कोको सुबकने लगा.

मम्मी उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरते हुए समझाने लगीं, "शरीर से सुन्दर होना ही सब कुछ नहीं होता, तुम अपने अन्दर के गुणों को निखारकर भी सुन्दर बन सकते हो. मैं जब भी तुम को होमवर्क करवाती हूँ तो देखती हूँ कि तुम बहुत जल्दी सब कुछ समझ लेते हो, जानते हो न कि कौआ एक बुद्धिमान पक्षी माना जाता है?"

"हाँ, मैंने सुनी थी आपसे मटके में कंकड़ डालकर पानी पीने वाले कौए की कहानी." कोको की आँखें चमक उठीं.

"कोको, कुछ दिनों से मैं देख रही हूँ कि तुम पढ़ाई को बहुत कम समय देते हो. टेस्ट में अंक भी कम मिले हैं इस बार तुम्हें. जब से कक्षा में पिकू मोर ने दाखिला लिया है तब से तुम्हारा ध्यान उसकी तरह दिखने की तरकीबें सोचने में लगा रहता है. मैं ठीक कह रही हूँ ना?"

कोको माँ से सहमत होते हुए बोला, "मैं क्या करूँ? क्लास में सब पिकू के पंखों की इतनी तारीफ करते हैं कि मेरा मन वैसा ही सुन्दर पंखों वाला पक्षी बनने को करने लगता है."

"क्या कुछ दिनों के लिए तुम वैसा ही कर सकते हो जैसा मैं कहूँ." माँ ने कहा तो कोको ने तुरंत हामी भर दी.

अगले दिन से वह मां के कहने पर स्कूल से लौटते ही अपना होमवर्क निपटा लेता और कुछ देर आराम करता. शाम को क्लास में पढ़ाये गए पाठ को मां की मदद से दुबारा पढ़कर समझते हुए याद कर लेता. मां जब घर के काम में व्यस्त होती तो कोको को प्रश्नों के उत्तर लिखने व गणित के सवाल हल करने को कहती. कोको वैसा ही करता. इसका परिणाम यह हुआ कि कोको का दिन पढ़ाई में व्यस्त रहते हुए बीतने लगा. उसे पिकू के बारे में सोचने का समय ही नहीं मिल पाता था. जिससे वह उससे अपनी तुलना करना भूल गया. वार्षिक परीक्षा हुई तो कोको को कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ. सभी दोस्त व उनके माता-पिता कोको की खूब प्रशंसा कर रहे थे. कोको को पुरस्कार देते हुए क्लास टीचर ने कहा कि कोको की तरह सभी को मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिए.

कक्षा में अब सभी में होड़ लगी रहती कि कौन कोको जितने नंबर ला सकता है. खेल के मैदान में कौवा, मोर व अन्य पक्षी सब यह चाहते थे कि कोको उनके ही झुण्ड में खेले.

कोको जान गया था कि अपने अन्दर की खूबियों को संवारकर भी सुन्दर बना जा सकता है. ऐसे में सब प्रशंसा तो करते ही हैं साथ ही मेहनत के बल पर कुछ अच्छा पाने का सुख भी मिलता है.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

हमारे जैसा कोई दूसरा नहीं

एक जंगल में एक कौवा रहता था. वह अपने काले रंग से असंतुष्ट था. वह दूसरे पक्षियों की तरह रंग-बिरंगे होने की चाहत रखता था. कौवा अपने रंग-रंगे पक्षी दोस्तों को देख,उदास हो जाता था. एक दिन उसने जमीन पर पड़े मोर के पंख देखे. वह खुश हो गया और सोचने लगा अब मैं इन पंखों को अपनी पूँछ पर लगा लेता हूँ. मैं रंग-बिरंगे पंख लगाकर मोर जैसा बन जाऊँगा. कौवा मोर-पंखों को अपनी पूँछ पर लगाकर घूमने लगा.

वह बहुत खुश था,तभी मोर ने उसे देखकर कहा, तुम कितने बेवकूफ हो हमारे पंख लगा कर मोर नहीं बन जाओगे और न ही तुम्हारा व्यवहार बदलेगा. यह कहकर मोर हँसने लगा लेकिन कौवे ने उसकी परवाह नहीं की और आगे बढ़ गया. कुछ दूर बाद उसे एक तोता मिला. तोता भी कहने लगा, मोर-पंख लगाकर कहाँ जा रहे हो? ईश्वर ने तुम्हें जो बनाया है उसी में खुश रहो. तोते की बातों को अनसुना करते

हुए कौवा आगे बढ़ गया. अब उसे तालाब में तैरता हुआ हंस दिखाई दिया. कौवा कहने लगा -हंस भाई! मैं बहुत खुश हूँ. देखो ये रंग-बिरंगे पंख लगाकर मैं मोर से भी सुंदर दिख रहा हूँ. मोर की नृत्य भी कर सकता हूँ. हंस उसकी मूर्खता पर हंसते हुए कहने लगा. अच्छा-अच्छा, मोर के पंख लगाकर क्या तुम नहा भी लोगे?

कौआ बोला, बिल्कुल, मैं तालाब में डुबकी लगाकर स्नान कर सकता हूँ. कहते हुए कौवा तालाब में डुबकी लगाने लगा. जैसे ही कौवे ने तालाब में डुबकी लगाई वैसे ही मोर के सारे पंख पानी में गिर गए. कौवे को बहुत शर्मिंदगी महसूस होने लगी.

अब कौवा कहने लगा कि मोर के पंख लगाकर मैं अपने आप को विशेष समझ रहा था. मैं अपने कार्य पर बहुत शर्मिन्दा महसूस कर रहा हूँ. पेड़ पर बैठे एक बुजुर्ग कौवे ने कहा- तुमने यह अच्छा नहीं किया. तुम जैसे भी हो अच्छे हो दोस्त, तुम्हारा यह काला चमकता हुआ रंग बहुत अच्छा लगता है. हम दूसरे पक्षियों की नकल करने से मोर, तोता या हंस नहीं बन जाएँगे. देखो इन पक्षियों का जीवन हमारे जीवन से भी अधिक कष्टमय है. तोता पिंजरे में रखा जाता है. हंस को छोटे से टब में रखकर बंधक बनाया जाता है और मोर का जीवन तो और भी कष्टप्रद है उसके पंखों को नोच-नोच कर बाजार में बेचा जाता है. हम लोगों को कोई बंधक नहीं बनाता इसलिए भगवान का शुक्रिया करो कि हम सब आजाद घूम रहे हैं.

कौवा कहने लगा-क्षमा करना, अब मुझे भली-भांति समझ में आ गया है. जो जीव जैसा ही है, वैसा ही स्वीकार कर लेता है तो उसका जीवन आनंदमय हो जाता है इससे बढ़कर कुछ नहीं. हमारे जैसा दुनिया में दूसरा कोई और नहीं है इसी भाव के साथ अपना जीवन व्यतीत करने से हमारा जीवन सुखमय हो जाता है. सभी उसकी बातें सुनकर खुश हो जाते हैं.

आस्था तंबोली (कक्षा-2) द्वारा भेजी गई कहानी

मोर

जंगल में कुछ मोर घूम रहे थे वे एक दूसरे से मौसम के बारे में बातचीत कर रहे थे और कह रहे थे कि आज मौसम बहुत सुहाना है, लगता है आज बारिश होने वाली है यह सोच कर मोरनी पंख फैलाकर नाचने को तैयार थी. तभी मोर बोला- लगता है तेज बारिश होने वाली है, हमें अब घर चलना चाहिए. यह सुनकर मोरनी उदास हो गई और रूठ कर बैठ गई मोर उसे मनाने के लिए स्वयं मोरनी के सामने नाचने लगा. मोर के नृत्य से मोरनी खुश हो गई. दोनों अपने-अपने पंख फैलाकर नाचने लगे और कहने लगे बरखा की बूँदें आई ढेर सारी खुशियाँ लाई.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 फ़ो				2		3 न			4 री
				5 च					
6	7		8			9 प			
			10		11 कु				
								12 बा	13
14 सो					15 कु		16		
			17 र						
	18 अ	19				20 स		21	
22 बू				23			24 लि		25
	26 ल					27			

बाएँ से दाएँ

1. छिलका 3. शादी का एक रश्म 6. नवजवान
9. बरातियों का स्वागत
10. गुनगुना 12. एक सांप के जैसा एक मछली
14. सुनहरा 15. रेतीला
17. झुला 18. आसान
20. इकठ्ठा करना
22. बुलाऊंगा 23. नाती की पत्नी 24. कछुआ
26. मुश्किल से 27. शरीर

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 न	2 छ	प्प		3 ला			4 ख	प	5 रा
	न्द		6 क	न	घ	7 उ	वा		ह
8 अ	ल	क	र			ता		9 तो	प
ल			ध		10 क	न	की		ट
11 क	उ	12 ख	न		न			13 ली	
र		र		14 ल	क	र	ध	क	15 र
हा		16 ख	ल	ब	ड्डा				ज्जु
		स		ल			17 छे		ति
18 स	र	हा		19 ब	न	गं	वा		या
गा			20 जूं	हा			21 री	ता	

ऊपर से नीचे

1. तड़का 3. बचपन 8. नाई को बोलचाल मे क्या कहते थे
2. खिसक 4. उड़ेल, निथार
7. वैसे ही 8. नाई को बोलचाल मे क्या कहते थे
11. धुंआ 12. रात का बंचा हुआ चांवल जिसमे पानी डाला गया हो 13. प्रेमी, प्रिय
14. बेमतलब, मुफ्त
18. आलसी 19 वापस
21. फैला, पसार 15. नया

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था

WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

अपनी किलोल की
सदस्यता जारी रखने हेतु
सबस्क्रिप्शन लेना न भूलें

किलोल की जानकारी

- बच्चों के पठन कौशल एवं पढ़ने कीरुचि विकसित करने हेतु विगत चार वर्षों से बाल-पत्रिका किलोल का ऑनलाइन प्रकाशन किया जा रहा है।
- किलोल को प्रकाशित करने का उद्देश्य शिक्षकों के रचनात्मक कौशल एवं लेखन को प्रदर्शित करना भी है।
- विगत एक वर्ष से किलोल की मुद्रित प्रति भी प्रकाशित की जा रही है जिसका उपयोग आप स्वयं के लिए, अपने बच्चों के लिए एवं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी नियमित रूप से कर सकते हैं।

किलोल पाने हेतु

वार्षिक सदस्यता (शुल्क 720रु.)
आजीवन सदस्यता (शुल्क 10000रु.)

आप अपनी सदस्यता सुनिश्चित करने हेतु सदस्यता शुल्क Wings2Fly Society के बैंक ऑफ़ बड़ोदाशाखा विधानसभा रोड़ मोवा, रायपुर **खाता क्र. 45730100004644 आई.ऍफ़.एस.सी कोड BARB0MOWAXX(0 is zero others are 'O' in IFSC CODE)** में जमा करावें।

राशि जमा करवाने के पश्चात **www.kilol.co.in** में पंजीयन कर अपना विवरण भर दें। पिनकोड सहितअपना पता एवं अन्य विवरण ताराचंद जायसवाल जी को 9926118757 पर व्हाट्सएप पर भी भेज दें।